राम चर्चा

प्रेमचन्द

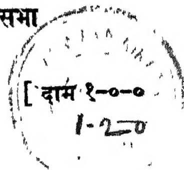




प्रकाशक

दक्षिण भारत हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

मद्रास



[दाम १-०-०

1-20

हिन्दी प्रचार पुस्तक-माला—पुष्प ७९.

पहला संस्करण—१९४४—२.
दूसरा ,, —१९४८—१०.

मुद्रक
हिन्दुस्तानी प्रचार प्रेस
त्यागरायनगर,
मद्रास.

आप से

राम की कहानी और श्री प्रेमचन्द जी की क़लम—इसके बाद और कुछ कहने को नहीं रह जाता। इतनी आसान ज़बान लिखना प्रेमचन्द जी का ही काम था। दक्खिन के लोग इसको पढ़कर प्रेमचन्द जी की 'सलीस उर्दू' का लुत्फ़ उठा सकते हैं।

यह किताब फ़ारसी हरूफ़ में लिखी व छापी गयी थी। हमने उस उर्दू किताब को नागरी हरूफ़ में छाप दिया है। न अपनी तरफ़ से एक लफ़्ज़ जोड़ा है, न असल में से एक नुक़्ता घटाया है। हाँ, किताब बड़ी होती जा रही थी—बेतरह; इसलिए 'उत्तर कांड' को क़तई छोड़ दिया है और बन, किष्किंधा व सुन्दर कांड को मुख़्तसर में दिया है। मुख़्तसर करते वक़्त भी हमने प्रेमचन्द जी की ज़बान में क़लम लगाने की हिमाक़त नहीं की। रामचंद्र की कहानी हरदिल-अज़ीज़ है। उसका मुख़्तसर किसी को नहीं खटकेगा। फिर कुछ ख़ामी या ख़राबी आ गयी हो तो पढ़नेवाले हमें मुआफ़ फ़रमायेंगे।

प्रेमचन्द जी के लायक़ साहब-ज़ादे श्रीपतराय ने हमें इसे इस तरह छापने की इजाज़त दी है, उसके लिए हम उनका शुक्रिया अदा करते हैं।

प्रकाशक

रामायण

सूची

सब खतम हो गई है



द्विकवि
श्रीनिवास-
रामानु-
जाचार्य जी

बालकांड

द्विकवि
श्रीनिवास
रामानुजाचार्य

पैदाइश

गंगा की उन मुआविन नदियों में, जो शुमाल से आकर मिलती हैं, एक सरयू नदी है। इसी नदी पर अयोध्या का मशहूर क़स्बा आबाद है। हिन्दू लोग आज भी वहाँ तीर्थ करने जाते हैं। आजकल तो अयोध्या एक छोटा-सा क़स्बा है। मगर कई हज़ार साल हुए, वह हिन्दुस्तान का सब से बड़ा शहर था। वह सूर्यवंशी खानदान के नामी-गरामी राजाओं का पाये-तख़्त था। हरिश्चन्द्र जैसे सखी, रघु जैसे गरीब-परवर, भगीरथ जैसे जी-हिम्मत राजा इसी सूर्यवंशी खानदान में हुए। राजा दशरथ इसी नामवर खानदान के एक राजा थे। रामचंद्र राजा दशरथ के बेटे थे।

उस ज़माने में अयोध्या नगरी इल्म व हुनर का मरकज़ थी। दूर दूर के व्यापारी रोज़गार करने आते थे और वहाँ की बनी हुई चीजें खरीदकर ले जाते थे। शहर में वसीअ सड़कें थीं। सड़कों पर हमेशा छिड़काव होता था। दो रूया आलीशान महल खड़े थे। हर क़िस्म की सवारियाँ सड़कों पर दौड़ा करती थीं। अदालतें, मदरसे, शफ़ाख़ाने सब मौजूद थे। यहाँ तक कि नाटक-घर भी बने हुए थे, जहाँ शहर के लोग तमाशा देखने जाते थे। इससे मालूम होता है कि उस क़दीम ज़माने में भी इस मुल्क में नाटकों का रिवाज था। शहर के नवाह में बड़े बड़े बाग़ थे। इन बाग़ों में किसी को फल तोड़ने की मुमानियत न थी। शहर की हिफाज़त के लिए मज़बूत चहारदीवारी बनी हुई थी। अंदर एक क़िला भी था। क़िले के चारों तरफ़ गहरी खाई खोदी गयी थी, जिसमें हमेशा पानी लबरेज़ रहता था। क़िले के बुर्जों पर तोपें लगी रहती थीं। तालीम इतनी आम थी कि कोई जाहिल आदमी ढूंढे से भी न मिलता था। लोग बड़े मेहमान-निवाज़, ईमानदार, सुलह-पसंद, इल्म-दोस्त, धर्म के पाबंद और दिल के साफ़ थे। अदालतों में आजकल की तरह छोटे मुक़द्दमे न दायर किये जाते थे। हर घर में गायें पाली जाती थीं। घी दूध की इफ़रात थी। खेती में अनाज इतना पैदा होता था कि कोई भूखा न रहने पाता था। किसान

ख़ुशहाल थे। उनसे लगान बहुत कम लिया जाता था। डाके और चोरी की वारदातें सुनाई भी न देती थीं और ताऊन, हैज़ा वग़ैरह बीमारियों का नाम तक न था। यह सब राजा दशरथ के हुस्ने-इन्तज़ाम की बरकत थी।

एक रोज़ राजा दशरथ शिकार खेलने गये और घोड़ा दौड़ाते हुए एक नदी के किनारे जा पहुँचे। नदी दरख़्तों की आड़ में थी। वहीं जंगल में श्रवण नाम का एक अंधा रहता था। उसकी बीवी भी अंधी थी। उस वक़्त उनका नौजवान बेटा नदी में पानी भरने गया हुआ था। उसके कलसे के पानी में डूबने की आवाज़ सुनकर राजा ने समझा कि कोई जंगली हाथी नहा रहा है। फ़ौरन आवाज़ी निशानी बांधकर तीर चला दिया। तीर नौजवान के सीने में जा लगा। तीर का लगना था कि वह ज़ोर से चिल्लाकर गिर पड़ा। राजा घबराकर वहाँ गये तो देखा कि एक नौजवान पड़ा तड़प रहा है। अपनी ग़लती मालूम हुई। बेहद अफ़सोस हुआ। नौजवान ने उनको नादिम और रंजीदा देखकर समझाया—अब रंज करने से क्या फ़ायदा? मेरी मौत शायद इसी तरह लिखी थी। मेरे माँ-बाप दोनों अंधे हैं। उनकी कुटी वह सामने नज़र आ रही है। मेरी लाश उनके पास पहुँचा देना।—यह कहकर वह मर गया।

राजा ने नौजवान की लाश को कंधे पर रखा और अंधे

के पास जाकर यह माजराये-ग़म सुनाया। बेचारे दोनों बुड्ढे, उसपर दोनों आँखों के अंधे। यही इकलौता बेटा उनकी ज़िंदगी का सहारा था। इसके मरने की कैफ़ियत सुनकर दोनों फूट-फूटकर रोने लगे। जब आँसू ज़रा थमे, तो उन्हें राजा पर गुस्सा आया। उनको खूब जी भरकर कोसा और यह बद-दुआ देकर कि, जिस तरह बेटे के ग़म में हमारी जान निकल रही है, उसी तरह तुम भी बेटे ही के ग़म में मरोगे, दोनों मर गये। राजा दशरथ भी रो-धोकर यहाँ से रुखसत हुए।

राजा दशरथ के अब तक कोई औलाद न थी। औलाद ही के लिये उन्होंने तीन शादियाँ की थीं। बड़ी रानी का नाम कौशल्या था। मँझली रानी का सुमित्रा और छोटी रानी का कैकेयी। तीनों रानियाँ भी औलाद के लिए तरसती रहती थीं। अंधे की बद-दुआ राजा के हक़ में दुआए-ख़ैर हो गयी। चाहे बेटे के ग़म में मरना ही पड़े, बेटे का मुँह तो देखेंगे। ताजो-तख़्त का वारिस तो पैदा होगा। इस ख़्याल से राजा को बड़ी तस्कीन हुई। इसके कुछ ही दिन बाद अपने गुरु वसिष्ठ के मशविरे से राजा ने एक यज्ञ किया। इसमें बहुत से ऋषि-मुनि जमा हुए और सब ने राजा को दुआ दी। यज्ञ के पूरे होने ही तीनों ही रानियाँ हामिला हुई और वक़्त मुअय्यन के बाद तीनों रानियों के चार राजकुमार पैदा हुए। कौशल्या से रामचंद्र हुए, सुमित्रा से लक्ष्मण और शत्रुघ्न और कैकेयी से

भरत। सारे राज़ में शादियाने बजने लगे। रिआया ने भी ख़ूब जशन मनाये। राजा ने इतना सोना-चांदी ख़ैरात किया कि सारे राज़ में कोई मुफ़लिस न रह गया। उनका दिली मुद्दआ बर आया। कहाँ एक बेटे का मुँह देखने को तरसते थे, कहाँ चार-चार बेटे पैदा हो गये। घर गुलज़ार हो गया। बे-नूर आँखें रोशन हो गयीं।

चारों लड़कों की परवरिश होने लगी। जब वह ज़रा सयाने हुए तो गुरु वसिष्ठ ने उन्हें तालीम देना शुरू किया। चारों लड़के बहुत ही ज़हीन थे। थोड़े ही दिनों में वेद, शास्त्र सब खतम कर लिये और इल्मे जंग में भी ख़ूब होशियार हो गये। नेज़ा-बाज़ी, तीर-अंदाज़ी, कुश्ती किसी फ़न में इनका सानी न था। चारों, बुज़ुर्गों का अदब करते थे। छोटों को भी वह कभी सख्त-सुस्त न कहते। उनमें आपस में बड़ी गहरी मुहब्बत थी। एक दूसरे के लिए जान देते थे। चारों ही ख़ुबरू, तवाना और ख़लीक़ थे। उन्हें देखकर हर कुस व नाकस के मुँह से दुआ निकलती थी। सब कहते थे, ये लड़के ख़ानदान का नाम रोशन करेंगे। यों तो चारों में एकसाँ मुहब्बत थी, मगर लक्ष्मण को रामचंद्र से और शत्रुघ्न को भरत से ख़ास उन्स था। राजा दशरथ मारे ख़ुशी के फूले न समाते थे।

ताड़का और मारीच का मारा जाना

एक दिन राजा दशरथ दरबार में बैठे हुए वज़ीरों से कुछ बातचीत कर रहे थे कि ऋषि विश्वामित्र तशरीफ़ लाये। विश्वामित्र उस ज़माने के बड़े तपस्वी थे। वह क्षत्रिय होकर भी महज़ अपनी इबादत के ज़ोर से ब्रह्मऋषि के दर्जे पर पहुँच गये थे। सभी ऋषि उनके सामने ताज़ीम से सर झुकाते थे। मगर ज्ञानी होने पर भी किसी क़दर गुस्सेवर थे। किसी ने उनकी मरज़ी के खिलाफ़ काम किया और उन्होंने बद-दुआ दी। इससे सभी राजे-महाराजे उनसे डरते थे। क्योंकि उनकी बद-दुआ को कोई रद्द न कर सकता था। लड़ाई के हुनर में भी वह यगाना-रोजगार थे। राजा दशरथ ने तख़्त से उतर कर उनकी ताज़ीम की और उन्हें अपने सिंहासन पर बिठाकर बोले—आज ग़रीबख़ाने को अपने क़दमों से पाक करके आपने मुझपर बड़ा एहसान किया। मेरे लायक़ अगर कोई खिदमत हो तो फ़रमाइये। ब-सरोचश्म बजा लाऊँ।

विश्वामित्र ने दुआ देकर कहा—महाराज! हम तपस्वियों को राज-दरबार की याद उसी वक़्त आती है, जब हमें कोई तकलीफ़ होती है या जब हमारे ऊपर कोई ज़ुल्म करता है। मैं आजकल एक यज्ञ कर रहा हूँ। मगर

राक्षस लोग उसे नापाक करने की कोशिश करते हैं। वे यज्ञ की वेदी पर खून और हड्डियाँ फेंकते हैं। मारीच और सुबाहु दो बड़े ही सरकश राक्षस हैं। यह सारा फ़साद उन्हीं दोनों का है। मुझमें अपनी तपस्या की इतनी ताक़त है कि चाहूँ तो एक बद-दुआ देकर उनकी सारी फ़ौज को जलाकर खाक कर दूँ। पर यज्ञ करते वक़्त गुस्से को रोकना पड़ता है। इसलिए मैं आपके पास फरियाद लेकर आया हूँ। आप राजकुमार रामचंद्र और लक्ष्मण को मेरे साथ भेज दीजिये ताकि वे मेरे यज्ञ की हिफाजत करें और उन राक्षसों को हलाक कर दें। दस दिन में हमारा यज्ञ पूरा हो जायगा। राम के सिवा और किसी से यह काम न होगा।

राजा दशरथ बड़ी मुश्किल में पड़ गये। राम की जुदाई उन्हें एक लमहे के लिए भी गवारा न थी। यह अंदेशा भी हुआ कि लड़के अभी नातजुर्बेकार हैं। खौफ़नाक राक्षसों से भला क्या मुकाबिला कर सकेंगे। डरते हुए बोले—'ऐ पाक ऋषि! आपका हुक्म सर और आँखों पर। मगर उन कम-उम्र लड़कों को राक्षसों के मुकाबिले में भेजते हुए मुझे खौफ़ होता है। इन्हें अभी तक मैदाने-जंग का तजुर्बा नहीं। मैं खुद अपनी सारी फ़ौज लेकर आपके यज्ञ की हिफ़ाज़त करने चलूँगा। लड़कों को साथ भेजने के लिए मुझे मजबूर न कीजिये।

विश्वामित्र हँसकर बोले—महाराज ! आप इन लड़कों को अभी नहीं जानते। इनमें शेरों की सी हिम्मत और ताक़त है। मुझे पूरा यक़ीन है कि ये राक्षसों को मार डालेंगे। उनकी तरफ़ से आप बेख़ौफ रहिये। इनका बाल भी बांका नहीं होगा।

राजा दशरथ फिर कुछ उज्र करना चाहते थे। मगर गुरू वसिष्ठ के समझाने पर वे राज़ी हो गये और दोनों राज-कुमारों को बुलाकर ऋषि विश्वामित्र के साथ जाने का हुक्म दिया। रामचंद्र और लक्ष्मण यह इजाजत पाकर दिल में बहुत खुश हुए। अपनी जवांमर्दी के इज़हार का ऐसा अच्छा मौक़ा इन्हें पहले न मिला था। दोनों ने जंगी-लिबास पहना, हथियार सजाये, और अपनी माताओं से आशीर्वाद लेने के बाद राजा दशरथ के क़दमों को बोसा देकर खुशी खुशी विश्वामित्र के साथ चले। रास्ते में विश्वामित्र ने दोनों भाइयों को एक ऐसा मंत्र बताया जिसको पढ़ने से थकावट पास नहीं आती थी। नये-नये, अजीब व ग़रीब हथियारों का इस्तेमाल करना भी सिखाया जिनके मुक़ाबिले में कोई ठहर नहीं सकता था।

कई दिन के बाद तीनों आदमी गंगा को पार करके एक घने जंगल में जा पहुँचे। विश्वामित्र ने कहा—बेटा, इस जंगल में ताड़का नाम की एक देवनी रहती है। वह इस रास्ते से

गुज़रनेवाले आदमियों को पकड़कर खा डालती है। पहले यहाँ एक अच्छा कस्बा आबाद था। पर इसने सारे आदमियों को खा डाला। अब वही आबाद कस्बा घना जंगल है। कोई आदमी इधर भूलकर भी नहीं आता। हम लोगों की आहट पाकर वह देवनी आती होगी। तुम फ़ौरन उसे तीर से हलाक कर देना। मारना

विश्वामित्र अभी यह वाक़या बयान कर ही रहे थे कि हवा में ज़ोर की सनसनाहट हुई और ताड़का मुँह खोले दौड़ती हुई आती दिखायी दी। उसकी सूरत इतनी डरावनी और क़द इतना बड़ा था कि कोई कम-हिम्मत आदमी होता तो मारे ख़ौफ़ के गिर पड़ता। उसने इन तीनों आदमियों के सामने आकर गरजना और पत्थर फेंकना शुरू किया। विश्वामित्र ने रामचंद्र को तीर चलाने का इशारा किया। रामचंद्र एक औरत पर हथियार चलाना उसूल के खिलाफ समझते थे। ताड़का देवनी थी तो क्या, थी तो औरत। मगर ऋषि का इशारा पाकर उन्हें क्या उज्र हो सकता था! ऐसा तीर चलाया कि वह ताड़का की छाती में चुभ गया। ताड़का जोर से चीख़कर गिर पड़ी और एक लमहे में तड़प तड़प कर मर गयी। पल

तीनों आदमी फिर आगे चले और कई दिनों के बाद विश्वामित्र के आश्रम में पहुँच गये। था तो यह भी जंगल, पर इसमें ज़्यादातर ऋषि लोग रहते थे। शेर, हिरन, नीलगाय

बेख़ौफ़ घूमा करते थे। इस तपो-भूमि के असर से शिकारी दरिंदे भी शिकार की तरफ़ राग़िब न होते थे।

दूसरे दिन से विश्वामित्र ने यज्ञ करना शुरू कर दिया। राम और लक्ष्मण कमर में तलवार लगाये, तीर और कमान हाथ में लिये, जंगल के चारों तरफ़ गश्त लगाने लगे। न खाने-पीने की फ़िक्र थी, न सोने-लेटने की। रात-दिन बेख़्वाब व ख़ूर पहरा देते थे। इस तरह पाँच दिन खैरियत से गुज़र गये। मगर छठे दिन क्या देखते हैं कि मारीच और सुबाहु राक्षसों की फ़ौज ले यज्ञ को नापाक करने चले आ रहे हैं। दोनों भाई फ़ौरन संभल गये। ज्यों ही मारीच सामने आया रामचंद्र ने ऐसा तीर मारा कि वह बड़ी दूर जाकर गिर पड़ा। सुबाहु बाक़ी था। उसे भी एक अग्नि-बाण ने ठंडा कर दिया। फिर तो राक्षसी फ़ौज के क़दम उखड़ गये। दोनों भाइयों ने दूर तक उनका पीछा किया और कितनों ही को हलाक कर दिया। इस तरह यज्ञ ब-हुस्न व ख़ूबी पूरा हो गया। किसी क़िस्म की रुकावट न हुई। विश्वामित्र ने दोनों भाइयों की ख़ूब तारीफ़ की।

३

शादी

राम और लक्ष्मण अभी विश्वामित्र के आश्रम में ही थे कि मिथिला के राजा जनक ने विश्वामित्र को अपनी लड़की सीता के स्वयंवर में शरीक होने के लिए न्योता भेजा। उस ज़माने में अक्सर शादियाँ स्वयंवर के तरीक़े से होती थीं। लड़की का बाप एक जलसा करता था, जिसमें दूर दूर से आकर लोग शरीक होते थे। जलसे में ताक़त या लड़ाई के हुनर का इम्तिहान होता था। जो नौजवान इस इम्तिहान में कामयाब होता था, उसी के गले में कन्या जयमाल डाल देती थी। उसीसे उसकी शादी हो जाती थी। विश्वामित्र की दिली-ख़्वाहिश थी कि सीता की शादी राम से हो जाय। वे यह भी जानते थे कि राम इम्तिहान में ज़रूर कामयाब होंगे। इसलिये जब वे मिथिला जाने लगे तो राम और लक्ष्मण को भी साथ लेते गये। राजा दशरथ से इजाज़त लेने के लिए अयोध्या जाने और फिर वहाँ से मिथिला आने के लिए काफ़ी वक़्त न था। मिथिला वहाँ से करीब ही था। इसलिये विश्वामित्र ने सीधे वहीं से जाने का फ़ैसला किया।

आजकल जिस सूबे को हम बिहार कहते हैं, वही उस ज़माने में मिथिला कहलाता था। मिथिला के राजा जनक

बड़े विद्वान, ज्ञानी आदमी थे। बड़े बड़े ऋषि-मुनि उनसे ज्ञान सीखने आते थे। कई साल पहले मिथिला में बड़ा भारी क़हत पड़ा था। उस वक्त ऋषियों ने मिलकर फ़ैसला किया कि यह क़हत यज्ञ ही से दूर हो सकता है। इस यज्ञ को पूरा करने की एक शर्त यह भी थी कि राजा जनक खुद हल चलायें। राजा जनक को अपनी रिआया जान से भी ज़्यादा अज़ीज़ थी। इसके सर से उस मुसीबत को दूर करने के लिए उन्होंने इस यज्ञ को शुरू कर दिया। जब वे हल-बैल लेकर खेत में पहुँचे और हल चलाने लगे तो क्या देखते हैं कि फाल की नोक से जो जमीन खुद गयी है, उसमें एक चाँद सी लड़की पड़ी हुई है। राजा के कोई औलाद न थी। फौरन इस लड़की को गोद में उठा लिया और घर लाये। उसका नाम सीता रखा। क्योंकि वह फ़ाल की नोक से निकली थी। फाल को संस्कृत में सित् कहते हैं। इस खुदा-दाद निआमत को राजा जनक ने बड़े लाड़-व-प्यार से पाला, और अच्छे अच्छे विद्वानों से उसे तालीम दिलवायी। इसी सीता की शादी पर यह स्वयंवर रचा गया था।

राम, लक्ष्मण और विश्वामित्र, सोन, गंगा वग़ैरह नदियों को पार करते हुए चौथे दिन मिथिला पहुँचे। सारे शहर के लोग इन राजकुमारों का हुस्न और क़द्-व-क़ामत देखकर उनपर फ़रेफ़्ता हो गये। सभी के मुँह से यही सदा निकलती

थी कि सीता के लायक कोई है तो यही राजकुमार है। जैसी हसीन वह है वैसे ही खूबसूरत रामचंद्र हैं। मगर देखना चाहिये कि उनसे शिव का धनुष उठता है या नहीं?

राजा जनक को विश्वामित्र के आने की खबर हुई तो उन्होंने इनकी बड़ी खातिर व तवाज़ा की। जब उन्हें मालूम हुआ कि ये दोनों नौजवान राजा दशरथ के बेटे हैं, तब उनके दिल में भी यही ख़्वाहिश पैदा हुई कि काश, सीता का ब्याह रामचंद्र से हो जाता। मगर स्वयंवर की शर्त से मजबूर थे।

विश्वामित्र ने राजा जनक से पूछा,—महाराज! आपने स्वयंवर के लिये कौन-सा इम्तिहान तजवीज़ किया है?

जनक ने जवाब दिया,—भगवान्! क्या कहूँ, कुछ कहा नहीं जाता। सैकड़ों बरस गुजर गये। एक बार शिवजी ने मेरे एक बुज़ुर्ग को अपना धनुष दिया था। वह धनुष तब से मेरे घर में रखा हुआ था। एक दिन मैंने सीता से अपनी पूजा की कोठरी को लीप डालने के लिये कहा। उसी कोठरी में वह पुराना धनुष रखा हुआ था। सैकड़ों बरस से कोई उसे उठा न सका था। सीता ने जाकर देखा तो उसके आसपास बहुत कूड़ा जमा हो गया था। उसने धनुष को उठाकर एक तरफ रख दिया और उसके नीचे की जमीन लीपकर फिर उस धनुष को वहीं रख दिया। मैं पूजा करने गया तो धनुष को हटा हुआ देखकर मुझे बड़ा तअज्जुब हुआ। जब मालूम

हुआ कि सीता ने उसे हटाकर ज़मीन साफ़ की है, तब मैंने शर्त की कि ऐसी बहादुर कन्या की शादी उसी वर से करूँगा जो इस धनुष को चढ़ाकर तोड़ देगा। अब देखूँ, लड़की की तक़दीर में क्या है ?

दूसरे दिन स्वयंवर की तैयारियाँ शुरू हुईं। मैदान में एक वसीअ शामियाना ताना गया। सैकड़ों सूरमा जो अपनी ताकत के ज़ोम में दूर दूर से आये हुए थे, आ आकर बैठे। शहर के लाखों मर्द-औरत जमा हुए। शिवजी के धनुष को बहुत से आदमी उठाकर सभा में लाये। जब सब लोग आ गये तो राजा जनक ने खड़े होकर कहा—ऐ भारतवर्ष के वीरो ! यह शिवजी का धनुष आप लोगों के सामने रखा हुआ है। जो इसे तोड़ देगा उसी के गले में सीता जयमाल डालेगी।

यह सुनते ही सूरमाओं और दिलावरों ने धनुष के पास जा-जाकर ज़ोर लगाना शुरू किया। सभी राजकुमार सीता से शादी करने का ख्वाब देख रहे थे। कमर कस-कसकर ग़रूर से ऐंठते-अकड़ते धनुष के पास जाते और जब तिल-भर भी न हटता तो खिरफ़्फ़त से गरदन झुकाये, अपना-सा मुँह लिये लौट आते थे। सारी सभा में एक भी ऐसा योद्धा न निकला जो धनुष को उठा सकता, तोड़ने का तो ज़िक्र ही क्या ?

राजा जनक ने यह कैफ़ियत देखी तो उन्हें बड़ा अंदेशा

हुआ। सभा में खड़े होकर मायूसाना अंदाज़ से बोले—शायद यह वीर-भूमि अब वीरों से खाली हो गयी है। जभी तो इतने आदमियों में एक भी ऐसा न निकला जो इस धनुष को तोड़ सकता। अगर मैं ऐसा जानता तो स्वयंवर के लिए यह शर्त ही न रखता। ऐसा मालूम होता है कि सीता बिन-ब्याही रहेगी। यही इसकी तक़दीर में है तो मैं क्या कर सकता हूँ। आप लोग अब शौक़ से तशरीफ ले जायें। इस हौसले और ताक़त पर आप लोगों को यहाँ आने की ज़रूरत ही क्या थी?

लक्ष्मण बड़े जोशिले नौजवान थे। जनक की ये बातें सुनकर उनसे ज़ब्त न हो सका। जोश से बोले—महाराज! ऐसा अपनी ज़बान-ए-मुबारक से न फरमाइये। जब तक राजा रघु का वंश कायम है, यह देश वीरों से खाली नहीं हो सकता। मैं डींग नहीं मारता। सच कहता हूँ कि अगर अपने भाई साहब का हुक्म पाऊँ तो एकदम मैं इस धनुष के पुरज़े पुरज़े कर दूँ। मेरे भाई साहब चाहें तो इसे एक हाथ से तोड़ सकते हैं। इसकी हक़ीक़त ही क्या है?

लक्ष्मण की ये पुर-जोश बातें सुनकर सारे सूरमा दंग रह गये। रामचंद्र छोटे भाई के मिजाज से वाक़िफ थे। इनका हाथ पकड़कर खींच लिया और बोले,—भाई, यह मौक़ा इस तरह बातें करने का नहीं है। जब तक तुम्हारे बड़े मौजूद हैं, तुम्हें ज़बान खोलना मुनासिब नहीं।

लक्ष्मण बैठ गये तो विश्वामित्र ने रामचंद्र से कहा—बेटा अब तुम जाकर इस धनुष को तोड़ो ताकि राजा जनक को तस्कीन हो।

रामचंद्र सीता को पहले ही दिन एक बाग़ में देख चुके थे। दोनों भाई बाग में सैर करने गये थे और सीता देवी की पूजा करने आयी थीं। वहीं दोनों की आँखें मिली थीं। उसी वक़्त से रामचंद्र को सीता से मुहब्बत हो गयी थी। वे इसी मौके के मुंतज़िर थे। विश्वामित्र की इजाज़त पाते ही उन्हें प्रणाम किया और धनुष की तरफ चले। सूरमाओं ने अपनी खिफ़्फ़त मिटाने के लिए उनपर आवाजें कसना शुरू किये। एक ने कहा—ज़रा संभले हुए जाइयेगा। ऐसा न हो, अपने ही ज़ोर में गिर पड़िये। दूसरा बोला—इस पुराने धनुष पर रहम कीजिये। कहीं पुरजे पुरज़े न कर दीजियेगा। तीसरा बोला—ज़रा आहिस्ता-आहिस्ता कदम रखिये। ज़मीन हिल रही है। मगर रामचंद्र ने इन तंज़ों की तरफ मुतलक तवज्जह न की। जाकर धनुष को इस तरह उठा लिया गोया कोई फूल हो, और इतनी जोर से चढ़ाया कि बीच से इसके दो टुकड़े हो गये। इसके टूटने से ऐसी आवाज हुई कि लोग चौंक पड़े। धनुष ज्यों ही टूटकर गिरा, वे जोशे-मुसर्रत से उछलकर दौड़े।

राजा जनक सभा के बाहर खड़े मुतफ़िक्र निगाहों से यह नज्जारा देख रहे थे। रामचंद्र को गले लगा लिया और

सीता जी ने आकर उनके गले में जयमाल डाल दिया। शहरवालों ने खुश होकर जय-जयकार करना शुरू किया, शादियाने बजने लगे, बंदूकें छूटने लगीं और सूरमा लोग एक-एक करके चुपके-चुपके सरकने लगे। शहर के छोटे-बड़े, अदने-व-आले सब खुशी से फूले न समाते थे। सभों ने मुँह-मांगी मुराद पायी। सलाह हुई कि राजा दशरथ को इस खुशखबरी की इत्तला देनी चाहिए। कई सांड़नी-सवार फ़ौरन कोशल की तरफ़ रवाना किये गये। विश्वामित्र राजकुमारों के साथ राजभवन में जाना ही चाहते थे कि अहाते के बाहर शोर-व गुल सुनाई देने लगा। ऐसा मालूम होता था गोया बादल गरज रहा है। लोग घबरा-घबराकर इधर-उधर देखने लगे कि यह क्या आफत आनेवाली है। एक लमहे के बाद राज खुला कि परशुराम ऋषि गुस्से से गरजते चले आ रहे हैं। देवों का सा क़द, अंगारे सी लाल-लाल आँखें, गुस्से से चेहरा सुर्ख, हाथ में तीर-कमान, कंधे पर फरसा, यह आपकी कथा थी। मालूम होता था सब को कच्चा ही खा जायेंगे। आते ही आते गरजकर बोले—'किसने मेरे गुरु शिवजी का धनुष तोड़ा है? निकल आये मेरे सामने! जरा मैं भी देखूँ, वह कितना बहादुर है?'

रामचंद्र ने बहुत मुलायमत से कहा, 'महाराज! आपके किसी भक्त ही ने तोड़ा होगा, और क्या?'

परशुराम ने फरसे को घुमाकर कहा, 'हरगिज़ नहीं। यह मेरे भगतों का काम नहीं। यह किसी दुश्मन का काम है। ज़रूर मेरे किसी बैरी ने यह फ़ेल किया है। मैं अभी उसका सर तन से जुदा कर दूँगा। किसी तरह मुआफ़ नहीं कर सकता। मेरे गुरु का धनुष और उसे कोई क्षत्रिय तोड़ डाले! मैं क्षत्रियों का दुश्मन हूँ,—जानी दुश्मन! मैंने एक-दो बार नहीं-इक्कीस बार क्षत्रियों के ख़ून की नदी बहायी है। अपने बाप के ख़ून का बदला लेने के लिए मैंने जहाँ क्षत्रियों को पाया है चुन-चुनकर मारा है। अब फिर मेरे हाथों क्षत्रियों पर वही आफ़त आनेवाली है। जिसने यह धनुष तोड़ा हो, मेरे सामने निकल आये।'

दिलेर और मनचले लक्ष्मण यह ललकार सुनकर भला कब ज़ब्त कर सकते थे! सामने आकर बोले,—'आप एक सड़े से धनुष के टूटने पर इस क़दर जामे से क्यों बाहर हो रहे हैं! लड़कपन में ऐसे कितने ही धनुष खेल-खेलकर तोड़ डाले। तब तो आपको ज़रा भी ग़ुस्सा न आया। आज इस पुराने बोसीदा धनुष के टूट जाने से आप क्यों इतना बेरहम हो रहे हैं! क्या आप समझते हैं कि इन गीदड़-भभकियों से कोई डर जायेगा?'

जैसे घी पड़ जाने से आग और भी तेज़ हो जाती है, उसी तरह लक्ष्मण के ये अल्फ़ाज़ सुनकर परशराम और भी

ग़ज़बनाक हो गये। फरसे को हाथ में लेकर बोले— 'तू कौन है, जो मेरे साथ इस गुस्ताखी से पेश आता है? तुझे क्या अपनी जान की ज़रा भी मुहब्बत नहीं जो इस तरह मेरे सामने ज़वाँदराज़ी करता है? क्या यह धनुष भी वैसा ही था जैसे तूने लड़कपन में तोड़े थे? यह शिवजी का धनुष था।'

लक्ष्मण बोले—'किसी का धनुष हो, मगर था बिल्कुल सड़ा हुआ; छूते ही टूट गया। ज़ोर लगाने की ज़रूरत ही न पड़ी। इस ज़रा-सी बात के लिए आप नाहक इतना बिगड़ रहे हैं।'

परशुराम और भी झल्लाकर बोले—'अरे मूर्ख, क्या तू मुझे नहीं पहचानता? मैं तुझे लड़का समझकर अभी तक तरह देता जाता हूँ और तू अपनी गुस्ताखी से बाज़ नहीं आता। मेरा ग़ुस्सा बुरा है। ऐसा न हो मैं एक ही वार में तेरा काम तमाम कर दूँ।'

लक्ष्मण—'मेरा काम तो तमाम हो चुका। हाँ, मुझे खौफ़ है कि कहीं आपका ग़ुस्सा आपको नुक़सान न पहुँचाये। आप जैसे ऋषियों को कभी ग़ुस्सा न करना चाहिए।'

परशुराम ने फरसा सँभालते हुए दाँत पीसकर कहा, 'क्या कहूँ, तेरी उम्र तुझे बचा रही है। वरना अब तक तेरा सिर तन से जुदा कर देता।'

लक्ष्मण—'जी, कहीं इस भरोसे में न रहियेगा। आप

फूँककर पहाड़ को नहीं उड़ा सकते। आप ब्राह्मण हैं; इसलिए आपके ऊपर मुझे रहम आता है। शायद अभी तक आपका किसी क्षत्रिय से पाला नहीं पड़ा, जभी आप इस कदर बिफर रहे हैं।'

रामचंद्र ने देखा कि बात बढ़ती जा रही है तो लक्ष्मण को हाथ पकड़कर बिठा दिया और परशुराम से हाथ जोड़कर बोले—'महाराज! लक्ष्मण की बातों का आप बुरा न मानें। यह ऐसा ही गुस्ताख है, यह अभी तक आपको नहीं जानता। वरना यों आपके मुँह न लगता। इसे मुआफ कीजिये। छोटों का कुसूर बड़े ही मुआफ किया करते हैं। आपका कुसूरवार मैं हूँ। मुझे जो सज़ा चाहें, दें। आपके सामने सर झुका हुआ है।'

रामचंद्र की यह अदब आमेज गुफ़्तगू सुनकर परशुराम कुछ नरम पड़े कि यकायक लक्ष्मण को हँसते देखकर फिर उनके जिस्म में आग लग गयी। बोले—'राम! तुम्हारा यह भाई बेहद शरीर है। सलीका और तमीज और अदब तो इसे छू तक नहीं गया। जो कुछ मुँह में आता है बक डालता है। रंग इसका गोरा है, पर दिल इसका स्याह है। ऐसा बे-अदब लड़का मैंने नहीं देखा।'

अभी तक तो लक्ष्मण परशुराम को सिर्फ़ छेड़ रहे थे। मगर ये बातें सुनकर उन्हें गुस्सा आ गया। बोले—'सुनिये

महाराज! छोटों का काम बड़ों का अदब करना है। मगर इसकी भी हद होती है। आप अब इस हद से बढ़े जा रहे हैं। आखिर आप क्यों इस क़दर खफा हो रहे हैं? आपके बिगड़ने से तो धनुष जुड़ न जायगा। हाँ, जग-हँसाई अलबत्ता होगी। अगर यह धनुष आपको ऐसा ही प्यारा है तो किसी कारीगरी से इसे जुड़वा दिया जायगा। इसके सिवा हम और क्या कर सकते हैं? आपका गुस्सा बिलकुल फ़िज़ूल है।'

मारे गुस्से के परशुराम की आँखें बीर-बहूटी की तरह सुर्ख हो गयीं। वे थर-थर काँपने लगे। उनके नथुने फड़कने लगे। रामचंद्र ने उनकी यह हालत देखकर लक्ष्मण को वहाँ से चले जाने का इशारा किया और निहायत आजिजी से बोले, 'महाराज! बुज़ुर्गों को छोटे, कम-फ़हम आदमियों की बातों, पर ध्यान न देना चाहिए। इसके बकने से क्या होता है। हम सब आपके गुलाम हैं। धनुष मैंने तोड़ा है। इसका खतावार मैं हूँ। इसकी जो सजा आप मुनासिब समझें, मुझे दें। आप इसका जो तावान माँगें, मैं देने को तैयार हूँ।'

परशुराम ने नरम होकर कहा—'तावान मैं तुमसे क्या लूँगा? मुझे यही खौफ है कि इस धनुष के टूट जाने से क्षत्रियों को फिर ग़रूर होगा और मुझे फिर उनका ग़रूर तोड़ना पड़ेगा। यह शिव का धनुष नहीं टूटा है, ब्राह्मणों के तेज और ताक़त को सदमा पहुँचा है।'

रामचंद्र ने हँसकर कहा—'ऋषिराज! क्षत्रिय ऐसे ओछे नहीं हैं कि इस ज़रा-से धनुष के टूट जाने से उन्हें ग़रूर हो जाय। अगर आप मेरी बहादुरी का जौहर देखना चाहते हैं तो इससे भी बड़ा इम्तहान लेकर देखिये।'

परशुराम—'तैयार है?'

राम—'जी हाँ, तैयार हूँ।'

परशुराम ने अपना तीर और कमान रामचंद्र के सामने फेंककर कहा—'अच्छा, इस धनुष पर चिल्ला चढ़ा दे। देखूँ तो कितना ताक़तवर है!'

रामचंद्र ने धनुष उठा लिया और बड़ी आसानी से चिल्ला चढ़ाकर बोले—'कहिये अब क्या करूँ, तोड़ दूँ इस धनुष को?'

परशुराम का सारा ग़ुस्सा ठंडा हो गया। उन्होंने बढ़कर रामचंद्र को सीने से लगा लिया और उन्हें दुआएँ देते हुए अपना धनुष-बाण लेकर रुख़सत हो गये। राजा जनक का ख़ून ख़ुश्क हो रहा था कि न जाने क्या आफ़त आनेवाली है। परशुराम के चले जाने से उनकी जान में जान आयी। फिर शादियाने बजने लगे।

राजा दशरथ रामचंद्र और लक्ष्मण की कुछ ख़बर न पाने से बहुत मुतफ़िक्र हो रहे थे। यह ख़ुशख़बरी पायी तो बाग़-बाग़ हो गये। अयोध्या में भी जशन होने लगा। दूसरे दिन धूम-धाम से बारात सजाकर वे मिथिला चले।

राजा जनक ने बारात की ख़ूब ख़ातिर व मदारात की, और शास्त्र-विधि से सीताजी का ब्याह रामचंद्र से कर दिया। उनकी एक दूसरी लड़की थी, जिसका नाम उर्मिला था। उसकी शादी लक्ष्मण से हो गयी। राजा जनक के भाई के भी दो लड़कियाँ थीं। वे दोनों भरत और शत्रुघ्न से ब्याही गयीं। कई दिन के बाद बारात रुख़सत हुई। राजा जनक ने बेशुमार सोने-चाँदी के बरतन, हीरे-जवाहिर मुरस्सा झलों से सजे हुए हाथी, नागौरी बैलों से जुते हुए रथ, अरबी नस्ल के घोड़े दहेज़ में दिये।



అయోధ్యాకాండ

अयोध्या कांड

వనవాసము

बन-बास

राजा दशरथ कई साल तक बड़ी तनदेही से राज करते रहे। लेकिन बुढ़ापे के बाइस उनमें अब वह पहला सा जोश न था। इसलिए उन्होंने रामचंद्रजी से रियासत के कामों में मदद लेना शुरू किया। इसमें एक मस्लहत यह भी थी कि रामचंद्र को हुक्मरानी का तजुर्बा हो जाय। यों बराये नाम वे ख़ुद राजा थे, मगर ज़्यादातर काम रामजी के हाथों अंजाम पाता था। राम के हुस्ने-इंतज़ाम की सारे राज में तारीफ़ होने लगी। जब राजा दशरथ को यक़ीन हो गया कि राम अब फ़रमाँ-रवाई के उसूलों से ख़ूब वाक़िफ़ हो गये हैं और उनपर क़ाबिलियत के साथ अमल भी कर सकते हैं तो एक दिन उन्होंने अपने दरबार के अराकीन और शहर के

मुअज़्ज़िज़ आदमियों को बुलाकर कहा, 'मुझे आप लोगों की खिद्मत करते एक मुद्दत गुजर गयी। मैंने हमेशा इन्साफ के साथ राज करने की कोशिश की। अब मैं चाहता हूँ कि राज रामचंद्र के सिपुर्द कर दूँ और अपनी जिन्दगी के आखिरी दिन किसी गोशे में बैठकर परमात्मा की याद में बसर करूँ।

यह तजवीज़ सुनकर लोग बहुत खुश हुए और बोले—'महराज! आपके साये में हम लोग जिस सुख और चैन से रहे उसकी याद हमारे दिलों से कभी न मिटेगी। जी तो यही चाहता है कि आपका हाथ हमारे सिर पर हमेशा रहे, लेकिन जब आपकी यही मरज़ी है कि आप परमात्मा की याद में ज़िन्दगी बसर करें तो हम लोग इस कारे-खैर में हारिज न होंगे। आप शौक से इबादत करें। हम जिस तरह आपको अपना मालिक और मुरब्बी समझते थे, उसी तरह रामचंद्र को समझेंगे।'

इसी असना में गुरु वशिष्ठजी भी आ गये। उन्हें भी यह तजवीज़ पसंद आयी। राजा ने कहा, 'जब आप लोग राम को चाहते हैं तो फिर अच्छी सायत देखकर उनका राज-तिलक कर देना चाहिए। जितनी ही जल्द मुझे फ़ुरसत मिल जाये उतना ही अच्छा।' सब लोगों ने इसे बड़ी खुशी से मंज़ूर कर लिया। तिलक की सायत मुकर्रर हो गयी। शहर में ज्यों ही लोगों को मालूम हुआ कि रामचंद्र का तिलक होनेवाला

है, जशन मनाने की तैयारियाँ होने लगीं। जिस दिन तिलक होनेवाला था उसके एक दिन पहले से शहर की सजावट होने लगी। घरों के दरवाजों पर वंदनवारें लटकायी जाने लगीं, बाज़ारों में झन्डियां लहराने लगीं, सड़कों पर छिड़काव होने लगा; बाजे बजने लगे।

रानी कैकेयी की एक लौंडी मंथरा थी। निहायत बद-सूरत, कुबड़ी औरत थी। कैकेयी के साथ मैके से आयी थी। इसलिए कैकेयी उसे बहुत चाहती थी। वह किसी काम से रनवास के बाहर निकली, जो यह धूम-धाम देखकर एक आदमी से इसका सबब पूछा। उसने कहा—तुझे इतनी खबर भी नहीं! अयोध्या ही में रहती है या कहीं बाहर से पकड़ आयी है! कल श्री रामचंद्र का तिलक होनेवाला है। ये सब उसी की तैयारियां हैं।

यह खबर सुनते ही मंथरा को गोया लक़्वा आ गया। मारे हसद के जल उठी। उसकी दिली ख़्वाहिश थी कि कैकेयी के राजकुमार भरत गद्दी पर बैठे और कैकेयी राजमाता हो। तब मैं जो चाहूंगी करूंगी। फिर तो मेरा ही राज होगा। और रानियों की लौंडियों पर रोब जमाऊंगी। सर से पैर तक गहने से लदी हुई निकलूंगी तो लोग मुझे देखकर कहेंगे, वह मंथरा देवी जाती हैं। फिर मुझे किसी ने कुबड़ी कहा तो उसे मज़ा चखा दूंगी। इसी तरह के मंसूबे उसने दिल में

बाँध रखे थे। इस खबर ने इसके सारे मंसूबे खाक में मिला दिये। जिस काम के लिए जाती थी उसे बिलकुल भूल गयी। बदहवास दौड़ी हुई महल में गयी और कैकेयी से बोली—'महारानी जी? आपने कुछ और सुना? कल राम का तिलक होनेवाला है।'

तीनों रानियों में बड़ी मुहब्बत थी। उनमें नाम को भी सौतिया डाह न था। जिस तरह कौशल्या भरत को राम ही की तरह प्यार करती थी उसी तरह कैकेयी भी राम को प्यार करती थी। रामचंद्र सब से बड़े थे, इसलिए यह मानी हुई बात थी कि वे ही राजा होंगे। मंथरा से यह खबर सुनकर कैकेयी बोली—'मैं यह खबर पहले ही सुन चुकी हूँ। लेकिन तूने सब से पहले मुझसे कहा है, इसलिए यह सोने का हार तुझे इनाम देती हूँ, यह ले।'

मंथरा ने सिर पर हाथ मारकर कहा, 'महारानी! यह इनाम मैं शौक से लेती, अगर राम की जगह राजकुमार भरत के तिलक की खबर सुनाती। यह इनाम देने की बात नहीं है, रोने की बात है। आप अपना भला-बुरा कुछ नहीं समझतीं!'

कैकेयी—चुप रह डाइन! तुझे ऐसी बातें मुँह से निकालते शरम भी नहीं आती? रामचंद्र मुझे भरत से भी प्यारे हैं। तू देखती नहीं कि वे मेरी कितनी इज़्ज़त करते हैं? बिला मुझसे सलाह लिये कोई काम नहीं करते। फिर वह सब से

बड़े हैं। गद्दी पर हक भी तो उन्हीं का है। फिर जो ऐसी बात मुँह से निकाली तो ज़बान खिंचवा लूँगी।

मंथरा—हाँ, ज़बान क्यों न खिंचवा लोगी! जब बुरे दिन आते हैं तो आदमी की अक़्ल पर इस तरह परदा पड़ जाता है। तुम जैसी भोली-भाली और नेक हो, वैसी ही सब समझती हो। राम को 'बेटा, बेटा' कहते यहाँ तुम्हरी ज़बान खुश्क होती है, वहाँ रानी कौसल्या चुपके चुपके तुम्हारी जड़ खोद रही हैं। चार दिन में वही रानी होंगी। तुम्हारी कोई बात भी न पूछेगा। बस, महाराज के पूजा के बरतन धोया करना। मेरा काम तुम्हें समझाना था, समझा दिया। तुम्हारा नमक खाती हूँ, उसका हक़ अदा कर दिया। मेरे लिए जैसे राम वैसे भरत। मैं लौंडी से रानी तो होने की नहीं। हाँ, तुम्हारे खिलाफ़ कोई बात होते देखती हूँ तो रहा नहीं जाता। मेरे मुँह में लूका लगे, कहाँ से कहाँ मैंने यह ज़िक्र छेड़ दिया कि सवेरे सवेरे डायन, चुड़ैल बनना पड़ा। तुम जानो, तुम्हारा काम जाने।

इन बातों ने आखिर कैकेयी पर असर किया। समझी, ठीक ही तो है। रामचंद्र राजा होकर भरत को निकाल दें या मरवा ही डालें तो कौन उनका हाथ पकड़ेगा? मैं भी दूध की मक्खी की तरह निकाल दी जाऊँगी। बहुत होगा, रोटी और कपड़ा मिल जायेगा। राज पाकर सभी का मन बदल

जाती है। राम को भी ग़ुरूर हो जाये तो क्या ताज्जुब है ! जभी कौसल्या मेरी इतनी खातिर करती हैं। यह सब मुझे तबाह करने की चालें हैं। यह सोचकर उसने मंथरा से कहा— 'मंथरा देख, मेरी बातों का बुरा न मान। मैं क्या जानती थी कि मुझे और भरत को तबाह करने के लिए ये कारिस्ते-साज़िशें हो रही हैं। मैं तो सीधी-सादी औरत हूँ। छक्का-पंजा क्या जानूँ! अब तूने यह बात समझायी तो मुझे भी हक़ीक़त मालूम हो रही है। मगर अब तो तिलक की सायत मुक़र्रर हो चुकी। कल सवेरे तिलक हो जायगा। अब हो ही क्या सकता है ?'

मंथरा—होने को बहुत-कुछ हो सकता है। बस, ज़रा तिरिया-हठ से काम लेना पड़ेगा। मैं सारी तरकीब बतला दूँगी। ज़रा उन लोगों की चालाकी देखो कि तिलक की सायत उस वक्त ठीक की जब राजकुमार भरत ननिहाल में हैं। सोचो, अगर दिल साफ़ होता तो दस-पाँच दिन और न ठहर जाते। भरत के आ जाने पर तिलक होता तो क्या बिगड़ जाता ? मगर वहाँ तो दिलों में मैल भरा हुआ है। उनकी ग़ैर-हाज़िरी में चुपके से तिलक कर देना चाहते हैं।

कैकेयी—हाँ, तुझे यह बात भी ख़ूब सूझी ! शायद इसीलिए भरत को पहले से यहाँ से खिसका दिया गया है। पहले ही से यह बात सधी-बधी थी। अफ़सोस ! मुझे मिट्टी में

मिलाने के लिए ऐसे ऐसे फ़ितने गढ़े जाते रहे और मैं बे-खबर बैठी रही। बतला, अब क्या करूँ! मेरी तो अक़्ल कुछ काम नहीं करती।

मंथरा ने अपना कूबड़ हिलाकर कहा—वारी जाऊँ महरानी, आप भी क्या बातें करती हैं! आपको ईश्वर ने ऐसा रूप दिया है और महाराज को आपसे ऐसी मुहब्बत है कि रात भर में आप न जाने क्या क्या कर सकती हैं। आप तो सारी बातें भूल जाती हैं। ऐसी भुलक्कड़ न होतीं तो वैरियों को ऐसे फ़ितने खड़े करने का मौका ही क्यों मिलता! अब तक तो भरत का भी तिलक हो गया होता। तुम्हींने एक बार मुझसे कहा था कि महाराज ने तुम्हें दो बरदान देने का वादा किया है। क्या वह बात भूल गयीं?

कैकेयी—हाँ, भूल तो गयी थी, पर अब याद आ गया। एक बार महाराज लड़ाई के मैदान से जख्मी होकर आये थे और मैंने मरहम-पट्टी करके रात भर में उन्हें अच्छा कर दिया था। उसी वक़्त उन्होंने मुझे दो बरदान दिये थे। मैंने कहा था कि मुझे आपकी दया से किस बात की कमी है? जब ज़रूरत होगी, माँग लूँगी।

मंथरा—बस फिर तो सारी बात बनी बनायी है। आज तुम कोप-भवन में जाकर बैठ जाओ। ज़ेवर वग़ैरह सब उतार फेंको; सिर्फ एक मैली-कुचैली साड़ी पहन लेना और

सिर के बाल खोलकर जमीन पर पड़ रहना। महाराज तुम्हारी यह हालत देखते ही घबड़ा जायेंगे। बस, उसी वक़्त दोनों वरों की याद दिलाकर कहना कि अब उन्हें पूरा कीजिये। एक यह कि राम के बदले भरत का तिलक हो, दूसरे यह कि राम को चौदह बरस के लिए बन-वास दिया जाये। महाराज कौल के पक्के हैं। ज़रूर ही मान जायेंगे। फिर मज़े से राज करना।

दिन तो जशन की तैयारियों में गुज़रा। रात को जब राजा दशरथ कैकेयी के महल में पहुँचे तो चारों तरफ़ अँधेरा छाया हुआ, न कहीं गाना न बजाना, न राग न रंग! घबराकर एक लौंडी से पूछा—यह अँधेरा क्यों छाया हुआ है? चारों तरफ़ नहूसत क्यों फैली हुई है? तू जानती है, महारानी कैकेयी कहाँ हैं? उनकी तबीयत तो अच्छी है?

लौंडी ने कहा—महारानी जी ने गाने-बजाने की मुमानियत कर दी है। वह इस वक़्त कोप-भवन में हैं।

महाराज का माथा ठनका। यह रंग में क्या भंग पड़ा? ज़रूर कोई न कोई मुसीबत आनेवाली है। उनका दिल धड़कने लगा। घबराये हुए कोप-भवन में गये तो देखा, कैकेयी ज़मीन पर पड़ी सिसकियाँ भर रही है।

राजा दशरथ कैकेयी को बहुत प्यार करते थे। उसकी यह हालत देखते ही उनके होशों के तोते उड़ गये। ज़मीन पर बैठकर बोले—महारानी, ख़ैरियत तो है! तुम्हारी तबीयत

कैसी है ? जल्द बतलाओ, वरना मैं पागल हो जाऊँगा। क्या बात हुई है ? तुम्हें किसीने कुछ ताना दिया है ? कोई बात तुम्हारी मरज़ी के ख़िलाफ़ हुई है ? जिसने तुमसे यह गुस्ताख़ी की है, उसको इसी वक़्त सज़ा दूँगा।

कैकेयी ने आँसू पोंछते हुए कहा—मुझे कुछ नहीं हुआ है। बहुत अच्छी तरह हूँ। खाने को रोटियाँ, पहनने को कपड़े और रहने को मकान मिल ही गया है। अब और किस बात की कमी हो सकती है ? आप भी मुहब्बत करते ही हैं। जाइये, जशन मनाइये, मुझे पड़ी रहने दीजिये। जिसकी क़िस्मत ही ख़राब हो, उसे आप क्या करेंगे!

राजा ने कैकेयी को ज़मीन से उठाने की कोशिश करके कहा—महारानी, ऐसी बातें न करो। मुझे सदमा होता है। तुम्हें मालूम है, मैं तुमसे कितनी मुहब्बत करता हूँ। मैंने कभी तुम्हारी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ कोई काम नहीं किया। तुम्हें जो शिकायत हो, साफ साफ कह दो। मैं वादा करता हूँ कि इसी वक़्त उसे पूरा करूँगा।

कैकेयी ने त्योरियाँ बदलकर कहा—आप जितना मुँह से कहते हैं उसका एक हिस्सा भी करते तो मेरी हालत आज ऐसी ख़राब न होती। अब मुझे मालूम हुआ है कि आप की यह मुहब्बत सिर्फ ज़बानी है। आप बातों से पेट भरना ख़ूब जानते हैं; दुनियाँ आपको क़ौल का पक्का कहती है।

आपके खानदान में लोग क़ौल के पीछे जान देते चले आये हैं। मगर मुझसे तो आपने जितने वादे किये, उनमें एक भी पूरा न किया। अब और किस मुँह से माँगूँ ?

राजा—मुझे यह सुनकर सख्त ताज्जुब हो रहा है। जहाँ तक मुझे याद है, मैंने तुम्हारे साथ जितने वादे किये हैं, वे सब पूरे किये। वह कौनसा वादा है, जिसे मैंने पूरा नहीं किया ? इसी वक़्त पूरा करूँगा। इस जरा सी बात के लिए तुम्हें कोप-भवन में बैठने की क्या जरूरत थी ?

कैकेयी सँभलकर उठ बैठी और बोली—याद कीजिये, एक बार आपने मुझे दो बरदान दिये थे, जिस दिन आप लड़ाई में ज़ख्मी होकर लौटे थे।

राजा—हाँ, याद आ गया। ठीक है, मैंने दो बरदान दिये थे। मगर तुमने ही तो कहा था कि जब मुझे ज़रूरत होगी, ले लूँगी।

कैकेयी—हाँ, मैंने ही कहा था। अब वह मौका आ गया है। आप उन्हें पूरा करने को तैयार हैं ?

राजा—दिलो-जान से। अगर तुम जान भी माँगो तो निकालकर दे दूँगा।

कैकेयी ने ज़मीन की तरफ़ ताकते हुए कहा—तो सुनिये, मेरा पहला बरदान यह है कि राम के बदले भरत का

तिलक हो और दूसरा यह कि राम को चौदह बरस के लिए बन-बास दिया जाय।

ओह, संगदिल कैकेयी ! तूने यह क्या किया ? तुझे अपने बूढ़े शौहर पर ज़रा भी रहम नहीं आया ! क्या तुझे मालूम नहीं कि रामचंद्र ही उनके जीवनाधार हैं ! राजा के चेहरे का रंग जर्द पड़ गया। मालूम हुआ, साँप ने काट लिया हो। एक ठंडी साँस भरकर बोले—'कैकेयी, क्या तुम्हारे मुँह से यह जहर के कतरे टपक रहे हैं ? क्या तुम्हारे दिल में राम की तरफ से इतनी कदूरत है ? राम का आज दुनियाँ में कोई बदख़्वाह नहीं। वह सब की नजरों का तारा है। तुम्हारी वह जितनी इज्ज़त करता है, उतनी शायद अपनी मां की नहीं करता। तुमने आज तक कभी उसकी शिकायत न की। बल्कि हमेशा उसकी खुल्क और मुरव्वत की तारीफ किया करती थी। आज यह काया-पलट क्यों हो गयी ? जरूर किसी दुश्मन ने तुम्हारे कान भरे हैं और राम की बुराइयाँ की हैं।

कैकेयी ने तुनककर कहा—कान तुम्हारे भरे गये हैं, मेरे कान नहीं भरे गये हैं। अपना नफा और नुकसान जानवर तक समझते हैं। क्या मैं जानवरों से भी गयी-गुज़री हूँ। सरीह देख रही हूँ कि मेरा बाग़ वीरान किया जा रहा है; क्या उसकी हिफाजत न करूँ ? अपनी गर्दन पर तलवार चल जाने दूँ ? आपको मैं अब तक साफदिल समझती थी। मगर अब मालूम

हुआ कि आप भी जवानी मुहब्बत के सब्ज़ बाग दिखाकर मुझे तबाह करना चाहते हैं। कौसल्या रानी ने आपको ख़ूब मंत्र पढ़ाया है। उस नागिन के काटे का इलाज नहीं। अब मैं दिखा दूँगी कि कैकेयी भी राजा की लड़की है, किसी शूद्र-चमार की नहीं कि इन चालों को न समझे।

राजा—कैकेयी! मैं कभी झूठ नहीं बोला। मैं तुमसे सच कहता हूँ कि मैंने राम के तिलक का फ़ैसला खुद किया। कौसल्या ने इस मुआमिले में मुझसे एक लफ़्ज़ भी नहीं कहा। तुम्हारा उनपर शुबहा करना बे-इन्साफी है। राम ने भी कभी भरत के खिलाफ़ एक लफ़्ज़ नहीं कहा। मेरे लिए राम और भरत दोनों बराबर हैं। मगर हक़ तो बड़े लड़के ही का है। अगर मैं भरत का तिलक करना भी चाहूँ, तो क्या तुम समझती हो कि भरत इसे मंज़ूर करेंगे; हरगिज नहीं। भरत के लिए यह ग़ैर-मुमकिन है कि वह राम का हक़ छीनकर खुश हो। राम और भरत एक जान, दो क़ालिब हैं। तुमने इतने दिनों के बाद बरदान भी माँगे तो ऐसे, जो इस घर को बरबाद कर देंगे। शायद इस राज का खातमा ही कर दें! अफसोस!

कैकेयी ने उँगली नचाकर कहा—अच्छा, तो क्या आपने समझा था कि मैं आपसे खेलने के लिए गुड़ियाँ माँगूँगी! क्या किसी मज़दूर की लड़की हूँ? अब इन चिकनी-चुपड़ी बातों में आप मुझे न फँसा सकेंगे। आपको और इस

घर के सब आदमियों को ख़ूब देख चुकी। आँखें खुल गयीं। अगर आपको कौल के पक्के बनने का दावा है तो मेरे दोनों बरदान पूरे कीजिये। वर्ना फिर कभी रघुबंशी होने का घमंड न कीजियेगा। यह कलंक हमेशा के लिए अपने माथे पर लगा लीजिये कि रघुकुल के राजा दशरथ ने वादे किये थे, पर जब उन्हें पूरा करने का वक्त आया तो साफ निकल गये।

राजा ने पेचो-ताब खाकर कहा—कैकयी! क्यों जले जख्म पर नमक छिड़कती हो? मैं अपने कौल से कभी नहीं फिरूँगा; चाहे इससे मेरी ज़िन्दगी, मेरे ख़ान्दान और मेरे राज का खातमा ही क्यों न हो जाय। शायद ब्रह्मा ने राम की तकदीर में बन-बास ही लिखा हो। शायद इसी हीले से इस खान्दान की तबाही लिखी हो। मगर इसका अपजश हमेशा के लिए तुम्हारे नाम के साथ लगा रहेगा। मैं तो शायद यह चोट खाकर जिन्दा न रहूँगा। मगर मेरी यह बात गिरह में बाँध लो कि राम को बन-बास देकर तुम भरत के राज का सुख न देख सकोगी।

कैकयी ने झल्लाकर कहा—"यह आप भरत को बद-दुआ क्यों देते हैं? भरत राजा होंगे। आपको उन्हें राज देना पड़ेगा। वह राजा हो जाय, यही मेरी ख्वाहिश है। मैं सुख देखने के लिए ज़िन्दा रहूँगी या नहीं; इसका हाल ईश्वर जाने।"

राजा—यह तो मैं बड़ी खुशी से करने को तैयार हूँ। मेरे लिये राम और भरत में कोई फ़र्क नहीं। मैं इसी वक़्त भरत को बुलाने के लिये आदमी भेज सकता हूँ। ज्यों ही वह आ जायेंगे, उनका तिलक हो जायेगा। मगर राम को बन-बास देते हुए मेरे जिगर के टुकड़े हुए जाते हैं। हाय! मेरा प्यारा राजकुमार चौदह साल तक जंगलों में कैसे रहेगा? जो हमेशा फूलों की सेज पर सोया, वह पत्थर की चट्टानों पर घास-पात का बिछौना बिछाकर कैसे सोयेगा? कैकयी! ईश्वर के लिये मुझपर रहम करो; इस खानदान पर रहम करो। अपना दूसरा बरदान पूरा करने के लिये मुझे मजबूर न करो।

कैकयी ने राजा की तरफ़ देखकर आँखें नचायीं और बोलीं, तो साफ साफ क्यों नहीं कहते कि मैं अपने वादे न पूरे करूँगा। क्या मैं इतना भी नहीं समझती कि राम के रहते ग़रीब भरत कभी आराम से बैठने न पायेगा। राम अपनी मीठी बातों से रिआया का दिल क़ाबू में करके राज में बग़ावत करा देंगे। भरत का ज़िन्दा रहना मुश्किल हो जायेगा। मेरे दोनों बरदान आपको पूरे करने पड़ेंगे। अब आपके धोखे में न आऊँगी।

राजा समझ गये कि कैकयी को समझाना अब बेकार है। मैं जितना ही समझाऊँगा, उतना ही यह झल्लायेगी। सर थामकर सोचने लगे कि क्या जवाब दूँ? मालूम होता था,

आँखों में अंधेरा छा गया है। कोई जिगर को चीरे डालता है। हाय! ज़िंदगी की सारी आरज़ुएँ खाक में मिली जा रही हैं। ईश्वर! अगर तुम्हें यही करना था तो बेटे दिये क्यों? बला से ला-वल्द रहता; जवान बेटे की मुसीबत तो न देखनी पड़ती। यह तीन तीन शादियाँ करने का नतीजा है! बुढ़ापे में शादी करने का यह फल है! उससे ज़्यादा बेवक़ूफ दुनियाँ में कोई इन्सान नहीं जो बुढ़ापे में शादी करता है। वह जान-बूझकर ज़हर का प्याला पीता है! हाय! सुबह होते ही राम मुझसे जुदा हो जायेंगे। मेरा प्यारा लख़्ते-जिगर जंगलों की राह लेगा! भगवन! उससे पहले कि इसके बन-वास का लफ़्ज़ मेरी ज़बान से निकले, तुम मुझे इस दुनियाँ से उठा लेना। इससे पहले कि मैं उसे फकीराना-सूरत बनाये जंगल की तरफ जाते देखूँ, तुम मेरी आँखों को बेनूर कर देना। हाय! काश, राम इतना फरमाबरदार न होता; काश, वह मेरा हुक्म मानने से इनकार कर देता!

कैकयी राजा को फिक्र में ग़र्क देखकर बोली—आप सोच क्या रहे हैं? बोलिये, मेरी बातें मंज़ूर करते हैं या नहीं?

राजा ने आँसुओं से भरी हुई आँखों से कैकयी को देखकर कहा— रानी! यह पूछने की बात नहीं। अपने कौल से न फिरूँगा। तुम्हारी दोनों बातें मंज़ूर हैं। तुम इतनी हसीन होकर दिल की इतनी स्याह हो, इसका मुझे वहम न

गुमान न था। मैं न जानता था कि तुम मेरे दोनों वरदानों का यह इस्तेमाल करोगी। ख़ैर, तुम्हारा राज तुमको मुबारक हो। प्यारे राम! मुझे मुआफ़ करना। तुम्हारा बाप जिसने तुम्हें गोद में खिलाया, आज एक औरत के फ़रेब में पड़कर तुम्हारी गरदन पर तलवार चला रहा है। मगर बेटा! देखना रघुकुल के नाम को दाग़ न लगने पाये।

यह कहते कहते राजा बेहोश हो गये। कैकयी दिल में ख़ुश हो रही थी कि कल से अयोध्या में मेरे नाम का डंका बजेगा। वह सवेरे किसी क़ासिद को कश्मीर भेजकर भरत को बुलाने के मंसूबे बाँध रही थी। 'अहा! वह घड़ी कितनी मुबारक होगी! जब भरत अयोध्या के राजा होंगे।' राजा थोड़ी थोड़ी देर के बाद करवट बदलते और कराहते थे। 'हाय राम! हाय राम!' इसके सिवा उनके मुँह से और कोई लफ़्ज़ न निकलता था।

इस तरह सारी रात गुज़र गयी। सुबह को शहर के रऊसा, विद्वान, ऋषि, मुनि और दरबार के उमराव तिलक की रसम अदा करने के लिये हाज़िर हुए। हवन-कुंड में आग जलाई गयी। आचार्य लोग वेद-मन्त्रों का पाठ करने लगे। फ़क़ीरों का एक जम्मे-ग़फ़ीर ख़ैरात के रुपये लेने के लिए फाटक पर जमा हो गया। लोगों की आँखें राजमहल के दरवाज़े की तरफ़ लगी हुई हैं। राजा साहब आज क्यों इतनी

देर कर रहे हैं, हर शख़्स अपने पास बैठे हुए आदमी से यही सवाल कर रहा है। शायद राजसी-पोशाक पहन रहे हों। मगर नहीं, वे तो बहुत तड़के उठा करते हैं। अंदर से कोई खबर भी नहीं आती। रामचंद्र स्नान-पूजा से फ़ारिग़ होकर बैठे हैं। जानकी भी ज़ेवरों से आरास्ता हैं। कौसल्या की खुशी का अंदाज़ा कौन कर सकता है? महल में मुबारक-बादियाँ गायी जा रही हैं। दरवाज़े पर नौबत बज रही है। पर दशरथ का पता नहीं।

आख़िर गुरु वसिष्ठ ने साइत टलते देखकर मंत्री सुमन्त्र को महल में भेजा कि जाकर महाराज को बुला लाओ। सुमंत्र अंदर गये, तो क्या देखते हैं कि महाराज ज़मीन पर पड़े कराह रहे हैं और कैकयी दरवाज़े पर खड़ी है। सुमन्त्र ने रानी कैकयी को प्रणाम किया और बोले—महाराज की नींद क्या अभी नहीं टूटी? बाहर गुरु वसिष्ठ जी बैठे हुए हैं। तिलक का मुहूर्त टला जा रहा है। आप ज़रा उन्हें जगा दें।

कैकयी बोली—महाराज को खुशियों के मारे आज रात भर नींद नहीं आयी। इस वक़्त ज़रा आँख लग गयी है। अभी जगा दूँगी तो उनका सिर भारी हो जायेगा। तुम ज़रा जाकर रामचंद्र को अंदर भेज दो। महाराज उनसे कुछ कहना चाहते हैं।

सुमंत्र ने क़याफ़े से ताड़ लिया कि ज़रूर कोई फ़ितना

खड़ा हुआ है। जाकर रामचंद्रजी से यह पैग़ाम कहा। रामचंद्र फौरन अंदर आकर राजा दशरथ के सामने खड़े हो गये और प्रणाम करके बोले—पिताजी, मैं हाज़िर हूँ, मुझे क्यों याद फरमाया है?

दशरथ ने एक बार बेकसाना-निगाहों से रामचंद्र को देखा और एक ठंडी साँस भरकर सर झुका लिया। उनकी आँखों से आँसू जारी हो गये। रामचंद्र को अंदेशा हुआ कि शायद महाराज मुझसे नाराज़ हैं। बोले—माताजी! पिताजी ने मेरी बातों का कुछ जवाब नहीं दिया। शायद वह मुझसे नाराज हैं।

कैकयी बोली—नहीं बेटा, वे तुमसे नाराज नहीं हैं। तुमसे वह इतनी मुहब्बत करते हैं। तुमसे नाराज क्यों होने लगे? वे तुमसे कुछ कहना चाहते हैं। मगर इस खौफ से कि शायद तुम्हें बुरा मालूम हो, या तुम उनका हुक्म न मानो, कहते हुए झिझकते हैं। इसलिये अब मुझी को कहना पड़ेगा। बात यह है कि अर्सा गुज़रा, महाराज ने मुझसे दो वादे किये थे। आज वे उन वादों को पूरा करना चाहते हैं। अगर तुम उनको पूरा करने के लिये तैयार हो तो मैं कहूँ?

राम ने बेखौफ लहजे में कहा—माताजी, मेरे लिये पिता का हुक्म मानना फर्ज़ है। दुनियाँ में ऐसी कोई ताकत नहीं जो मुझे यह फ़र्ज़ पूरा करने से रोक सके। आप जरा भी

ताम्मुल न करें। मैं ब-सरो-चश्म उनके हुक्म की तामील करूँगा। मेरे लिये इससे ज़्यादा खुशनसीबी की और क्या बात होगी।

कैकयी—हाँ! सपूत बेटों का धर्म तो यही है। महाराज ने अब तुम्हारी जगह भरत का तिलक करने का फ़ैसला किया है और तुम्हें चौदह साल के लिये बन-बास दिया है। महाराज ये बातें अपने मुँह से न कह सकेंगे। मगर वे जो कुछ चाहते हैं, वह मैंने तुमसे कह दिया। अब मानना तुम्हारे अख़्तियार में है। अगर तुमने न माना तो दुनियाँ में राजा पर यह इल्ज़ाम लगेगा कि उन्होंने अपने क़ौल को पूरा न किया, और तुम्हारे सिर यह कि बाप के हुक्म को न माना।

रामचंद्र यह हुक्म सुनकर ज़रा देर के लिये सहम उठे। क्या समझते थे, और क्या हुआ! सारी कैफियत उनकी समझ में आ गयी। अगर वे चाहते तो इस हुक्म की परवाह न करते। सारी अयोध्या उनके नाम पर मरती थी। मगर सआदतमंद बेटे बाप के हुक्म को ईश्वर का हुक्म समझते हैं। राम ने उसी वक़्त इरादा कर लिया कि मुझपर चाहे जो कुछ गुजरे; बाप का हुक्म मानना मुक़द्दम है। बोले—माताजी, मेरी तरफ़ से आप ज़रा भी अंदेशा न करें। मैं आज ही अयोध्या से चला जाऊँगा। आप किसी क़ासिद को भेजकर भरत को बुला भेजिये। मुझे उनके राज-तिलक होने

का ज़रा भी मलाल नहीं है। मैं अभी माता कौसल्या से पूछकर और सीताजी को तशफ़्फ़ी देकर जंगल की राह लूँगा।

यह कहकर रामचंद्र ने राजा के क़दमों पर सर झुकाया; माता कैकयी को प्रणाम किया और कमरे से बाहर निकले। राजा दशरथ के मुँह से रंज या ग़म का एक लफ़्ज़ भी न निकला। ज़बान उनके क़ाबू में न थी। ऐसा मालूम हो रहा था, गोया रगों से जान निकली जा रही है। जी में आता था, राम के पैर पकड़कर रोक लूँ। अपने ऊपर गुस्सा आ रहा था। कैकयी के ऊपर गुस्सा आ रहा था। ईश्वर से प्रार्थना कर रहे थे कि मुझे मौत आ जाये। इसी वक़्त इस ज़िन्दगी का खात्मा हो जाये। सीना फटा जाता था। आह! मेरा प्यारा बेटा इस तरह चला जा रहा है और मैं ज़बान से तशफ़्फ़ी का एक कलमा भी नहीं निकाल सकता। कौन बाप इतना बेरहम होगा। यह सोचते सोचते राजा को फिर ग़श आ गया।

रामचंद्र यहाँ से कौसल्या के पास पहुँचे। वे उस वक़्त ग़रीबों को ग़ल्ला और कपड़े देने का इंतज़ाम कर रही थीं। राम को देखते ही बोलीं—क्या हुआ बेटा? राजा बाहर गये कि नहीं? अब तो देर हो रही है।

रामचंद्र ने आवाज़ को सँभालकर कहा—माताजी, मुआमला कुछ और हो गया। महाराज ने अब भरत को राज

देने का फ़ैसला किया है और मुझे चौदह बरस के बन-बास का हुक्म दिया है। मैं आपसे इजाज़त लेने आया हूँ। आज ही अयोध्या से चला जाऊँगा।

रानी कौसल्या को सकता सा हो गया। रामचंद्र की तरफ़ बेहिस आँखों से ताकती हुई रह गयीं; गोया कोई मिट्टी की मूरत हो।

लक्ष्मण भी वहीं खड़े थे। ये बातें सुनते ही उनकी त्योरियों पर बल पड़ गये। आँखों से चिनगारियाँ निकलने लगीं। बोले—यह नहीं हो सकता। हरगिज़ नहीं हो सकता। भरत कभी लक्ष्मण के जीते जी अयोध्या के राजा नहीं हो सकते। आप क्षत्रिय हैं। अपने हक़ के लिए जंग करना क्षत्रिय का धर्म है। सारी अयोध्या, सारा कोसल आपकी तरफ़ है। फ़ौज आपका इशारा पाते ही आपकी तरफ़ आ जायगी। भरत अकेले कर ही क्या सकते हैं। यह सब रानी कैकयी की साज़िश है।

रामचंद्र ने लक्ष्मण की तरफ़ मुहब्बत-आमेज़ नज़रों से देखकर कहा—भइया, कैसी बातें करते हो? रघुकुल में जन्म लेकर बाप का हुक्म न मानूँ तो दुनियाँ को क्या मुँह दिखाऊँगा। तक़दीर में जो लिखा है, वह पूरा होकर रहेगा। उसे कौन टाल सकता है?

लक्ष्मण—भाई साहब! तक़दीर की आड़ वे लोग

लेते हैं, जिन में हौसला और हिम्मत नहीं होती। आप क्यों तक़दीर की आड़ लें। आपके अब्रुओं के एक इशारे पर सारी अयोध्या में तूफ़ान बर्पा हो जायेगा। क़िस्मत अहले-हिम्मत की लौंडी है। उनकी रानी नहीं। अगर आप मुझे इजाज़त दें तो मैं इस तीरो-कमान के ज़ोर से तक़दीर को आपके क़दमों पर गिरा दूँ। फिर आपसे महाराज ने अपनी ज़बाने-मुबारक से तो कुछ कहा नहीं। क्या यह मुमकिन नहीं कि रानी कैकयी ने अपनी तरफ़ से यह फ़ितने खड़े किये हों ?

रानी कौसल्या ने आँसू पोंछते हुए कहा—बेटा, मुझे इस बात की तो सच्ची ख़ुशी है कि तुम अपने क़ाबिल-एहतराम बाप का हुक्म मानने के लिए अपनी ज़िन्दगी को क़ुर्बान करने को तैयार हो। मगर मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि लक्ष्मण का ख़्याल ठीक है। कैकयी ने अपनी तरफ़ से यह फ़रेब रचा है।

रामचंद्र ने अदब के साथ कहा—माताजी! पिताजी वहीं मौजूद थे। अगर रानी कैकयी ने उनकी मरज़ी के ख़िलाफ़ कोई बात कही होती तो क्या वह कुछ एतराज़ न करते! नहीं माताजी! फ़र्ज़ से मुँह मोड़ने के लिए हीले ढूँढ़ना मैं धर्म के ख़िलाफ़ समझता हूँ। कैकयी ने जो कुछ कहा है पिताजी की रज़ामंदी से कहा है। मैं उनके हुक्म को किसी तरह नहीं टाल सकता। आप मुझे अब जाने की

इजाज़त दें। अगर ज़िन्दा रहा तो फिर आपके क़दमों की ज़ियारत करूँगा।

कौसल्या ने रामचंद्र का हाथ पकड़ लिया और बोलीं—बेटा, आखिर मेरा भी तो तुम्हारे ऊपर कोई हक़ है। अगर राजा ने तुम्हें बन-बास का हुक्म दिया है तो मैं तुम्हें इस हुक्म को मानने से मना करती हूँ। अगर तुम मेरा कहना न मानोगे तो मैं दाना-पानी त्याग दूँगी और तुम्हारे ऊपर माता की हत्या का इलज़ाम लगेगा।

रामचंद्र ने एक सर्द आह खींचकर कहा—माताजी! मुझे फ़र्ज़ के सीधे रास्ते से न हटाइये। वरना जहाँ मुझपर धर्म को तोड़ने का इलज़ाम लगेगा, वहाँ आप भी उस इलज़ाम से न बच सकेंगी। मैं कोह व बयाबान, चाहे जहाँ रहूँ मेरी आत्मा सदा आपके चरणों के पास मौजूद रहेगी। आपकी मुहब्बत बहुत रुलायेगी। आपकी मुक़द्दस सूरत देखने के लिए आँखें बहुत रोयेंगी। पर बन-बास में ये तकलीफ़ें न होतीं तो तक़दीर मुझे वहाँ ले ही क्यों जाती। कोई लाख कहे, मगर इस ख़्याल को दूर नहीं कर सकता कि तक़दीर ही मुझे यह खेल खिला रही है; वरना क्या कैकयी-सी देवी मुझे बन-बास देती!

लक्ष्मण बोले—कैकयी को आप देवी कहें; मैं नहीं कह सकता।

रामचंद्र ने लक्ष्मण की तरफ़ नाराज़गी के अंदाज़ से देखकर कहा—लक्ष्मण ! मैं जानता हूँ कि तुम्हें मेरे बन-बास से बहुत मलाल हो रहा है, मगर मैं तुम्हारे मुँह से माता कैकयी की शान में कोई बेअदबी की बात नहीं सुन सकता। कैकयी हमारी माता हैं। तुम्हें उनकी इज्ज़त करनी चाहिए। मैं इसलिए बन-बास नहीं ले रहा हूँ कि यह कैकयी की ख़्वाहिश है। बल्कि इसलिए कि अगर मैं न जाऊँ तो महाराज का वादा झूठा होता है। दो चार दिन में भरत आ जायेंगे। जैसी मुझसे मुहब्बत करते हो, वैसी ही उनसे मुहब्बत करना। अपने क़ौल या फ़ेल से यह हरगिज़ मत जाहिर करना कि तुम उनके बदख़्वाह हो। बार-बार मेरी चर्चा भी न करना; वरना शायद भरत को नागवार गुज़रे।

लक्ष्मण ने ग़ुस्से से सुर्ख़ होकर कहा—भइया, बार-बार भरत का नाम न लीजिये। उनके नाम ही से मेरे जिस्म में आग लग जाती है। हर चंद ग़ुस्से को रोकना चाहता हूँ। पर हक़ को यों मिटते देखकर दिल क़ाबू से बाहर हो जाता है। भरत का राज पर कोई हक़ नहीं। राज आपका है और मेरे जीते जी कोई उसे आपसे नहीं छीन सकता। क्षत्रिय अपने हक़ के लिए लड़कर मर जाता है। मैं ख़ून की नदी बहा दूँगा।

लक्ष्मण का ग़ुस्सा बढ़ते देखकर राम ने कहा – लक्ष्मण !

होश में आओ। यह गुस्सा और जंग का मौक़ा नहीं है। यह महाराजा दसरथ के क़ौल को निभाने की बात है। मैं इस फर्ज को किसी हालत में भी नहीं तोड़ सकता। मेरा बन जाना यकीनी है। फ़र्ज़ के मुक़ाबले में जिस्मानी आराम और आसाइश की कोई हक़ीक़त नहीं।

लक्ष्मण को जब मालूम हो गया कि रामचंद्र ने जो इरादा कर लिया है उससे टल नहीं सकते, तो बोले—अगर आपका यही फ़ैसला है तो मुझे भी साथ लेते चलिये। आपके बग़ैर मैं यहाँ एक दिन भी नहीं रह सकता। जब आप बन में घूमेंगे तो मैं इस महल में क्यों कर रह सकूँगा! आपके बग़ैर यह राज्य मुझे श्मशान-सा लगेगा। जब से मैंने होश संभाले, कभी आपके क़दमों से जुदा नहीं हुआ। अब भी उनसे लिपटा रहूँगा।

रामचंद्र ने लक्ष्मण को मुहब्बत-आमेज़ नजरों से देखा। छोटे भाई को मुझसे कितनी उलफ़त है। मेरे लिए ज़िन्दगी के सारे आराम व आसाइश पर लात मारने के लिए तैयार है। बोले—नहीं लक्ष्मण, इस ख़्याल को तर्क कर दो। भला सोचो तो, जब तुम भी मेरे साथ चले जाओगे तो माता कौसल्या और सुमित्रा किसका मुँह देखकर रहेंगी। कौन उनके दुख के बोझ को हल्का करेगा? भरत के राजा होने पर रानी कैकयी स्याहो-सफेद की मालिक होंगी।

मुमकिन है, वह हमारी माताओं को किसी क़िस्म की तकलीफ़ दें। उस वक़्त कौन उनकी मदद करेगा! नहीं, तुम्हारा मेरे साथ चलना मुनासिब नहीं।

लक्ष्मण—नहीं भाई साहब! मैं आपके बग़ैर किसी तरह नहीं रह सकता। भरत की जानिब से इस क़िस्म का अंदेशा नहीं हो सकता; वह इतना बुज़दिल और कमीना नहीं हो सकता। रघु के खानदान में ऐसा कमीना इंसान पैदा ही नहीं हो सकता। आपका साथ मैं किसी तरह नहीं छोड़ सकता।

रामचंद्र ने बहुत समझाया; मगर जब लक्ष्मण किसी तरह न माने तो उन्होंने कहा—खैर, अगर तुम नहीं मानते तो मैं तुम्हारे साथ ज़बर्दस्ती नहीं कर सकता। मगर पहले जाकर माता सुमित्रा से तो पूछ आओ।

लक्ष्मण ने जब सुमित्रा से बन जाने की इजाज़त माँगी तो उन्होंने उसे सीने से लगाकर कहा—शौक़ से बन जाओ, बेटा! मैं तुम्हें ख़ुशी से इजाजत देती हूँ। मुसीबत में भाई ही भाई के काम आता है। राम से तुम्हें जितना उन्स है, उसका तक़ाज़ा यही है कि तुम इस कठिन वक़्त में उनका साथ दो। मैं सदा तुम्हें आशीर्वाद देती रहूँगी।

इसी असना में सीताजी को भी राम के बन-बास की ख़बर मिली। वे अच्छे अच्छे ज़ेवरों से आरास्ता होकर राज-

तिलक के लिए तैयार थीं। यकायक यह गमनाक खबर मिली और मालूम हुआ कि राम तनहा जाना चाहते हैं तो दौड़ी हुई आकर उनके क़दमों पर गिर पड़ीं और बोलीं—स्वामी, आप बन जाते हैं तो मैं यहाँ अकेली कैसे रहूँगी? मुझे भी साथ चलने की इजाज़त दीजिये। आपके बग़ैर मुझे यह महल फाड़े खायेगा। फूलों की सेज कांटों की तरह गड़ेगी। आपके साथ जंगल भी मेरे लिए बाग़ है। आपके बग़ैर बाग़ भी जंगल है।

कौसल्या ने सीता को गले से लगाकर कहा—बेटी! तुम भी चली जाओगी तब मैं किसका मुँह देखकर जिऊँगी। फिर तो घर ही सूना हो जायेगा। सोचती थी कि तुम्हीं को देखकर दिल को तस्कीन दूँगी। मगर अब तुम भी बन जाने को तैयार हो; ईश्वर! अब और कौनसा दुख दिखाना चाहते हो? क्यों इस अभागिन को नहीं उठा लेते!

रामचंद्र को यह ख़्याल भी न हुआ था कि सीताजी उनके साथ चलने को तैयार होंगी, समझाते हुए बोले—सीता! इस ख़्याल से बाज़ आओ। जंगल में बड़ी बड़ी तकलीफ़ें हैं। क़दम क़दम पर दरिन्दों का खौफ़, जंगल के ख़ूँ-ख़्वार आदमियों से साबिका, रास्ता कांटों और संगरेज़ों से भरा हुआ, भला तुम्हारा नाज़ुक जिस्म ये सख़्तियाँ कैसे झेल सकेगा? पत्थर की चट्टानों पर तुम कैसे सोओगी? पहाड़ों

का पानी ऐसा ख़राब होता है कि तरह तरह की बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं। तुम उन तकलीफ़ों को कैसे बरदाश्त कर सकोगी ?

सीता आँखों में आँसू भरकर बोलीं—स्वामी! जब आप मेरे साथ होंगे तो मुझे किसी बात का ख़ौफ़ न होगा। वह खुशी सारी तकलीफ़ों को मिटा देगी। यह कैसे हो सकता है कि आप जंगलों में तरह तरह की सख़्तियाँ झेलें और मैं राजमहल में आराम से सोऊँ! औरत का फ़र्ज़, अपने शौहर का साथ देना है। वह खुशी और रंज हर हालत में उसकी शरीक-ए-हाल रहती है। यही उसका सबसे बड़ा फ़र्ज़ है। अगर आप सैर व तफ़रीह के लिए जाते होते तो मैं आपके साथ जाने पर ज़्यादा इसरार न करती। मगर यह जानकर कि आपको हर तरह की तकलीफ़ होगी, मैं किसी तरह नहीं रुक सकती। मैं आपके रास्ते से काँटे चुनूँगी; आपके लिए घास और पत्तों का सेज बनाऊँगी, आप सोयेंगे तो आपको पंखा झलूँगी। इससे बढ़कर किसी औरत को और क्या सुख हो सकता है ?

रामचंद्र लाजवाब हो गये। उसी वक़्त तीनों आदमियों ने शाही लिबास उतार दिये और फ़क़ीरों का-सा सादा कपड़ा पहनकर कौसल्या से आकर बोले—माताजी, अब हमको चलने की इजाज़त दीजिये।

कौसल्या ज़ारो-क़तार रोने लगीं, बोलीं—बेटा, किस मुँह से जाने को कहूँ। दिल को किसी तरह तस्कीन नहीं होती। धर्म का मुआमला है, रोक भी नहीं सकती। जाओ, मेरा आशीर्वाद सदा तुम्हारे साथ रहेगा। जिस तरह पीठ दिखाते हो, उसी तरह मुँह भी दिखाना।

यह कहते कहते कौसल्या रानी फ़र्त्ते-ग़म से ग़श खाकर गिर पड़ीं। यहाँ से तीनों आदमी सुमित्रा के पास गये और उनके चरणों पर सर झुकाकर, रानी कैकयी के कोप-भवन में महाराजा दसरथ से रुख़सत होने गये। राजा लाश-बेजान की तरह बे-हिसो-हरकत पड़े थे। तीनों आदमियों ने बारी बारी से उनके चरणों पर सर झुकाया, तब राम बोले—महाराज, मैं तो अकेला ही जाना चाहता था; मगर लक्ष्मण और जानकी किसी तरह मेरा साथ नहीं छोड़ते। इसलिए उन्हें भी लिये जाता हूँ। हमें आशीर्वाद दीजिये।

यह कहकर जब तीनों आदमी वहाँ से चले तो राजा दसरथ ने ज़ोर से रोकर कहा—हाय राम! तुम कहाँ चले? उनपर एक जनून की सी कैफ़ियत छा गयी। नेक-व-बद का ख़्याल न रहा। दौड़े कि पकड़कर रोक लें, मगर ग़श खाकर गिर पड़े। रात ही भर में उनकी हालत ऐसी ख़राब हो गयी थी, गोया बरसों के मरीज़ हों।

अयोध्या में यह ख़बर मशहूर हो गयी थी। लाखों

आदमी राज-भवन के दरवाज़े पर जमा हो गये थे। जब ये तीनों आदमी फ़कीराना सूरत में रनवास से निकले तो सारी रैय्यत ज़ार ज़ार रोने लगी। सब हाथ जोड़ जोड़कर कहते थे—महाराज आप न जायें; हम सब चलकर महारानी कैकयी के कदमों पर सिर झुकायेंगे; महाराज से मिन्नतें करेंगे। आप न जायें। हाय! अब हमें कौन पालेगा; कौन हमारे साथ हमदर्दी करेगा? हम किससे अपना दुख कहेंगे? कौन हमारी सुनेगा? हम तो कहीं के न रहे।

रामचंद्र ने सबको समझाकर कहा—मुसीबत में सब्र के सिवा और कोई चारा नहीं, यही आपसे मेरी दरख्वास्त है। मैं हमेशा आप लोगों को याद करता रहूँगा।

राजा ने सुमंत्र को पहले ही बुलाकर कह दिया था कि जिस तरह हो सके राम, सीता और लक्ष्मण को वापस लाना। सुमंत्र रथ तैय्यार किये खड़ा था। रामचंद्र ने पहले सीताजी को रथ पर बिठाया; फिर दोनों भाई बैठे और सुमंत्र को रथ चलाने का हुक्म दिया। हज़ारों आदमी रथ के पीछे दौड़े और बहुत समझाने पर भी रथ का पीछा न छोड़ा। आखिर शाम को जब लोग तमसा नदी के किनारे पहुँचे तो राम ने उन्हें दिलासा देकर रुखसत किया।

इधर अयोध्या में कुहराम मचा हुआ था। मालूम होता था, सारा शहर वीरान हो गया है। जहाँ कल सारा

शहर चिराग़ों से जगमगा रहा था वहाँ आज तारीकी छायी हुई थी। सुबह जहाँ शादियाने बज रहे थे, वहाँ इस वक्त़ हर घर से रोने की आवाज़ें आती थीं। दूकानें बन्द थीं। जहाँ दो आदमी मिल जाते यही जिक्र होने लगता—बेटा हो तो ऐसा हो। बाप का हुक्म पाते ही राज-पाट पर लात मार दी। संसार में ऐसा कौन होगा? बड़े बड़े राजा एक एक बालिश्त ज़मीन के लिए लड़ते मरते हैं। भाई भी हो तो ऐसा हो। सबसे ज़्यादा तारीफ़ सीताजी की हो रही थी। मर्दों के लिए तो जंगल की तकलीफ़ सहना कोई ग़ैर-मामूली बात नहीं—औरत के लिए ग़ैर-मामूली बात थी। सती स्त्रियाँ ऐसी होती हैं। जिसने कभी ज़मीन पर पाँव नहीं रखा, वह जंगल में चलने के लिए तैयार हो गयी। सच है, बुरे वक्त़ में ही औरत और दोस्त की परख होती है।

उधर रनवास मातमसरा बना हुआ था। किसी को तन-बदन की सुध न थी।

राजा दसरथ की वफ़ात

तमसा (तौंस) नदी को पार करके पहर रात जाते जाते रामचंद्र गंगा के किनारे जा पहुँचे। वहाँ भील सर्दार गुह का राज था। रामचंद्र के आने की ख़बर पाते ही उसने आकर प्रणाम किया। रामचंद्र ने उसकी नीची ज़ात का ज़रा भी ख़्याल न करके उसे सीने से लगा लिया और ख़ैर-व-आफ़ियत पूछी। गुह सरदार बाग़ बाग़ हो गया। कोसल के राजकुमार ने उसे सीने से लगा लिया, इतनी इज़्ज़त उसके ख़ानदान में और किसी को नसीब नहीं हुई थी। हाथ जोड़कर बोला—महाराज, आप ग़रीब-ख़ाने को अपने क़दमों से रोशन कीजिये। इस घर के नसीब भी जागें। जब मैं आपका सेवक यहाँ मौजूद हूँ तो आप यहाँ क्यों तकलीफ़ उठायेंगे?

रामचंद्र ने गुह की दावत मंज़ूर न की। जिसे बन-बास का हुक्म मिला हो, वह शहर में क्योंकर रहता। वहीं एक दरख़्त के नीचे रात बसर की।

दूसरे दिन अहल सुबह रामचंद्र ने सुमंत्र से कहा, अब तुम लौट जाओ। हम लोग यहाँ से पैदल जायेंगे। माताजी से कह देना कि हम लोग ख़ैरियत से हैं। घबराने की कोई बात नहीं।

सुमंत्र ने रोकर कहा—महाराज दसरथ ने तो मुझे आप

लोगों को वापस ले आने का हुक्म दिया था। खाली रथ देखकर उनकी क्या दशा होगी ?

राम ने सुमंत्र को समझा-बुझाकर रुखसत किया। सुमंत्र रोते हुए अयोध्या लौटे। मगर वह शहर के क़रीब पहुँचे तो दिन बहुत बाक़ी था। उन्हें खौफ़ हुआ कि अगर इसी वक़्त अयोध्या चला जाऊँगा तो शहर के लोग हज़ारों सवाल पूछ-पूछकर परेशान कर देंगे। इसलिये वे शहर के बाहर रुके रहे। जब शाम हुई तो अयोध्या में दाखिल हुए।

इधर राजा दसरथ इस इंतजार में बैठे थे कि शायद सुमंत्र राम को लौटा लाये। उम्मीद का इतना सहारा बाक़ी था। कैकयी से नाराज़ होकर वे कौसल्या के महल में चले गये थे और बार बार पूछ रहे थे कि सुमंत्र अभी लौटा या नहीं। चिराग़ जल गया। अभी सुमंत्र नहीं आया। महाराज की बेक़रारी बढ़ने लगी। आख़िर सुमंत्र राजमहल में दाख़िल हुए। दसरथ उन्हें आते देखकर दौड़े और दरवाज़े पर आकर पूछा-राम कहाँ हैं ? क्या उन्हें वापस नहीं लाये ? सुमंत्र कुछ न बोल सके। पर उनका चेहरा देखकर महाराज की उम्मीद का आख़िरी तार भी टूट गया। वे वहीं ग़श खाकर गिर पड़े और 'हाय राम' 'हाय राम' कहते हुए दुनियाँ से रुख़सत हो गये। मरने से पहले उन्हें उस अंधे तपस्वी की याद आयी जिसके बेटे को आज से बहुत दिन पहले उन्होंने हलाक किया

था। वह जिस तरह लड़के के लिए तड़प-तड़प कर मर गया था, उसी तरह महाराज दसरथ भी लड़कों की जुदाई में तड़पकर परलोक सिधारे। उसकी बद-दुआ ने आज असर दिखलाया।

रनवास में मातम बर्पा हो गया। कौसल्या महाराज की लाश को गोद में लेकर बिलाप करने लगी। उसी वक्त कैकयी भी आ गयी। कौशल्या उसे देखते ही गुस्से से बोलीं, अब तो तुम्हारा कलेजा ठंडा हुआ! अब खुशियाँ मनाओ। अयोध्या के राज का सुख लूटो; यही चाहती थीं न? लो, मुराद बर आयी। अब कोई तुम्हारे राज में दखल देनेवाला नहीं रहा। मैं भी कुछ घड़ियों की मेहमान हूँ। लड़का और बहू पहले ही चले गये। अब स्वामी ने भी साथ छोड़ दिया। ज़िन्दगी में मेरे लिए क्या रखा है! पति के साथ सती हो जाऊँगी।

कैकयी सूरते-तस्वीर खड़ी रही। लौंडियों ने कौसल्या की गोद से महाराज की लाश अलग की और कौसल्या को दूसरी जगह ले जाकर तस्कीन देने लगीं। दरबार के अमीरों को ज्यों ही खबर मिली सब के सब घबराये हुए आये और रानियों को तस्कीन देने लगे। इसके बाद महाराज की लाश को तेल में डुबोया गया जिससे सड़ न जाये और भरत को बुलाने के लिए एक मोतबर क़ासिद रवाना किया गया। उनके सिवा अब क्रिया-कर्म कौन करता?

भरत की वापसी

जिस रोज़ महाराज दसरथ की वफ़ात हुई उसी रात को भरत ने कई डरावने ख़्वाब देखे। उन्हें बड़ी फ़िक्र पैदा हुई कि ऐसे बुरे ख़्वाब क्यों दिखायी दे रहे हैं। न जाने अयोध्या में लोग ख़ैरियत से हैं या नहीं। नाना से जाने की इजाज़त माँगी। पर उन्होंने दो चार दिन और रहने के लिए इसरार किया। आख़िर जल्दी क्या है? कश्मीर की ख़ूब सैर कर लो, तब जाना। अयोध्या में इस क़ुदरती दिल-कशी के सामान कहाँ मिलेंगे। मजबूर होकर भरत को रुकना पड़ा। उसके तीसरे दिन क़ासिद पहुँचा। उसे सख़्त ताकीद कर दी गयी थी कि भरत से अयोध्या के हालात का ज़िक्र न करना। इसलिए जब भरत ने कासिद से पूछा, क्यों भई? अयोध्या में सब ख़ैरियत है न? तो उसने कोई साफ़ जवाब न देकर तन्ज़ से कहा, 'जी हाँ, आप जिनकी ख़ैरियत पूछते हैं, वे ख़ैरियत से हैं।' कासिद भी दिल में भरत से बद-गुमान था।

भरतजी को क्या खबर कि क़ासिद इस एक जुमले में क्या कह गया। उन्होंने नाना और माँमू से इजाज़त ली, और उसी रोज़ शत्रुघ्न के साथ अयोध्या के लिए रवाना हुए। रथ के घोड़े हवा से बातें करनेवाले थे। तीसरे ही दिन वे

अयोध्या में दाखिल हुए। मगर यह शहर पर उदासी क्यों छायी हुई है? शहर वीरान-सा क्यों हो रहा है? गली-कूचों में खाक क्यों उड़ रही है? बाज़ार क्यों बंद हैं? रास्ते में जो भरत को देखता था, बिला उनसे कुछ बातचीत किये, बिला खैर-व-आफ़ियत पूछे या प्रणाम किये कतराकर निकल जाता था। उनके आगे बढ़ आने पर लोग आपस में सरगोशियाँ करने लगते थे। भरत की समझ में कुछ न आता था कि राज़ क्या है? कोई उनसे मुखातिब भी न होता था कि उससे कुछ पूछें। राजमहल तक पहुँचना उनके लिए मुश्किल हो गया। राजमहल पहुँचे तो उसकी हालत और भी अबतर थी। मालूम होता था उसकी जान निकल गयी है; सिर्फ़ लाश बाक़ी है। नहूसत मंडला रही थी। कई दिन से दरवाज़े पर झाड़ू तक न दी गयी थी। दो चार संतरी के चपरासी खड़े जम्हाइयाँ ले रहे थे। वे भी भरत को देखकर एक कोनें में दुबक गये, गोया उनकी सूरत भी नहीं देखना चाहते।

दरवाज़े पर पहुँचते ही भरत और शत्रुघ्न रथ से कूदकर अंदर दाखिल हुए। महाराज अपने कमरे में न थे। भरत ने समझा, ज़रूर कैकेयी माता के घर में होंगे। वे अक्सर कैकयी ही के महल में रहते थे। लपके हुए माता के पास गये। महाराज का वहाँ भी पता न था। कैकयी बेवाओं के से लिबास पहने खड़ी थी। भरत को देखते ही वे ख़ुशी से फूली

न समायीं। आकर भरत को गले से लगा लिया और बोली—जीते रहो बेटा, रास्ते में कोई तकलीफ़ तो न हुई?

भरत ने माता की तरफ़ तअज्जुब से देखकर कहा—जी नहीं, बड़े आराम से आया। महाराज कहाँ हैं? ज़रा उन्हें प्रणाम तो कर लूँ।

कैकयी ने ठंडी आह खींचकर कहा—बेटा! उनकी बात क्या पूछते हो, उन्हें परलोक सिधारे तो आज एक हफ़्ता हो गया। क्या तुमसे अभी तक किसीने नहीं कहा?

भरत के सर पर गोया ग़म का पहाड़ टूट पड़ा। सिर में चक्कर-सा आने लगा। वे खड़े न रह सके। ज़मीन पर बैठकर रोने लगे। जब ज़रा जी संभला तो बोले—उन्हें क्या हुआ था, माताजी? क्या बीमारी थी? हाय, मुझ बद-नसीब को उनके आखिरी दर्शन भी नसीब न हुए।

कैकयी ने सर झुकाकर कहा—बीमारी तो कोई नहीं थी, बेटा! राम, लक्ष्मण और सीता के बन-बास के सदमे से उनकी मौत हुई। राम पर तो वे जान देते थे।

भरत की रही सही जान भी नाख़ूनों में समा गयी। सिर पीटकर बोले—भाई रामचंद्र ने ऐसा कौनसा पाप किया था, माताजी, कि उनको बन-बास की सज़ा दी गयी? क्या उन्होंने किसी ब्राह्मण का ख़ून किया था, या किसी ग़ैर-औरत

पर बुरी निगाह डाली थी ? धर्म के अवतार रामचंद्र को देस-निकाला क्यों हुआ ?

कैकयी ने सारी कैफ़ियत तफ़सील के साथ बयान की और मंथरा को ख़ूब सराहा । जो कुछ हुआ इसी की मदद से हुआ । अगर इसकी मदद न होती तो मेरे किये कुछ न हो सकता और रामचंद्र का राज-तिलक हो जाता । फिर तुम और मैं कहीं के न रहते । ग़ुलामों की तरह ज़िंदगी बसर करनी पड़ती । इसीने मुझे राजा के दिये हुए दो बरदानों की याद दिलायी और मैंने दोनों बरदान पूरे करा लिये । पहला था, रामचंद्र का बन-बास ; वह तो पूरा हो गया । अकेले राम ही नहीं गये ; लक्ष्मण और सीता भी उनके साथ गये । दूसरा बरदान बाकी है । वह कल पूरा हो जायगा, तुम्हें गद्दी मिलेगी ।

कैकयी ने दिल में समझा था कि उसकी कारगुजारी की दास्तान सुनकर भरत उसका बहुत एहसान मानेंगे । मगर बात कुछ और ही हुई । भरत के तेवरों पर शिकन पड़ गया और आँखें ग़ुस्से से सुर्ख हो गयीं । कैकयी की तरफ नफरत आमेज निगाहों से देखकर बोले—माता ! तुमने मुझे दुनिया में कहीं मुँह दिखाने के लायक न रखा । तुमने जो काम मेरी भलाई के लिए किया, वह मेरे नाम पर हमेशा के लिए स्याह-दाग लगा देगा । दुनियां यही कहेगी कि इस मुआमले में भरत की जरूर साज़िश होगी । अब मेरी समझ में आया

कि क्यों अयोध्या के लोग मुझे देखकर मुह फेर लेते थे। यहाँ तक कि दरबानों ने भी मुझसे मुखातिब होना मुनासिब न समझा। क्या तुमने मुझे इतना सिफला समझ लिया कि मैं रामचंद्र का हक़ छीनकर ख़ुशी से राज करूँगा। रघुकुल में ऐसा कभी नहीं हुआ। इस खानदान का हमेशा से यही उसूल रहा है कि बड़ा लड़का गद्दी पर बैठे। क्या यह बात तुम्हें मालूम नहीं थी? हाय! तुमने रामचंद्र जैसे देवता-ए-सिफ़त आदमी को बन-बास दिया, जिसकी जूतियों का तस्मा खोलने के काबिल भी मैं नहीं। माता, मुझे तुम्हारी इज्ज़त करनी चाहिए। लेकिन जब तुम्हारी हरकतों को देखता हूँ तो बे-अख़्तियार सख्त अलफ़ाज़ मुँह से निकल आते हैं। तुमने इस खानदान को मलिया-मेट कर दिया। हरिश्चन्द्र और मांधाता के खानदान की इज्ज़त खाक में मिला दी। तुम्हीं ने मेरे सत्यवादी पिता की जान ली। तुम हत्यारिनी हो। यह राज-पाट तुम्हें मुबारक हो। भरत इसकी तरफ़ आँख उठाकर भी न देखेगा।

यह कहते हुए भरत रानी कौसल्या के पास गये और उनके चरणों पर सिर रख दिया। कौसल्या को क्या मालूम था कि इस वक़्त भरत कैकयी को कितना सख्तो-सुस्त कह आये हैं। बोलीं—तुम आ गये बेटा! लो, तुम्हारी माता की मुराद बर आयी। तुम उन्हें लेकर मज़े से राज करो। मुझे राम के पास पहुँचा दो। मैं अब यहाँ रहकर क्या करूंगा?

ये अल्फ़ाज भरत के सीने में तीर की तरह लगे। आह ! माता कौसल्या भी मेरी तरफ से बद-गुमान हैं। रोते हुए बोले—माताजी, मैं आपसे सच कहता हूँ कि यहाँ जो कुछ हुआ है उसका मुझे मुतलक इल्म न था। माता कैकयी ने जो कुछ किया उसका फल उनके आगे आयेगा। मैं उन्हें क्या कहूँ। मगर मैं इसका यकीन दिलाता हूँ कि मैं राज न करूँगा। राज रामचंद्र का है और वे ही इसके मालिक हैं। मैं तो उनका सेवक हूँ। मैं क्रिया-कर्म से फ़ारिग़ होते ही जाकर रामचंद्र को मना लाऊँगा। मुझे उम्मीद है कि वे मेरी दरख़्वास्त मान जायेंगे। मैंने पूर्व जन्म में न जाने ऐसे कौन से पाप किये थे कि यह कलंक मेरे माथे पर लगा। मुझसे ज़्यादा बदनसीब दुनियाँ में और कौन होगा, जिसके कारण पिताजी की जान गयी, रामचंद्र बन गये और मुल्क में जग-हँसाई हुई।

देवी कौशल्या के दिल से सारे शक़ूक दूर हो गये। उन्होंने भरत को सीने से लगा लिया और रोने लगीं।

मंथरा उस वक्त किसी काम से बाहर गयी हुई थी। उसे ज्यों ही मालूम हुआ कि भरत आये हैं, उसने सर से पाँव तक गहने पहने, एक रेशमी साड़ी जेरतन की और छम-छम करती, कूबड़ हिलाती, अपने हुस्न-खिदमात की दाद लेने के लिए आकर भरत के सामने खड़ी हो गयी। भरत ने तो

उसे देखकर मुँह फेर लिया। मगर शत्रुघ्न अपने गुस्से को न रोक सके। उन्होंने लपककर मंथरा के बाल पकड़ लिये और कई लात और घूँसे जमाये। मंथरा हाय-हाय करने लगी और महारानी कैकेयी की दुहाई देने लगी। आखिर भरत ने उसे शत्रुघ्न के हाथ से छुड़ाया और वहाँ से भगा दिया।

जब भरत महाराजा के क्रिया-कर्म से फ़ारिग़ हुए तो गुरु वसिष्ठ, शहर के उमराव और अह्ले-दरबार ने उन्हें गद्दी पर बैठाना चाहा। मगर भरत किसी तरह राजी न हुए। बोले—आप लोग ऐसा काम करने के लिए मुझे मजबूर न करें, जो मेरा लोक और परलोक दोनों मिट्टी में मिला देगा। भाई रामचंद्र के रहते यह ग़ैर-मुमकिन है कि मैं राज का ख़्याल दिल में भी लाऊँ। मैं उन्हें जाकर मना लाऊँगा और अगर वे न आयेंगे तो मैं भी घर से निकल जाऊँगा। यही मेरा आखिरी फ़ैसला है।

लोगों के दिल भरत की तरफ से साफ़ हो गये। सब उनकी नेक-नीयती की तारीफ़ करने लगे। यह बड़े बाप का सपूत बेटा है। भाई हो तो ऐसा हो। क्यों न हो, ऐसे नेक और धर्मात्मा लोग न होते तो दुनियाँ क़ायम कैसे रहती।

दूसरे दिन भरत अपनी तीनों माताओं को लेकर राम को मनाने चले। गुरु वसिष्ठ और शहर के मुअज़्ज़िज़ीन भी उनके साथ साथ चले।

चित्रकूट

राम, लक्ष्मण और सीता गंगा नदी पार करके पैदल चले जा रहे थे। अनजान रास्ता, दोनों तरफ घने जंगल, बस्ती का कहीं पता नहीं, इस तरह वे प्रयाग पहुँचे। प्रयाग में भारद्वाज मुनि का आश्रम था। तीनों आदमियों ने त्रिवेणी में स्नान करके भारद्वाज के आश्रम में क़याम किया और रात को उनके उपदेश सुनकर सुबह उनकी सलाह से चित्रकूट के लिए रवाना हो गये। कुछ दूर चलने के बाद जमुना नदी मिली। उस ज़माने में वह ख़ित्ता बहुत आबाद नहीं था। जमुना को पार करने के लिए कोई किश्ती न मिल सकी। अब क्या हो, आखिर लक्ष्मण को एक हिकमत सूझी। उन्होंने इधर-उधर से लकड़ी, शाखें जमा कीं और उसे छाल के रेशों से बांधकर एक तख़्ता-सा बना लिया। उस तख़्ते पर हरी-हरी पत्तियाँ बिछा दीं और उसे पानी में डाल दिया। उसपर तीनों आदमी बैठ गये। लक्ष्मण ने उस घनौती को खेकर दम के दम में जमुना नदी पार कर ली।

नदी के उस पार कोहिस्तानी सर-ज़मीन थी। पहाड़ियाँ हरी हरी झाड़ियों से लहरा रही थीं। दरख़्तों पर मोर, तोते वग़ैरह परिंद चहक रहे थे। हिरनों के ग़ोल वादियों में चरते नज़र आते थे। हवा इतनी पाकीज़ा और सेहत-बख़्श थी

कि रूह को ताज़गी हो रही थी। इस दिलकश मन्ज़र का लुत्फ उठाते तीनों आदमी चित्रकूट जा पहुँचे। वाल्मीकि ऋषि का आश्रम वहीं एक पहाड़ी पर था। तीनों आदमियों ने पहले उनके दर्शन करना मुनासिब समझकर उनके आश्रम का रुख किया वाल्मीकि ने उन्हें देखा तो बड़े तपाक से गले लगा लिया और रास्ते की ख़ैरो-आफियत पूछी। उन्होंने योग के बल से उनको चित्रकूट आने का सबब जान लिया था। बतलाने की ज़रूर न पड़ी। बोले—आप लोग ख़ूब आये; आपको देखकर बड़ी मुसर्रत हुई। आप लोगों पर जो कुछ गुज़री है, वह मुझे मालूम है। ज़िन्दगी ख़ुशी और रंज के इत्तफ़ाकात ही का नाम है। इन्सान को चाहिए कि सब्र से काम ले।

राम ने कहा—आशीर्वाद दीजिये कि हमारे बन-बास के दिन खैरियत से गुजरें।

वाल्मीकि ने जवाब दिया—राजकुमार, मेरे एक एक रोएँ से तुम्हारे लिए आशीर्वाद निकल रहा है। तुमने जिस त्याग से काम लिया है, उसकी मिसाल तारीख़ में कहीं नहीं मिलती। धन्य है वह माता, जिसने तुम जैसा सपूत बेटा पैदा किया। चित्रकूट तुम्हारे लिए बहुत अच्छी जगह है। हमारी कुटी में काफ़ी जगह है। हम सब यहाँ आराम से रहेंगे।

रामचंद्र को भी चित्रकूट बहुत पसंद आया। वहीं रहने का फ़ैसला किया। मगर यह मुनासिब न समझा कि ऋषि *वाल्मीकि के छोटे से आश्रम में रहें। उनके रहने से ज़रूर ऋषि को तकलीफ होगी, चाहे वह मुरव्वत के बाइस मुँह से कुछ न कहें। अलहदा एक कुटी बनाने की तजवीज़ हुई। लक्ष्मण को हुक्म मिलने की देर थी। जंगल से लकड़ी काट लाये और शाम तक एक ख़ूबसूरत आराम-देह कुटी तैयार कर दी। उसमें खिड़कियाँ भी थीं, दरवाज़ा भी था। ताक़ भी थे। सोने के अलग अलग कमरे भी थे। रामने यह कुटी देखी तो बहुत खुश हुए। गृह-प्रवेश के तौर पर देवताओं की पूजा की और कुटी में रहने लगे।

५

भरत और रामचंद्र

इधर भरत अयोध्या-वासियों के साथ राम को मनाने के लिए चले जा रहे थे। जब वह गंगा नदी के किनारे पहुँचे तो भील सरदार गुह को उनकी फ़ौज देखकर शुबहा हुआ कि शायद यह रामचंद्र पर हमला करने जा रहे हैं। फौरन अपने आदमियों को जमा करने लगा। मगर बाद को जब भरत का इरादा मालूम हुआ तो उनके सामने आया और अपने घर चलने की दावत दी। भरत ने कहा—जब रामचंद्र ने बस्ती के बाहर दरख्त के नीचे रात बसर की तो मैं बस्ती में कैसे जाऊँ ? बतलाओ, श्री रामचंद्र और सीताजी कहाँ सोये थे ? जब गुह ने उन्हें वह जगह दिखायी तो भरत बे-अख़्तियार रो पड़े। हाय, वह, जिन्हें महलों में नींद नहीं आती थी, आज ज़मीन पर दरख़्त के नीचे सो रहे हैं। यह दिनों का फेर है। मुझ बद-नसीब की बदौलत उन्हें ये सारी तकलीफ़ें हो रही हैं। इन घास के सख़्त टुकड़ों से नाज़ुक-बदन सीता का जिस्म छिल गया होगा। रामचंद्र को मच्छरों ने रात भर दिक किया होगा। नींद न आयी होगी। लक्ष्मण ने जंगली जानवरों के खौफ़ से सारी रात पहरा देकर काटी होगी और मैं अभी तक शाही-लिबास पहने हुए हूँ। मुझे हज़ार बार धिक्कार है।

यह कहकर भरत ने उसी वक्त़ शाही-लिबास उतार फेंका और फ़क़ीराना-लिबास पहन लिया। फिर उसी दरख़्त के नीचे उसी घास-फूस के बिछावन पर रात भर पड़े रहे। उस दिन से चौदह साल तक भरत ने फ़क़ीराना ज़िन्दगी बसर की।

दूसरे दिन भरत भारद्वाज मुनि के आश्रम में पहुँचे। वहाँ दर्याफ़्त करने पर मालूम हुआ कि रामचंद्र चित्रकूट की तरफ गये हैं। रात भर वहाँ ठहरकर भरत सवेरे चित्रकूट रवाना हो गये।

शाम का वक्त़ था। रामचंद्र और सीता एक चट्टान पर बैठे हुए ग़रूबे-आफताब का नज़ारा देख रहे थे और लक्ष्मण ज़रा दूर पर तीर और कमान लिए खड़े थे।

सीता ने दरख़्तों की तरफ़ देखकर कहा—ऐसा मालूम होता है कि इन पेड़ों ने सुनहरी चादर ओढ़ ली हो।

राम:—और पहाड़ियों की ऊदी शबनमी चादर कितनी ख़ूबसूरत मालूम होती है। क़ुदरत सोने का सामान कर रही है।

सीता:—नीचे की घाटियों ने स्याह चादर से मुँह ढाँक लिया।

राम:—और पस्नी को देखो, जैसे कोई नागिन लहराती हुई चली जाती हो।

सीता:—केतकी के फूलों से कैसी सुगंध आ रही है।

लक्ष्मण खड़े खड़े यकायक चौंककर बोले—भइया, वह सामने धूल कैसी उड़ रही है? सारा आसमान ग़ुबार-आलूदा हो गया।

राम:—कोई चरवाहा भेड़ों का गल्ला लिए चला जाता होगा।

लक्ष्मण:—नहीं भाई साहब! कोई फ़ौज है। घोड़े साफ नज़र आ रहे हैं। वह लो, रथ भी दिखाई देने लगे।

रामचंद्र:—शायद कोई राजकुमार शिकार खेलने निकला हो।

लक्ष्मण:—सब के सब इधर ही चले आते हैं।

यह कहकर लक्ष्मण एक ऊँचे दरख़्त पर चढ़ गये और भरत की फ़ौज को ग़ौर से देखने लगे। रामचंद्र ने पूछा—कुछ साफ नजर आता है?

लक्ष्मण:—जी हाँ, सब साफ नज़र आ रहा है। आप तीर-व-कमान लेकर तैयार हो जायें। मुझे ऐसा मालूम हो रहा है कि भरत फौज लेकर हमारे ऊपर हमला करने चले आ रहे हैं। इन शाखों के बीच से भरत के रथ की झंडी साफ नज़र आ रही है। खूब पहचानता हूँ, भरत ही का रथ है। वही सुरंग घोड़े हैं। उन्हें अयोध्या का राज पाकर अभी तस्कीन नहीं हुई। आज सारा क़जिया पाक कर दूँगा।

रामचंद्र:—नहीं लक्ष्मण, भरत पर शुबहा न करो। भरत

इतना खुद्ग़र्ज, इतना बेमुरव्वत नहीं है। मुझे यक़ीन है कि वह हमें वापस ले चलने आ रहा है। भरत ने हमारे साथ कभी बुराई नहीं की।

लक्ष्मण :-- उन्हें बुराई करने का मौका ही कब मिला, जो उन्होंने छोड़ दिया। आप अपने दिल की तरह औरों का दिल भी साफ समझते हैं। मगर मैं आपसे कहे देता हूँ कि भरत दग़ा करेंगे। वे यहाँ उसी नीयत से आ रहे हैं कि हम लोगों को मार कर अपना रास्ता हमेशा के लिए साफ कर लें।

रामचंद्र—मुझे जीते जी भरत की तरफ से ऐसा गुमान नहीं हो सकता। अगर तुम्हें भरत का गद्दी पर बैठना बुरा मालूम होता हो तो मैं उनसे कहकर तुम्हें राज दिला सकता हूँ। मुझे उम्मीद है कि भरत मेरा कहना न टालेंगे।

लक्ष्मण ने शर्मिन्दा होकर सर झुका लिया। रामचंद्र का यह ताना उन्हें बुरा मालूम हुआ। पर मुँह से कुछ नहीं बोले। उधर भरत को ज्यों ही ऋषियों की कुटियाँ नज़र आने लगीं, वह रथ से उतर पड़े और नंगे पाँव रामचंद्र से मिलने चले। शत्रुघ्न और सुमंत्र भी उनके साथ थे। कई कुटियों के बाद रामचंद्र की कुटी नज़र आयी। रामचंद्र कुटी के सामने एक पत्थर की चट्टान पर बैठे थे। उन्हें देखते ही भरत 'भइया,' 'भइया' कहते हुए बच्चों की तरह रोते दौड़े और रामचंद्र के पैरों पर गिर पड़े। रामचंद्र ने भरत को उठाकर

छाती से लगा लिया। शत्रुघ्न ने भी आगे बढ़कर रामचंद्र के कदमों पर सर झुकाया। चारों भाई गले मिले। इतने में कौसल्या, सुमित्रा, कैकयी सब पहुँच गयीं। रामचंद्र ने सब को प्रणाम किया। सीताजी ने भी सासों के पैरों को आंचल से छुआ। सासों ने उन्हें गले से लगाया। मगर किसी के मुँह से आवाज न निकलती थी। सबके गले भरे हुए थे और आँखों से आँसू जारी थे। बनबासियों का यह साधुओं का-सा भेष देखकर सबका कलेजा फटा जाता था। कैसी बेबसी है। कौसल्या सीता को देखकर बे-अख़्तियार रो पड़ीं। वह बहू जिसे वह पान की तरह फेरा करती थीं, भिखारिणी बनी हुई खड़ी है। समझाने लगीं—बेटी, अब भी मेरा कहा मानो, यहाँ तुम्हें बड़ी बड़ी तकलीफें होंगी। इतने ही दिनों में सूरत बदल गयी है। बिल्कुल पहचानी नहीं जातीं। मेरे साथ लौट चलो।

सीताजी ने कहा—अम्माजी ! जब मेरे स्वामी बन-बन की खाक छानते फिरेंगे तो मुझे अयोध्या में ही नहीं, स्वर्ग में भी सुख न मिलेगा। औरत का धर्म पुरुष के साथ रहकर उसके दुख-सुख में शरीक होना है। पुरुष को दुख में छोड़कर जो औरत आराम की ख्वाहिश करती है, वह अपने फर्ज से मुँह मोड़ती है। पानी के बगैर नदी की जो हालत होती है, वही हालत शौहर के बग़ैर औरत की होती है।

कौसल्या को सीता की बातों से ख़ुशी भी हुई और रंज भी हुआ। रंज तो यह हुआ कि यह नाज़-व-नेमत में पली हुई लड़की यों विपत में ज़िंदगी के दिन काट रही है। खुशी यह हुई कि उसके ख़्यालात इतने ऊँचे और पाकीज़ा हैं। बोलीं—धन्य हो बेटी, इसी को अस्मत कहते हैं। यही औरत का धर्म है। ईश्वर तुम्हें सुखी रखे और दूसरी औरतों को भी तुम्हारे रास्ते पर चलने की तौफ़िक़ दे। ऐसी ही देवियाँ इन्सान के लिए माय-नाज़ होती हैं। उन्हीं के नाम पर लोग इज़्ज़त से सर झुकाते हैं। उन्हीं के जस घर-घर गाये जाते हैं।

चारों भाई जब गले मिल चुके तो रामचंद्र ने भरत से पूछा—कहो भइया, तुम कश्मीर से कब आये? पिताजी तो—ख़ैरियत से हैं! तुम उनको छोड़कर नाहक चले आये। वह अकेले बहुत घबरा रहे होंगे।

भरत की आँखों से टप-टप आँसू गिरने लगे। भर्राई हुई आवाज में बोले—भाई साहब, पिताजी तो अब इस संसार में नहीं हैं। जिस दिन सुमंत्र रथ लेकर वापस आये उसी रात को वे परलोक सिधारे। मरते वक़्त आप ही का नाम उनकी जबान पर था।

यह पुर-मलाल खबर सुनते ही रामचंद्र पछाड़ खाकर गिर पड़े। जब ज़रा होश आया तो रोने लगे। रोते रोते

हिचकियाँ बंध गयीं। हाय! पिताजी का आखिरी दीदार भी नसीब नहीं हुआ। अब रामचंद्र को मालूम हुआ कि महाराजा दसरथ को उनसे कितनी मुहब्बत थी! उनकी जुदाई में प्राण त्याग दिये। बोले—यह मेरी बद-नसीबी है कि आख़िरी वक़्त उनके दर्शन न कर सका। ज़िन्दगी भर इसका अफ़सोस रहेगा। अब हम उनकी सबसे बड़ी यही सेवा कर सकते हैं कि अपने कामों से उनकी आत्मा को ख़ुश करें। महाराज अपनी प्रजा को कितना प्यार करते थे। तुम भी प्रजा की परवरिश करते रहना। फौज के ख़ुश रहने ही पर राज की हस्ती क़ायम रहती है। तुम भी सिपाहियों को ख़ुश रखना। उनकी तनख़्वाह बराबर ठीक वक़्त पर देते रहना। इंसाफ के मुआमिले में किसी के साथ जरा भी रू-रिआयत न करना। हर एक काम में मुशीरों से जरूर सलाह लेना और उनकी सलाह पर अमल करना। ग़रीबों को अमीरों के ज़ुल्म से बचाना। किसानों के साथ हरगिज़ सख़्ती न करना। जराअत की आब-पाशी के लिए कुएँ, नहरें, ताल बनवाना। लड़कों की तालीम की तरफ़ से ग़ाफिल मत होना और सरकारी अहलकारों की सख़्ती से निगरानी करते रहना, वरना ये लोग रिआया को तबाह कर देंगे।

भरत ने कहा, भाई साहब! मैं ये बातें क्या जानूँ! मैं तो आपकी ख़िदमत में इसीलिए हाज़िर हुआ हूँ कि आपको

अयोध्या ले चलूँ, अब तो हमारे पिता भी आप ही हैं। आप हमें जो हुक्म देंगे, हम उसे बजा लायेंगे। हमारी आपसे यह इल्तिजा है। इसे क़बूल कीजिये। जब से आप आये हैं, अयोध्या में वह रौनक ही नहीं रही। चारों तरफ़ स्यापा-सा छाया रहता है। लोग आपको याद कर-करके रोया करते हैं। अब तक मैं सबको यही तस्कीन देता रहा हूँ कि रामचंद्र जल्द वापस आयेंगे। अगर आप न लौटेंगे तो राज में कुहराम मच जायेगा और सारा इल्जाम और कलंक मेरे सिर पर रखा जायेगा।

रामचंद्र ने जवाब दिया—भइया, जिन वादों को पूरा करने के लिए पिताजी ने अपनी जान तक दे दी, उन्हें पूरा करना मेरा फ़र्ज़ है। उन्हें अपना क़ौल अपनी जान से भी ज़्यादा प्यारा था। उस हुक्म की तामील मैं न करूँ तो दुनियाँ में कौन-सा मुँह दिखाऊँगा। तुम्हें भी उनका हुक्म मानकर राज करना चाहिये। मैं चौदह बरस गुजरने के बाद ही अयोध्या में क़दम रखूँगा।

भरत ने बहुत आरज़ू-मिन्नत की। गुरु वसिष्ठ और मुअज़्ज़िज आदमियों ने रामचंद्र को बहुत समझाया। मगर वह अयोध्या चलने पर किसी तरह राज़ी न हुए। तब भरत ने रोकर कहा—भैया, अगर आपका यही फैसला है तो मजबूर होकर हमको भी मानना पड़ेगा। मगर आप मुझे अपनी

खड़ाऊँ दे दीजिये। आज से यह खड़ाऊँ ही राजसिंहासन पर बिराजेगी। हम सब आपके चाकर होंगे। जब तक आप लौटकर न आयेंगे, अभागा भरत भी आप ही की तरह फ़क़ीरों की सी ज़िन्दगी बसर करेगा। लेकिन चौदह साल गुज़र जाने पर भी आप न आयें तो मैं आग में जल मरूँगा।

यह कहकर भरत ने रामचंद्र की खड़ाऊँ को सिर पर रखा, और रुख़सत हुए। रामचंद्र ने कौसल्या और सुमित्रा के पैरों पर सर रखा और उन्हें बहुत दिलासा देकर रुख़सत किया। कैकयी शरम से सिर झुकाये खड़ी थी। रामचंद्र जब उसके पैरों पर झुके तो वह फूट-फूटकर रोने लगी। रामचंद्र की शराफ़त और पाकदिल ने साबित कर दिया कि राम पर उसका शुबहा बे-बुनियाद था।

जब सब लोग नंदीग्राम में पहुँचे तो भरत ने वज़ीरों से कहा—आप लोग अयोध्या जायें। मैं चौदह साल तक इसी तरह इस गाँव में रहूँगा। राजा रामचंद्र के सिंहासन पर बैठकर अपनी आक़बत न बिगाड़ूँगा। जब आपको मुझसे किसी मुआमले में सलाह व मशविरा करने की ज़रूरत हो मेरे पास चले आइयेगा।

भरत की यह शराफ़त और फ़य्याज़ी देखकर लोग हैरत में आ गये। ऐसा कौन होगा, जो मिलते हुए राज को यों ठुकराकर अलग हो जाये। लोगों ने बहुत चाहा कि भरत

अयोध्या चलकर राज करें, लेकिन भरत ने वहाँ जाने से माफ़ इन्कार कर दिया। एक शायर ने सच कहा है कि भरत जैसा शरीफ़ बेटा पैदा करके कैकयी ने अपनी सारी बुराइयों पर ख़ाक डाल दी।

आखिर सब रानियाँ, शत्रुघ्न और अयोध्या के बाशिंदे भरत को वहीं छोड़कर अयोध्या चले आये। शत्रुघ्न वज़ीरों की मदद से राज-काज संभालते थे और भरत नंदीग्राम में बैठे हुए उनकी निगरानी करते रहते थे।

इस तरह चौदह साल गुज़र गये।



వన, కిష్కింధా, సుందరకాండలు.

वन,

किष्किंधा

और

सुन्दर कांड

(मुख्तसर)

बन कांड

भरत के चले आने के बाद रामचंद्र ने भी चित्रकूट से चले जाने का इरादा कर लिया। तीनों आदमी घूमते हुए अत्रि मुनि के पास पहुँचे। यहाँ कई महीने रहकर दंडकवन की तरफ़ चले। दंडकवन में विराध नाम का एक बड़ा ज़ालिम राजा था। उसको क़त्ल करके तीनों आदमी और आगे बढ़े।

कई दिनों के बाद तीनों आदमी पंचवटी जा पहुँचे। पंचवटी में लंका के राजा रावण की एक बहन शूर्पणखा रहती थी।

एक दिन रामचंद्र और सीता दरख़्त के नीचे बैठे हुए बातें कर रहे थे कि शूर्पणखा उधर से होकर गुज़री। ऐसे ख़ूबसूरत इन्सान उसने कभी न देखे थे। वह थी तो काली-कलूटी, निहायत बदसूरत, मगर अपने को परी समझती

थी। रामचंद्र को देखकर वह फूली न समायी। बहुत दिनों के बाद उसे अपने जोड़ का एक जवान दिखायी दिया। क़रीब आकर बोली—तुम जैसे आदमी तो मैं ने कभी देखे नहीं। मैं तुम्हारे ही जैसा शौहर ढूँढ़ रही थी। अब मुझसे शादी कर लो। तुम्हारी ख़ुशनसीबी है कि मुझ जैसी नाज़नीं तुमसे शादी करना चाहती है।

रामचंद्र ने जवाब दिया—बेशक, यह मेरी ख़ुशनसीबी है। मगर मुशकिल यह है कि मेरी शादी हो चुकी है और यह औरत मेरी बीबी है। मेरा छोटा भाई, जो वह सामने बैठा हुआ है, यहाँ अकेला है। चाहे तो तुमसे शादी कर सकता है। तुम उसके पास जाओ।

शूर्पणखा लक्ष्मण के पास गयी और बोली—तुम्हारे भाई रामचंद्र की निगाह मुझपर पड़ गयी तो वह मुझपर आशिक हो गये। पर मैंने ऐसे आदमी से शादी करना पसंद न किया, जिसकी बीबी मौजूद है। तुम्हारी ख़ुशनसीबी है कि मेरा दिल तुम्हारे ऊपर आ गया। तुम मुझसे शादी कर लो।

लक्ष्मण ने मुस्कुराकर कहा—हाँ, इसमें तो शक नहीं। तुम रानी बनने के लायक़ हो। जाकर भाई साहब ही से कहो। वे ही तुमसे शादी करेंगे।

शूर्पणखा फिर राम के पास गयी। जब उसे यक़ीन

हो गया कि यहाँ मेरी तमन्ना पूरी नहीं होगी तो वह मुँह बना-बनाकर गालियाँ बकने लगी।

उसकी यह शरारत देखकर लक्ष्मण को गुस्सा आ गया। उन्होंने शूर्पणखा की नाक काट ली और कानों का भी सफ़ाया कर दिया।

अब क्या था! उनके भाई खर और दूषण यह हाल सुनकर गुस्से से पागल हो गये। दम के दम में उनको इस शरारत की सज़ा देने चले। मगर वे दोनों मारे गये। अकेली शूर्पणखा अपने भाइयों का मातम करने को बच रही।

शूर्पणखा के दो भाई तो मारे गये। मगर अभी दो और बाकी थे। उनमें से एक लंका देश का राजा रावण था। वह भी राक्षस था। शूर्पणखा रोती पीटती उसके पास पहुँची और छाती पीटने और आप-बीती सुनाने लगी।

राम और लक्ष्मण का नाम सुनकर रावण के होश उड़ गये।

मगर उसने बहन को तशफ़्फ़ी दी और उसी वक्त मारीच नामी राक्षस को बुलाकर कहा—अब अपनी कुछ कारगुज़ारी दिखाओ। रामचंद्र और लक्ष्मण पंचवटी में आये हुए हैं। उन्होंने शूर्पणखा की नाक काट ली है और राक्षसों को तबाह कर दिया है। बतलाओ, मेरी कुछ मदद करोगे?

मारीच को रामचंद्र से पुरानी अदावत थी। बोला—

ऐसा चकमा दूँ कि एक क़तरा ख़ून भी न गिरे और दोनों भाई मारे जायें। इस तरह दोनों सीता को हर लाने की तैयारियाँ करने लगे।

राम और सीता कुटी के सामने बैठे बातें कर रहे थे कि यकायक एक निहायत ख़ूबसूरत हिरन सामने कुलेलें करता हुआ दिखायी दिया। वह इतना ख़ूबसूरत, इतना ख़ुश-रंग था कि सीता उसे देखकर रीझ गयीं। और उन्होंने रामचन्द्र से कहा—इसको पकड़कर मुझे दीजिये।

रामचंद्र तीरो-कमान लेकर चले। हिरन भुलावे देता हुआ रामचन्द्र को बहुत दूर ले गया। मारीच भागा तो जाता था, पर लक्ष्मण के न आने से उसकी चाल कारगर होती नज़र न आती थी। जब तक सीताजी अकेली न होंगी, रावण उन्हें हर कैसे सकेगा? यह सोचकर उसने कई बार ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर कहा—"हाय लक्ष्मण, हाय सीता"।

रामचंद्र का कलेजा धड़क उठा। समझ गये; यह नकली हिरन है। तब ऐसा निशाना मारा कि पहले ही वार में हिरन गिर पड़ा। उधर सीताजी ने जो "हाय लक्ष्मण, हाय सीता" की आवाज़ सुनी तो उनका ख़ून सर्द हो गया। आँखों में अंधेरा छा गया। रोकर लक्ष्मण से बोली—मुझे ऐसा ख़ौफ़ होता है कि यह स्वामी ही की आवाज़ है। ज़रूर उन

पर कोई बड़ी आफ़त आयी है। वरना तुम्हें क्यों पुकारते! लपककर देखो क्या माजरा है।

ऐसी हालत में सीता को तन्हा छोड़कर जाना लक्ष्मण कब गवारा कर सकते! बोले—भाई साहब की तरफ़ से आप बे-फ़िक्र रहें। जिसने बड़े बड़े राक्षसों का सफ़ाया कर दिया, उसे किसका खौफ़ हो सकता है? आपको तन्हा छोड़कर मैं न जाऊँगा।

सीता ने गुस्से से कहा—क्या मुझे कोई शेर या भेड़िया खाये जाता है! ज़रूर स्वामी पर कोई मुसीबत आयी है और तुम हाथ पर हाथ धरे बैठे हो। क्या यही भाई की मुहब्बत है, जिसपर तुम्हें इतना गरूर है।

यह ताना तीर की तरह लक्ष्मण के दिल में चुभ गया। उन्होंने तीरो-कमान उठा लिया और रंजीदा होकर चल दिये।

रावण ने जब देखा कि मैदान खाली है तो उसने हाथ में कमंडल लिया और 'नारायण-नारायण' करता हुआ सीताजी की कुटी के दरवाज़े पर आकर खड़ा हो गया।

सीताजी ने पत्तल में कन्द, मूल और कुछ फल रखकर रावण के सामने लायीं। रावण ने पत्तल लेने के लिए हाथ बढ़ाया। मगर पत्तल के बदले सीताजी को ही गोद में उठाकर वह अपने रथ की तरफ़ दौड़ा और एक मिनिट में उन्हें रथ पर बिठाकर घोड़ों को हवा कर दिया।

जब सीता की बातों का रावण पर कुछ असर न हुआ तो सीता "हाय राम! हाय राम!" कहकर ज़ोर ज़ोर से रोने लगीं। इत्तफ़ाक़ से उसी नवाह में जटायु नाम का एक साधु रहता था। वह रामचन्द्र की सच्ची अक़ीदत रखता था। उसे फ़ौरन शुबहा हुआ कि कोई राक्षस सीता को लिये जाता है। हथियार लेकर रथ के सामने आकर खड़ा हो गया और ललकारकर बोला—तू कौन है? सीताजी को कहाँ लिये जाता है? फौरन रथ रोक ले, वरना अभी वह लठ मारूँगा कि भेजा निकल पड़ेगा।

रावण इस वक़्त लड़ना तो न चाहता था। मगर जब जटायु रास्ते में खड़ा हो गया तो उसे मजबूर होकर रथ रोकना पड़ा। घोड़ों की बाग खींच ली और बोला—अपना भला चाहता है तो रास्ते से हट जा। रावण बड़ा ताक़तवार था। जटायु कमज़ोर था, मगर जान पर खेल गया। वह बेहोश होकर गिर पड़ा और रावण ने फिर घोड़े बढ़ा दिये।

थोड़ी देर बाद दोनों भाई अपनी कुटी पर आये। देखा तो सीता का कहीं पता नहीं। होश उड़ गये। इधर-उधर चारों तरफ दौड़-दौड़कर सीता को ढूँढ़ने लगे। रामचंद्र की हालत पागलों की सी हो गयी। इस तरह बेक़रारी के आलम में वे बढ़ते चले जाते थे। यकायक एक दरख़्त के नीचे जटायु को पड़े कराहते देखकर रामचन्द्र रुक गये।

जटायु रामचन्द्र को देखकर बोला—आप आ गये ! बस, इतनी ही तमन्ना थी। वरना अबतक दम निकल गया होता। सीताजी को लंका का राक्षस राजा रावण हर ले गया है। उसी के साथ लड़ने में मेरी यह हालत हो गयी। आह! बहुत दर्द हो रहा है, अब चला।

राम ने जटायु का सर अपनी गोद में रख लिया। जटायु की जान निकल गयी। यही दोस्ती का फ़र्ज़ है ; यही इन्सानियत का फ़र्ज़ है।

रामचन्द्र ने वेद-मंत्रों का पाठ करते हुए उसकी दाह-क्रिया की। फिर वहाँ से आगे बढ़े। चलते चलते सूरज डूब गया। इसी फ़िक्र में थे कि सामने दरख़्तों के कुंज में एक झोंपड़ी नज़र आयी। दोनों आदमी उस झोंपड़ी की तरफ चले। यह झोंपड़ी एक भीलनी की थी, जिसका नाम शबरी था। उसे जो मालूम हुआ कि ये दोनों भाई अयोध्या के राजा दशरथ के बेटे हैं, तो मारे खुशी के फूली न समायी। वह जंगल में गयी और ताज़े फल तोड़ लायी। कुछ जंगली बेर थे, कुछ करोंदे, कुछ शरीफ़े। शबरी ख़ूब रसीले, पके हुए फल ही चुन रही थी। इस खौफ से कि कोई खट्टा न निकल जाय, वह अकसर फलों को कुतरकर उनका ज़ायका ले लेती थी। भीलिनी क्या जानती थी कि जूठी चीज़ खाने के लायक नहीं रहती !

इस वक़्त रंज के मारे रामचंद्र का जी कुछ खाने को न चाहता था। पर शबरी की ख़ातिर मन्ज़ूर थी। जब फल खाने शुरू किये तो बाज बाज़ कुतरे हुए नज़र आये। मगर दोनों भाइयों ने उन फलों को और भी रग़बत के साथ खाया। गो वे जूठे थे, मगर उनमें प्रेम का रस भरा हुआ था।

उधर रावण रथ को भगाता हुआ जब पंपासर पहाड़ के करीब पहुँचा तो सीताजी ने देखा कि पहाड़ पर कई बंदरों की सी सूरतवाले आदमी बैठे हुए हैं। सीताजी ने ख़्याल किया कि रामचन्द्र मुझे ढूँढ़ते हुए ज़रूर इधर आयेंगे, इसीलिए उन्होंने अपने कई ज़ेवर और चादर रथ के नीचे डाल दी।

लंका पहुँचकर रावण ने सीताजी को अशोकवन में ठहरा दिया और कई राक्षसिन औरतों को इसलिए तैनात किया कि वह सीता को सतायें और हर तरह की तकलीफ़ पहुँचाकर उन्हें उसकी तरफ़ मुख़ातिब होने के लिए मजबूर करें। मौका पाकर उसकी तारीफ़ से भी सीताजी को मायल करें। लेकिन राक्षसिन औरतें थोड़े ही दिनों में सीता जी की नेकी और शराफ़त देखकर उन्हें तकलीफ़ पहुँचाने के बदले हर तरह का आराम देने लगीं।



किष्किंधा कांड

राम और लक्ष्मण सीता की तलाश में कोहो-बयाबान की खाक छानते चले जाते थे कि सामने 'ऋष्यमूक' पहाड़ नज़र आया। उसकी चोटी पर सुग्रीव अपने चंद वफ़ादार साथियों के साथ रहा करता था। वह शख़्स किष्किंधा शहर के राजा बाली का छोटा भाई था। बाली ने एक बात पर नाराज़ होकर उसे राज से निकाल दिया था और उसकी बीबी तारा को उससे छीन लिया था। सुग्रीव भागकर इस पहाड़ पर चला आया था। उसने राम और लक्ष्मण को तीर और कमान लिये गुज़रते देखा तो रूह फ़ना हो गयी। हनुमान से बोला—भाई, मुझे तो इन दोनों आदमियों से डर लगता है। बाली ने इन्हें मुझे मारने के लिए भेजा है। अब बतलाओ, कहाँ जाकर छिपूँ?

हनुमान सुग्रीव का सच्चा रफ़ीक़ था। उसने एक ब्राह्मण का भेष बनाया और रामचन्द्र के पास जाकर बोले—आप लोग यहाँ कहाँ से आ रहे हैं? मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि आप लोग परदेशी हैं। और शायद आपका कोई साथी खो गया है।

रामचन्द्र ने कहा—हाँ देवता जी, आपका ख़्याल दुरुस्त है। किस्मत के मारे अयोध्या का राज छोड़कर यहाँ जंगलों की खाक छान रहे हैं। इसपर नयी मुसीबत यह पड़ी कि कोई मेरी सीता को भी उठा ले गया। देखें, अभी कहाँ-कहाँ ठोकरें खानी पड़ती हैं।

हनुमान ने हमदर्दाना अंदाज़ से कहा—महाराज! घबराने की कोई बात नहीं है। मेरे साथ पहाड़ पर चलिये। वहाँ राजा सुग्रीव रहते हैं। बड़े ही नेक और मिलनसार हैं। अगर उनसे आपकी दोस्ती हो गयी तो फिर बड़ी आसानी से आपका काम निकल जायेगा।

राम ने लक्ष्मण से कहा—मुझे तो यह आदमी दिल का साफ़ और शरीफ़ मालूम होता है। कौन जाने सुग्रीव से ही हमारा काम निकले। चलो, ज़रा सुग्रीव से भी मिल लें।

दोनों भाई हनुमान के साथ पहाड़ पर पहुँचे। सुग्रीव ने दौड़कर उनका इस्तक़बाल किया और लाकर अपने बराबर सिंहासन पर बिठाया। फिर बातें होने लगीं। अब सुग्रीव

को उन ज़ेवरों की याद आयी, जो सीताजी ने रथ पर से नीचे फेंके थे। उसने उन ज़ेवरों को मंगवाकर रामचंद्र के सामने रख दिया।

ज़ेवरों को देखकर रामचंद्र की आँखों से आँसू गिरने लगे। मारे ग़म के इन गहनों को देख न सके। मुँह फेरकर लक्ष्मण से कहा—भइया, ज़रा देखो तो ये तुम्हारी भाभी के ज़ेवर हैं?

लक्ष्मण ने कहा—भाई साहब, उस गले के हार और हाथों के कंगन की निस्बत तो मैं कुछ अर्ज़ नहीं कर सकता। क्योंकि मैंने कभी भाभी के चेहरे की तरफ़ देखने की जुरअत नहीं की; हाँ, पाँव के ये बिछुए और पाज़ेब भाभी ही के हैं।

सुग्रीव बोला—तब तो इसमें शक नहीं कि दक्खिन की तरफ़ ही सीताजी का पता लगेगा। आप जितनी जल्द मुझे राज दिला दें उतनी ही जल्द मैं आदमियों को उधर भेजने का इन्तज़ाम करूँ। मगर यह समझ लीजिये कि मेरा भाई बाली निहायत ज़ोरावर आदमी है और लड़ाई का फ़न भी ख़ूब जानता है। मुझे यह इतमीनान कैसे होगा कि आप उस पर फ़तह पा सकेंगे? वह एक तीर से तीन दरख़्तों को एक ही साथ छेद डालता है।

यह सुनकर रामचंद्र ने तीर को कमान पर चढ़ाकर

छोड़ा तो वह सातों दरख़्तों को जो कि पहाड़ के नीचे क़तार में थे, पार करता हुआ फिर तरकश में आ गया। रामचंद्र का यह कमाल देखकर सुग्रीव को यक़ीन हो गया कि ये बाली को मार सकेंगे।

दूसरे दिन सुग्रीव ने जाकर बाली को ललकारा। दोनों मैदान में आकर लड़ने लगे। बाली ने ज़रा देर में सुग्रीव को दे पटका और उसकी छाती पर सवार होकर चाहता था कि उसका सर काट ले कि यकायक किसी तरफ़ से एक ऐसा तीर आकर उसके सीने में लगा कि वह फ़ौरन नीचे गिर पड़ा।

बाली को मुहल्लिक-ज़ख़्म लगा था। बाली की जान निकल गयी। सुग्रीव किष्किंधा पुरी का राजा हुआ और अंगद वली-अंहद बनाया गया। इसके बाद सीताजी की तलाश करने का इन्तज़ाम करने लगा। मुअत्तबिर और आजमूदा-कार आदमियों को चुन-चुनकर मुल्क के हर एक हिस्से में भेजना शुरू किया। हनुमान उन आदमियों में सबसे बहादुर और तजुर्बेकार थे। उन्हें उसने दक्खिन की तरफ़ भेजा। हनुमान की मदद के लिए अंगद, जामवंत, नील, नल वग़ैरह बहादुरों को भी तैनात किया।

रामचंद्र ने अपनी अंगूठी निकालकर हनुमान को दे दी और बोले—अगर सीता से तुम्हारी मुलाक़ात हो तो उन्हें समझाकर कहना कि राम और लक्ष्मण उन्हें बहुत जल्द

छुड़ाने आयेंगे। जिस तरह इतने दिन काटे हैं, थोड़े दिन और सब्र करें। हनुमान अंगूठी लेकर अपने रफ़ीक़ों के साथ चले। एक महीने के क़रीब गुज़र गया। मगर अभी तक सीताजी की कुछ खबर ही नहीं।

एक दिन ये मुसीबत के मारे बैठे सोच रहे थे कि किधर जायें कि उन्हें एक बूढ़ा फ़क़ीर आता हुआ दिखायी दिया। उस फ़क़ीर का नाम संपाती था। सबने दौड़कर उसे घेर लिया और पूछने लगे—क्यों बाबा, तुमने कहीं रानी सीता को देखा है?

संपाती बोला—हाँ भाई, सीता को लंका का राजा रावण अपने रथ पर उठा ले गया है।

यह सुनकर हनुमानजी समुंदर की तरफ़ मर्दाना-क़दम उठाते हुए चले।



సుందరకాండ

सुन्दर कांड

रासकुमारी से लंका तक तैरकर जाना आसान काम न था। मगर वीर हनुमान ने हिम्मत न हारी। शाम होते होते वे उस पार जा पहुँचे। देखा कि लंका का शहर एक पहाड़ की चोटी पर बसा हुआ है। पहाड़ों में तो वे पैदा ही हुए थे। पहरेदारों की आँख बचाकर फ़ौरन एक दरख़्त पर चढ़ गये। और पत्तों में छिपे बैठे रहे। जब आधी रात हो गयी और चारों तरफ़ सन्नाटा छा गया, रावण भी अपने महल में आराम करने चला गया तो वह आहिस्ते से एक शाख़ को पकड़ कर महल के अंदर कूद पड़े।

महल के अंदर की चमक-दमक देखकर हनुमान की आँखों में चकाचौंध आ गयी। हनुमान ने दबे पाँव महलों में

घूमना शुरू किया। कोई गोशा ऐसा न बचा जिसे उन्होंने न देखा हो। पर सीता जी का कहीं निशान नहीं। जब सवेरा होने लगा और कौए बोलने लगे तो वे उसी दरख़्त की शाख़ से बाहर निकल आये।

उन्होंने दो दिन से कुछ खाया न था। भूख भी लगी हुई थी। बाग़ के सिवा और मुफ़्त के फल कहाँ मिलते। यही सोचते चले जाते थे कि कुछ दूर पर एक घना बाग़ दिखायी दिया। अशोक के बड़े-बड़े दरख़्त हरे-हरे ख़ूबसूरत पत्तों से लदे हुए थे। हनुमान ने उसी बाग़ में भूख मिटाने और दिन काटने का फ़ैसला किया। बाग़ में पहुँचते ही एक दरख़्त पर चढ़कर फल खाने लगे।

यकायक कई औरतों की आवाज़ें सुनाई देने लगीं। हनुमान ने उधर निगाह दौड़ायी तो देखा कि एक निहायत हसीन औरत मैले-कुचैले कपड़े पहने, सर के बाल खोले उदास बैठी ज़मीन की तरफ़ ताक रही है। और कई राक्षसिन औरतें उसके करीब बैठी हुई उसे समझा रही हैं। हनुमान उस हसीना को देखकर समझ गये कि ये ही सीताजी हैं।

सब जब वहाँ से चली गयीं और सीताजी अकेली रह गयीं तो हनुमानजी ने ऊपर से रामचंद्र की अंगूठी उनके सामने गिरा दी। सीताजी ने अंगूठी उठाकर देखी तो रामचंद्र की थी। रंज और हैरत से उनका कलेजा धड़कने

लगा। वह अंगूठी को हाथ में लिये इसी सोच में बैठी हुई थीं कि हनुमान दरख़्त से उतरकर उनके सामने आये और उनके पैरों पर सर झुका दिया।

और हाथ जोड़कर कहा—माताजी, मैं श्री रामचंद्र ही के पास से आ रहा हूँ। यह अंगूठी उन्हीं ने मुझे दी थी। अब ज्यों ही मैं पहुँचकर उन्हें आपकी खबर दूँगा, वह फ़ौरन लंका पर हमला करने की तैयारी करेंगे।

सीताजी को हनुमान ने बहुत तसल्ली दी और चलने को तैयार हुए। मगर उसी वक्त़ ख़्याल आया कि जिस तरह सीताजी के इतमीनान के लिए रामचंद्र की अंगूठी लाया था, उसी तरह रामचंद्र की तशफ़्फ़ी के लिए सीताजी की भी कोई निशानी ले जाना चाहिए। बोले—माताजी, अगर आप मुनासिब समझें तो अपनी कोई निशानी दीजिये जिससे रामचंद्र को यक़ीन आ जाय कि मैंने आपके दर्शन पाये हैं।

सीताजी ने अपने सिर की बेनी उतारकर दे दी। हनुमान ने उसे कमर में बाँध लिया और सीताजी को प्रणाम करके रुख़सत हुए।

इस अशोक के बाग़ से चलते चलते हनुमान के जी में आया कि जरा इन राक्षसों की बहादुरी का इम्तहान भी करता चलूँ। यह सोचकर उन्होंने बाग़ के दरख़्तों को उखाड़ना शुरू किया। कुछ दरख़्तों की शाखें तोड़ डालीं और फल

तो इतने तोड़कर गिरा दिये कि उनका फ़र्श-सा बिछ गया। कई आदमियों को जान से मार डाला, तब बाहर से और कितने ही सिपाही आकर हनुमान को पकड़ने लगे। मगर आपने उन्हें भी मार भगाया। राजा रावण के पास खबर पहुँची। रावण ने अपने लड़के अक्षयकुमार को हनुमान को गिरफ़्तार कर लाने के लिए भेजा।

हनुमान ताल ठोंककर अक्षयकुमार पर झपटे और उसकी टांग पकड़कर इतनी ज़ोर से पटका कि वह वहीं ठंडा हो गया। और सब आदमी हुर्र हो गये।

मेघनाद निहायत दिलेर, ताक़तवर और लड़ाई के फ़न में होशियार था। तीर कमान हाथ में लेकर अशोक वाटिका में पहुँचा। हनुमान ताक़त में मेघनाद से कम न थे। बराबर का मुक़ाबला था। मगर उस वक़्त उससे लड़ना मस्लहत के खिलाफ़ था। मेघनाद के सामने ताल ठोंककर खड़े तो हुए, पर उसे अपने ऊपर जान-बूझकर ग़ालिब आ जाने दिया। मेघनाद ने समझा, मैंने इसे दबा लिया। फ़ौरन हनुमान को रस्सियों से जकड़ दिया और मूँछों पर ताव देता हुआ रावण के सामने आकर बोला—महाराज, यह लीजिये, आपका क़ैदी हाज़िर है।

क़रीब था कि रस्सियों में जकड़े हुए हनुमान की गर्दन पर उसकी तलवार गिरे कि रावण के भाई विभीषण ने खड़े होकर कहा—भाई साहब! पहले इससे पूछिये कि यह

कौन है, और यहाँ किसलिए आया है? मुमकिन है कि ब्राह्मण हो, तो हमें ब्रह्महत्या का पाप लग जाये।

यह सुनकर कि यह रामचंद्र का एलची है और सीताजी का सुराग़ लगाने के लिए आया है, रावण का ख़ून खौलने लगा। उसने फिर तलवार उठायी: मगर विभीषण ने फिर उसे समझाया। विभीषण बड़ा ख़ुदा-तरस, सच्चा, बाईमान आदमी था।

रावण सोचने लगा, इसे ऐसी कौन-सी सज़ा दी जाय कि इसकी जान तो न निकले: फिर यह ख़ूब ज़लील और रुसवा हो। सोचते सोचते उसे एक अनोखी दिल्लगी सूझी। इसे बंदर बनाकर उसकी दुम में आग लगा दी जाय और इसका नाच देखा जाय। अजीब-व-ग़रीब तमाशा होगा। फ़ौरन हुक्म दिया कि इस आदमी का मुँह रंग दो। इसके बदन पर भूरे भूरे रोएँ लगा दो और एक लंबी दुम लगाकर अच्छा, खासा लंगूर बना दो। उस दुम में लत्ते बांधकर तेल में भिगा दो और उसमें आग लगाकर छोड़ दो।

हनुमान अपनी ज़िल्लत और हँसी पर दिल में ख़ूब कुढ़ रहे थे। इससे तो कहीं अच्छा होता, अगर ज़ालिम ने मार डाला होता। दिल में कहा, इस ज़िल्लत का अगर बदला न लिया तो कुछ न किया और वह भी इसी वक़्त। ऐसा तमाशा दिखाऊँ कि उम्र भर न भूले। सारे शहर की होली हो जाय।

जब दुम में आग लग गयी तो वे एक दरख़्त पर चढ़ गये। शाख़ से कूदकर वे रनवास में पहुँच गये और एक लम्हे में सारा राजमहल जलने लगा। सब लोग छतों पर थे। कोई रोकनेवाला न था। हनुमान जिधर से अपनी आतिशीन दुम लिये निकल जाते थे उधर ही शोले भड़कने लगते थे।

राजमहल में आग लगाकर हनुमान बस्ती की तरफ़ झुके। छतों से छतें मिली हुई थीं। एक घर से दूसरे घर में कूद जाना मुश्किल न था। घंटे भर में सारा शहर आग के परदे में ढँक गया। चारों तरफ कुहराम मच गया। इत्तफाक से इसी वक़्त ज़ोर की हवा चलने गयी। आग और भी भड़क उठी।

शहर की होली बनाकर हनुमान समुद्र की तरफ भागे। और पानी में कूदकर दुम की आग बुझायी। उन्होंने लंका-वासियों को सचमुच अजीबो-ग़रीब तमाशा दिखा दिया।

हनुमान ने रातों-रात समुंदर को पार किया और अपने साथियों से जा मिले। उन्हें देखते ही सबके सब ख़ुशी से उछलने लगे। दौड़-दौड़कर उनसे गले मिले। और सब किष्किन्धा को रवाना हुए। जब सब लोग सुग्रीव से गले मिल चुके तो हनुमान ने लंका की सारी दास्तान कह सुनायी। सुग्रीव ख़ुशी से फूला न समाया। उसी वक़्त उन लोगों को साथ लेकर रामचंद्र के पास पहुँचा। हनुमान ने सीताजी की बेनी रामचंद्र के हाथ में रख दी।

रामचंद्र ने इस बेनी को देखा तो बे-अख़्तियार आँखों से आँसू जारी हो गये। उसे बार-बार चूमा और आँखों से लगाया।

थोड़ी देर तक कुछ सोचने के बाद रामचंद्र ने सुग्रीव से कहा—अब हमला करने में देर न करनी चाहिए। तुम अपनी फ़ौज को कब तक तैयार करोगे?

सुग्रीव ने कहा—महाराज! मेरी फ़ौज तो पहले ही से तैयार है। सिर्फ़ आपके हुक्म की देर है।"

हनुमान के चले आने के बाद राक्षसों को बड़ी फ़िक्र हुई। उन्होंने सोचा, जिस फ़ौज का एक सिपाही इतना ताक़तवर और बहादुर है, उस फ़ौज का सरदार कितना बहादुर होगा।

दूसरे दिन शहर के ख़ास ख़ास आदमी रावण की ख़िदमत में हाज़िर हुए। और अर्ज़ की—महाराज आप सीताजी को रामचंद्र के पास पहुँचा दें और मुल्क को इस आनेवाली आफ़त से बचा लें। रावण का ख़्याल था कि रिआया का काम है, राजा का हुक्म मानना, न कि उसके कामों पर एतराज़ करना। जिस शख़्स ने मेरी बहन की आबरू ख़ाक में मिलायी, उससे इसका बदला न लूँ! ऐसा कभी नहीं हो सकता।

फटकार सुनकर सब लोग ख़ामोश हो गये। सभी रावण के ग़ुस्से से डरते थे। मगर विभीषण रिआया का दोस्त था और हक़-बात कहने में उसकी ज़बान कभी न रुकती थी।

रावण ने जब देखा कि उसका भाई भी रिआया की

तरफ़ से वकालत कर रहा है तो और भी जामे से बाहर होकर बोला—विभीषण, तू पूजा करनेवाला, पोथी-पुराण का कीड़ा है। निकल जा मेरे राज से। इसी वक़्त निकल जा। मैं तुझ जैसे बाग़ी और दग़ाबाज़ का मुँह नहीं देखना चाहता। तू मेरा भाई नहीं; मेरा दुश्मन है।

विभीषण ने उठकर कहा—महाराज, आप मेरे बड़े भाई हैं, इसलिए मैंने आपको समझाने की जुरअत की थी। उसकी आपने मुझे सज़ा दी। आपका हुक्म सर आँखों पर। मैं जाता हूँ।

विभीषण यहाँ से ज़लील होकर सुग्रीव की फ़ौज में पहुँचा और सुग्रीव से अपना सारा हाल कहा। सुग्रीव ने रामचंद्र को उसके आने की ख़बर दी।

रामचंद्र ने विभीषण को बहुत तशफ़्फ़ी दी और वादा किया कि रावण को मारकर लंका का राज तुम्हें दूँगा। उसी वक़्त विभीषण का राज-तिलक भी कर दिया। विभीषण ने भी हर-हालत में रामचंद्र की मदद करने का पक्का वादा किया।

दूसरे दिन से लंका पर चढ़ाई करने की तैयारियाँ शुरू हो गयीं और फ़ौज समुंद्र के किनारे आकर समुंद्र को उबूर करने की तदबीर सोचने लगी। आख़िर यह फ़ैसला हुआ कि एक पुल तामीर किया जाय। नल और नील बड़े होशियार इंजीनियर थे। उन्होंने पुल बनाना शुरू किया।

లంకా కాండ

लंका कांड

रावण के दरबार में अंगद

रामचंद्र ने समुद्र को पार करके लंका का मुहासरा कर लिया। क़िले के चारों दरवाज़ों पर चार बड़े-बड़े सरदारों को खड़ा किया। सुग्रीव को सारी फ़ौज का सिपहसालार बनाया। आप और लक्ष्मण सुग्रीव के साथ हो गये। तेज दौड़नेवालों को चुन-चुनकर खबरें लाने और ले जाने के लिए मुक़र्रर किया। जिस सर्दार को कोई हुक्म देना होता, उन्हीं आदमियों की मारफ़त कहला भेजते थे। शहर के चारों दरवाज़े बंद हो गये। राक्षसों को बाहर निकलना मुहाल हो गया। रसद का बाहर के देहातों से आना बंद हो गया। लोग अंदर भूखों मरने लगे।

रावण ने सोचा—अब तो रामचंद्र की फ़ौज लंका पर

चढ़ आयी। मालूम नहीं लड़ाई का अंजाम क्या हो। एक बार सीता को राज़ी करने की आख़िरी कोशिश कर लेनी चाहिए। अब की उसने धमकी के बजाय फ़रेब से काम लेने का फ़ैसला किया। एक होशियार कारीगर से रामचंद्र की शबीह से मिलता-जुलता एक सिर बनवाया। वैसे ही तीर और कमान बनवाये और उन चीज़ों को सीताजी के सामने ले जाकर बोला — यह लो तुम्हारे उस शौहर का सिर है, जिसपर तुम जान देती थीं। मेरी फ़ौज के एक आदमी ने उन्हें लड़ाई में मार डाला है और उनका सर काट लाया है। रावण की ताक़त का अंदाज़ा तुम इसी से कर सकती हो। अब मेरा कहना मानो, मेरी रानी बन जाओ।

सीता धोखे में आ गयीं। सर पीट-पीटकर रोने लगीं। दुनियाँ उनकी आँखों में तारीक हो गयी। इत्तफ़ाक़ से विभीषण की बीबी सरमा उस वक़्त अशोक-वाटिका में मौजूद थी। सीताजी की गिरिया-व-ज़ारी सुनकर वह दौड़ी हुई आयी और पूछने लगी—क्या माजरा है? रावणने देखा, अब परदा-फ़ाश हुआ चाहता है तो फ़ौरन वह बनावटी सिर और तीर-कमान लेकर वहाँ से चल दिया। सीताजी ने रो-रोकर सरमा से सानिहा बयान किया। सरमा हँसकर बोली—बहन, यह सब रावण की दग़ाबाज़ी है। वह सिर बनावटी होगा, तुम्हें फ़रेब देने के लिए रावण ने यह चाल चली है। रामचंद्र तो

क़िले का मुहासरा किये हुए हैं। लंका में तहलका मचा हुआ है। कोई क़िले के बाहर नहीं निकल सकता। यहाँ किसमें इतनी ताक़त है जो रामचंद्र से लड़ सके। उनके एक मामूली क़ासिद ने तो लंकावालों के छक्के छुड़ा दिये। भला, उन्हें कौन मार सकता है? सरमा की बातों से सीताजी को तस्कीन हुई। समझ गयीं, यह रावण की शरारत थी।

उधर क़िले का मुहासरा करके रामचंद्र ने सुग्रीव से कहा—एक बार फिर रावण को समझाने की कोशिश कर लेनी चाहिए। अगर समझाने से मान जाय तो ख़ून-खराबी क्यों हो! सलाह हुई कि अंगद को क़ासिद बनाकर भेजा जाय। अंगद ने बड़ी ख़ुशी से यह बात मंज़ूर कर ली। रावण अपने सलाहकारों के साथ दरबार में बैठा था कि अंगद जा धमके और बुलंद आवाज़ से बोले—ऐ राक्षसों के राजा रावण! मैं राजा रामचंद्र का क़ासिद हूँ। मेरा नाम अंगद है। राजा बाली का लड़का हूँ। मुझे राजा रामचंद्र ने यह कहने के लिए भेजा है कि या तो आज ही सीताजी को वापस कर दो या क़िले के बाहर मैदान में निकलकर जंग करो।

रावण ग़रूर से अकड़कर बोला—जाकर अपने छोकरे राजा से कह दे कि रावण उनसे लड़ने को तैयार

बैठा हुआ है। सीता अब यहाँ से नहीं जा सकती। उसका ख़्याल छोड़ दे। वरना उनके हक़ में अच्छा न होगा। राक्षसों की फ़ौज जिस वक़्त मैदान में आयेगी, सुग्रीव और हनुमान दुम दबाकर भागते नज़र आयेंगे। राक्षसों से अभी रामचंद्र को साबिक़ा नहीं पड़ा है। हमने इन्द्र तक से अपना लोहा मनवा लिया है। ये पहाड़ी चूहे किस शुमारो-क़तार में हैं।

अंगद—जिन लोगों को तुम पहाड़ी चूहे कहते हो वे तुम्हारी एक एक फ़ौज के लिए अकेले काफ़ी हैं। अगर उनकी ताक़त का इम्तहान लेना चाहते हो तो उन्हीं पहाड़ी चूहों में से एक अदना चूहा तुम्हारे दरबार में खड़ा है, उसका इम्तहान कर लो। अफ़सोस है कि इस वक़्त क़ासिद हूँ और क़ासिद हथियार से काम नहीं ले सकता। वरना इसी वक़्त दिखा देता कि पहाड़ी चूहे किस ग़ज़ब के होते हैं। है इस दरबार में कोई योद्धा, जो मेरे पैर को ज़मीन से हटा दे ? जिसे दावा हो, निकल आये।

अंगद की यह ललकार सुनकर कई सूरमा उठे और अंगद का पैर उठाने के लिए एड़ी चोटी का ज़ोर लगाया। मगर जौ भर भी न हटा सके। अपना-सा मुँह लेकर अपनी अपनी जगह पर जा बैठे। तब रावण ख़ुद सिंहासन से उठा और अंगद के पैर पर झुककर उठाना चाहता था कि अंगद

ने पैर खींच लिया और बोले—अगर पैरों पर सिर झुकाना है तो रामचंद्र के पैरों पर सिर झुकाओ। मेरे पैर छूने से तुम्हें कुछ फ़ायदा न होगा। रावण शर्मिन्दा होकर अपनी जगह पर जा बैठा।

अंगद अपना पैग़ाम सुना ही चुके थे। जब उन्हें मालूम हो गया कि रावण पर किसी के समझाने का असर न होगा तो वह रामचंद्र के पास लौट आये और सारी कैफ़ियत बयान कर दी।



మేఘనాదుడు

मेघनाद

आखिर दोनों फ़ौजों में जंग छिड़ गया। दिन भर तलवारें चलती रहीं। रात को भी लड़नेवालों ने दम न लिया। लाशों के अंबार लग गये। ख़ून की नदियाँ बह गयीं। रामचंद्र की फ़ौज इतनी बड़ी बहादुरी से लड़ी कि राक्षसों की हिम्मत टूट गयी। रावण जिस फ़ौज को भेजता, वही घंटे दो घंटे में जान लेकर भागती, यहाँ तक कि उसने झल्लाकर अपने लड़के मेघनाद को भेजा। मेघनाद बड़ा बहादुर था। उसे इंद्रजीत का लक़ब मिला था। राक्षसों को उस पर नाज़ था।

मेघनाद के मैदान में आते ही लड़ाई का रंग बदल गया। कहाँ तो राक्षस लोग मैदान से भाग रहे थे। कहाँ अब रामचंद्र की फ़ौज में भगदड़ पड़ गयी। मेघनाद ने तीरों की ऐसी बारिश की कि आस्मान स्याह हो गया। लक्ष्मण ने अपनी फ़ौज को दबते देखा तो तीरो-कमान लेकर मैदान में निकल आये। मेघनाद लक्ष्मण को देखकर और भी जोश से लड़ने लगा और ललकार कर बोला, 'आज तुम्हारी मौत मेरे हाथों लिखी है। तुमसे लड़ने का बहुत दिन से इरादा था। आज वह पूरा हो गया।' लक्ष्मण ने जवाब दिया, 'हार और जीत ईश्वर के हाथ है। डींग मारना जवाँमर्दी का काम नहीं, मगर, शायद तुम भी ज़िंदा घर न लौटोगे।'

मेघनाद ने तैश में आकर तरह-तरह के हरबे काम में लाने शुरू किये। कभी कोई ज़हरीला तीर चला देता, कभी गदा लेकर पिल पड़ता। मगर लक्ष्मण भी कुछ कम बहादुर न थे। वे उसके सारे हमलों को अपने तीरों से रद्द कर देते थे। यहाँ तक कि उन्होंने उससे रथ, रथवान, घोड़े—सबको तीरों से छेद डाला। मेघनाद पैदल लड़ने लगा। अब उसे अपनी जान बचाना मुश्किल हो गया। चाहता था कि ज़रा दम लेने की मुहलत मिले तो दूसरा रथ लाऊँ, मगर लक्ष्मण इतनी तेज़ी से तीर चलाते थे कि उसे हिलने की भी मुहलत न मिलती थी। आख़िर उसने ग़ज़ब-नाक होकर शक्ति-बाण चला दिया। यह बाण इतना क़ातिल था कि उसका ज़ख़्मी आनन-फ़ानन में मर जाता था। यह तीर लगते ही लक्ष्मण बेहोश होकर ज़मीन पर गिर पड़े। मेघनाद ख़ुशी से मतवाला हो गया। उसी वक़्त भागा हुआ रावण के पास गया और बोला—दो भाइयों में से एक को तो मैंने आज ठंडा कर दिया। ऐसा शक्ति-बाण मारा है कि बच नहीं सकता। कल दूसरे भाई को भी मार लूँगा। बस, लड़ाई का ख़ातमा हो जायेगा। रावण ने बेटे को छाती से लगा लिया।

इधर रामचंद्र की फ़ौज में कुहराम मच गया। हनुमान ने बेहोश लक्ष्मण को गोद में उठाया और रामचंद्र के पास लाये। राम ने लक्ष्मण की यह कैफ़ियत देखी तो बे-अख़्त्यार

आखों से आँसू जारी हो गये। रो रोकर कहने लगे, 'हाय लक्ष्मण, तुम मुझे छोड़कर कहाँ चले गये। हाय! मुझे क्या मालूम था कि तुम यों मेरा साथ छोड़ दोगे, नहीं तो मैं पिता के हुक्म को रद कर देता, कभी बन की तरफ़ क़दम न उठाता। अब मैं कौन मुँह लेकर अयोध्या जाऊँगा। औरत के पीछे भाई की जान गँवाकर किसको मुँह दिखाऊँगा। औरत तो फिर भी मिल सकती है, पर भाई कहाँ मिलेगा। हाय! मैंने हमेशा के लिए माथे पर कलंक लगा लिया।' जामवंत अभी तक कहीं लड़ रहा था। राम का विलाप सुनकर दौड़ा हुआ आया और लक्ष्मण को ग़ौर से देखने लगा। बूढ़ा, तजुर्बेकार आदमी था। कितनी ही लड़ाइयाँ देख चुका था; बोला, महाराज! आप इतने निराश क्यों होते हैं। लक्ष्मणजी अभी ज़िन्दा हैं। सिर्फ़ बेहोश हो गये हैं। ज़हर सारे बदन में दौड़ गया है। अगर कोई होशियार बैद मिल जाये तो अभी ज़हर उतर जाये और यह उठ बैठें। बैद की तलाश करनी चाहिए। विभीषण ने कहा, शहर में सुखेन नाम का एक बैद रहता है। ज़हर का इलाज करने में वह बहुत माहिर है। उसे किसी तरह बुलाना चाहिए। हनुमान ने कहा, मैं जाता हूँ, उसे लिए आता हूँ। विभीषण से सुखेन के मकान का पता पूछकर भेष बदलकर शहर में जा पहुँचे और सुखेन से यह हाल कहा। सुखेन ने कहा, 'भाई, मैं बैद हूँ। रावण के

दरबार से मेरी परवरिश होती है। उसे मालूम हो जायेगा कि मैंने लक्ष्मण का इलाज किया है, तो मुझे जिन्दा न छोड़ेगा।

हनुमान ने कहा—'आपको ईश्वर ने जो कमाल बख़्शा है, उससे हर-एक को फ़ायदा पहुँचाना आपका फ़र्ज़ है। ख़ौफ़ के बाइस फ़र्ज़ से मुँह मोड़ना आप जैसे बुज़ुर्ग के लिए शायाँ नहीं।'

सुखेन लाजवाब हो गया। उसी वक़्त हनुमान के साथ चल खड़ा हुआ। बुढ़ापे के बाइस वह तेज न चल सकता था। इसलिए हनुमान ने उसे गोद में उठा लिया और भागे हुए अपनी फ़ौज में आ पहुँचे। सुखेन ने लक्ष्मण की नब्ज़ देखी, जिस्म देखा और बोला, 'अभी बचने की उम्मीद है। संजीवनी बूटी मिल जाये तो बच सकते हैं। मगर सूरज निकलने के पहले बूटी यहाँ आ जानी चाहिए; वरना जान न बचेगी।'

जामवंत ने पूछा, 'संजीवनी बूटी मिलती कहाँ है?'

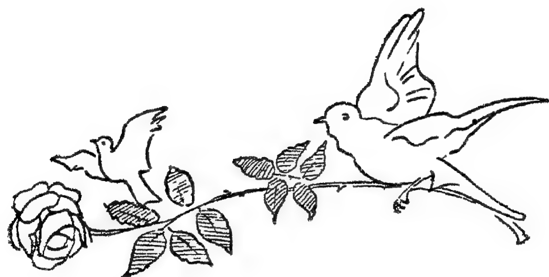
सुखेन ने कहा, 'उत्तर की तरफ़ एक पहाड़ है। वहीं यह बूटी मिलेगी।'

बारह घंटे के अंदर वहाँ जाना और बूटी तलाश करके लाना आसान काम न था। सब एक दूसरे का मुँह ताकते थे। किसी की हिम्मत न होती थी कि जाने को तैयार हो। आख़िर

रामचंद्र ने हनुमान से कहा—'दोस्त! यह मुश्किल तुम्हीं आसान कर सकते हो। तुम्हारे सिवा दूसरा कोई नज़र नहीं आता।' हनुमान को हुक्म मिलने की देर थी। सुखेन से बूटी का पता पूछा और आंधी की तरह दौड़े। घंटों में वे उस पहाड़ पर जा पहुँचे। मगर रात के वक्त बूटी की पहचान न हो सकी। बहुत ही घासपात जमी हुई थी। हनुमान ने उन सबों को उखाड़ लिया और उल्टे क़दम लौटे।

इधर सब लोग बैठे हनुमान का इंतज़ार कर रहे थे। एक-एक पल का शुमार किया जा रहा था। अब हनुमान फ़लाँ मुकाम पर पहुँचे होंगे, अब वहाँ से चले होंगे। इस तरह अंदाज करते करते तड़का हो गया। पर हनुमान का कहीं पता नहीं। रामचंद्र घबराने लगे। एक घंटे में हनुमान न आ गये तो ग़ज़ब हो जाएगा। कई आदमी उन्हें देखने के लिए छूटे। कई आदमी दरख़्तों पर चढ़कर उत्तर की तरफ़ नज़रें दौड़ाने लगे। पर हनुमान का कहीं निशान नहीं। अब सिर्फ़ आध घंटे की और मीआद है। इधर लक्ष्मण की हालत पल-पल पर खराब होती जाती थी। रामचंद्र मायूस होकर फिर रोने लगे कि यकायक अंगद ने आकर कहा, 'महराज! हनुमान दौड़ा चला आ रहा है। बस आया ही चाहता है।' रामचंद्र का चेहरा चमक उठा। वह बे-क़रार होकर ख़ुद हनुमान की तरफ़ दौड़े और उसे छाती से लगा लिया। हनुमान ने घास-

पात का एक ढेर सुखेन के सामने रख दिया। सुखेन ने उसमें से संजीवनी बूटी निकाली और फ़ौरन लक्ष्मण के ज़ख़्म पर उसका लेप किया। बूटी ने अक्सीर का काम किया। देखते देखते ज़ख़्म भरने लगा। लक्ष्मण की आँखें खुल गयीं। एक घंटे में वे उठ बैठे और दोपहर तक तो बातें करने लगे। फ़ौज में ख़ुशी के नारे बुलंद हुए।



कुंभकर्ण

रावण ने जब सुना कि लक्ष्मण चंगे हो गये तो मेघनाद से बोला, 'लक्ष्मण तो शक्ति-बाण से भी न मरा। अब क्या तदबीर की जाय। मैंने तो समझा था, एक का काम तमाम हो गया; अब एक ही और बाक़ी है। मगर फिर दोनों के दोनों संभल गये।'

मेघनाद ने कहा, 'मुझे भी बड़ा तअज्जुब हो रहा है कि लक्ष्मण कैसे बच गया। शक्ति-बाण का ज़ख़्म तो क़ातिल होता है। बारह घंटे के अंदर आदमी मर जाता है। ज़रूर उन लोगों को संजीवनी बूटी मिल गयी। ख़ैर, फिर समझूँगा।' जाते कहाँ हैं? आज ही दोनों को ढेर कर देता, लेकिन कल का थका हुआ हूँ। मैदान में न जा सकूँगा। आज चचा कुंभकर्ण को भेज दीजिये।

कुंभकर्ण रावण का भाई था। ऐसे डील-डौल का दूसरा सूरमा राक्षसों में न था। उसे देखकर हाथी का गुमान होता था। बहादुर ऐसा था कि कोई उसका मुक़ाबला करने की जुरअत न कर सकता था। मगर जितना ही बहादुर था उतना ही काहिल और ऐशपसंद था। रात-दिन शराब के नशे में मस्त पड़ा रहता। लंका पर हमला हो गया। हज़ारों आदमी मारे जा चुके। पर उसे अब तक कुछ ख़बर न थी।

कि कहाँ क्या हो रहा है। रावण उसके पास पहुँचा तो देखा कि वह इस वक्त भी बेहोश पड़ा हुआ है। शराब की बोतलें सामने पड़ी हुई थीं। रावण ने उसका शाना पकड़कर जोर से हिलाया; तब उसकी आँखें खुलीं। बोला, 'कैसे मज़े की नींद ले रहा था। आपने नाहक़ जगा दिया।'

रावण ने कहा, 'भइया, अब सोने का मौक़ा नहीं रहा। रामचंद्र ने लंका का मुहासरा कर लिया। हमारे कितने ही आदमी काम आ चुके। मेघनाद कल लड़ा था, पर आज थका हुआ है। अब तुम्हारे सिवा और कोई दूसरा मददगार नहीं नज़र आता।'

यह सुनते ही कुंभकर्ण संभलकर उठ बैठा। हथियार बांधे, और मैदान की तरफ़ चल खड़ा हुआ। उसे मैदान में देखकर हनुमान, अंगद, सुग्रीव सब के सब दहल उठे। आदमी क्या! खासा देव था। सिपाही तो उसकी खौफ़नाक सूरत ही देखकर भाग खड़े हुए। कितने ही सरदारों को उसने ज़ख्मी कर दिया। आखिर रामचंद्र खुद उससे लड़ने को तैयार हुए। उन्हें देखते ही कुंभकर्ण ने भाले का वार किया। मगर रामचंद्र ने वार खाली दिया और दो तीर इतनी फुर्ती से चलाये कि उसके दोनों हाथ कट गये। तीसरा तीर उसके सीने में लगा। काम तमाम हो गया।

राक्षस फ़ौज ने अपने सरदार को गिरते देखा तो भाग खड़ी हुई। इधर रामचंद्र की फ़ौज में खुशी मनायी जाने लगी।

रावण को जब यह ख़बर मिली तो सर पीटकर रोने लगा। कुंभकर्ण से उसे बड़ी उम्मीद थी। वह खाक में मिल गयी। भाई के ग़म में बड़ी देर तक मातम करता रहा।



మేఘనాధుని (ఇంద్రజిత్తు) వధ

मेघनाद का मारा जाना

दूसरे दिन मेघनाद बड़े सज-व-धज से मैदान में आया। उसने दोनों भाइयों को मार गिराने का पक्का इरादा कर लिया था। सारी रात अपनी देवी की पूजा करता रहा था। उसे अपनी ताक़त और जवाँमर्दी का बड़ा ग़रूर था। रावण की सारी उम्मीदें आज ही की लड़ाई पर क़ायम थीं। लंका में पहले ही से फ़तह का जशन मनाने की तैयारियाँ होने लगीं। मेघनाद ने मैदान में आकर डंके पर चोट डलवाई तो विभीषण ने उसके सामने जाकर कहा, 'मेघनाद, मैं जानता हूँ कि ताक़त और हिम्मत में तुम अपना सानी नहीं रखते। मगर हक़ की हमेशा जीत हुई है और होगी। मेरा कहना मानो, चलकर रामचंद्रजी से सुलह कर लो। वे तुम्हें मुआफ़ कर देंगे।'

मेघनाद ने ग़ुस्से से आँखें निकालकर कहा, 'चचा साहब! तुम्हें शरम नहीं आती कि मुझे समझाने आये हो। बग़ावत से बढ़कर दुनियाँ में दूसरा गुनाह नहीं। जो आदमी मुद्दई से मिलकर अपने घर और अपने मालिक की बद-ख़्वाही करता है, उसकी सूरत देखना भी गुनाह है। आप मेरे सामने से चले जाइये।'

विभीषण तो इधर शर्मिंदा होकर चला गया। उधर लक्ष्मण ने सामने आकर मेघनाद को दावते-जंग दी। लक्ष्मण को देखकर मेघनाद बोला, 'अभी दो चार रोज़ ज़ख़्म की मरहम-पट्टी और करवा लेते, कहीं आज ज़ख़्म फिर न ताज़ा हो जाय। जाकर अपने बड़े भाई को भेज दो।'

लक्ष्मण ने कामन पर तीर चढ़ाकर कहा, 'ऐसे ऐसे ज़ख़्मों की जवाँमर्द लोग बिलकुल परवाह नहीं करते। आज एक बार फिर हमारी और तुम्हारी हो जाय। ज़रा देख लो कि शेर ज़ख़्मी होकर कितना ख़ूख़्वार हो जाता है। बड़े भाई साहब का मुक़ाबिला तो तुम्हारे बाप ही से होगा।

दोनों दिलावरों ने तीर चलाना शुरू कर दिया। धन धन धन की आवाज़ें आने लगीं। मेघनाद पहले तो ग़ालिब आया। लक्ष्मण को उसके वारों का काटना मुश्किल पड़ गया। मगर ज्यों ज्यों वक़्त गुज़रता गया, लक्ष्मण संभलते गये और मेघनाद कमज़ोर पड़ता गया। यहाँ तक कि लक्ष्मण उसपर ग़ालिब आ गये और एक तीर उसकी गर्दन पर ऐसा मारा कि उसका सिर कटकर अलग जा गिरा।

मेघनाद के गिरते ही राक्षसों के हाथ-पाँव फूल गये। भगदड़ पड़ गयी। रावण ने यह ख़बर सुनी तो उसके मुँह से ठंडी आह निकल आयी। आँखों में अँधेरा छा गया। इन्तक़ाम के जोश से पागल हो गया। राम और लक्ष्मण तो

उसके क़ाबू से बाहर थे। सीताजी को क़तल कर डालने के लिए तैयार हो गया। तलवार लेकर दौड़ता हुआ अशोक-बाटिका में पहुँचा। सीताजी ने उसके हाथ में नंगी तलवार देखी तो सहम उठीं। मगर रावण का वज़ीर बड़ा दाना था। वह भी उसके पीछे पीछे दौड़ता चला गया था। रावण को एक बेकस औरत की जान लेने पर आमादा देखकर बोला, 'महाराज, गुस्ताख़ी मुआफ़ हो, औरत पर हाथ उठाना आप की शान के ख़िलाफ़ है। आप वेदों के आलिम हैं। हिम्मत और दिलावरी में आज दुनियाँ में आपका हमसर नहीं। अपने रुतबे और इल्म का ख़्याल कीजिये और इस फ़ेल से बाज़ आइये।' इन बातों ने रावण का गुस्सा ठंडा कर दिया। तलवार म्यान में रख ली और लौट आया।

उसी वक़्त मेघनाद की अस्मत-माअब बीवी सुलोचना ने आकर कहा, 'महाराज, अब मैं जिन्दा रहकर क्या करूँगी? मेरे पति का सर मंगवा दीजिये। उसे लेकर सती हो जाऊंगी।'

रावण ने आंखों में आँसू भरकर कहा—'बेटी, तेरे पति का सर तुझे उसी वक़्त मिलेगा, जब मैं दोनों भाइयों का सर काट लूंगा। सब्र कर।'

सुलोचना अपनी सास मंदोदरी के पास आयी।

दोनों सास-बहुएँ गले मिलकर ख़ूब रोयीं। तब सुलोचना बोली, 'माताजी, मैं अब अनाथ हो गयी। मेरे पति का सर मंगवा दीजिये तो सती हो जाऊँगी। अब जीकर क्या करूँगी। जहाँ स्वामी हैं, वहीं मैं भी जाऊँगी। यह जुदाई अब मुझसे नहीं सही जाती।'

मंदोदरी ने बहू को प्यार करके कहा, 'बेटी, अगर तुमने यही फ़ैसला किया है तो मुबारक हो। मेघनाद का सर और तो किसी तरह न मिलेगा। तुम ख़ुद जाकर मांगो तो अलबत्ता मिल सकता है। रामचंद्र बड़े नेक आदमी हैं। मुझे यक़ीन है कि वे तुम्हारे सवाल को रद न करेंगे।'

सुलोचना उसी वक़्त राज-महल से निकलकर रामचंद्र की फ़ौज में आयी और रामचंद्र के रू-ब-रू जाकर बोली, 'महाराज, एक अनाथ विधवा आपसे एक दरख़्वास्त करने आयी है। उसे क़बूल कीजिये। मेरे पति वीर मेघनाद का सर मुझे दे दीजिये।'

रामचंद्र ने फ़ौरन मेघनाद का सर सुलोचना को दिलवा दिया और उसके थोड़ी ही देर बाद सुलोचना सती हो गयी। चिता की लपट आसमान तक पहुँची। किसी ने सुलोचना को जाते न देखा। पर वह बहिश्त में दाखिल हो गयी।



రావణుడు యుద్ధరంగమున

रावण मैदान में

रात भर तो रावण ग़म और ग़ुस्से से जलता रहा। सुबह होते ही मैदान की तरफ़ चला। लंका की सारी फ़ौज उसके साथ थी। आज लड़ाई का फ़ैसला हो जायेगा। इसलिए दोनों तरफ़ के लोग अपनी जानें हथेलियों पर लिये तैयार बैठे थे। रावण को मैदान में देखते ही रामचंद्र ख़ुद तीरो-कमान लिये निकल आये। अब तक उन्होंने सिर्फ़ रावण का नाम सुना था। अब उसकी सूरत देखी तो मारे ग़ुस्से के आँखों से शोले निकलने लगे। उधर रावण को भी अपने दो बेटों के ख़ून का और अपनी बहन की बे-इज़्ज़ती का बदला लेना था। घमासान लड़ाई होने लगी। रावण की बराबरी करनेवाला लंका में तो क्या, रामचंद्र की फ़ौज में भी कोई न था। सुग्रीव, अंगद, हनुमान वग़ैरह दिलावर उसपर एक-साथ भाले, गुर्ज़ और तीर चलाते थे। नील और नल उसपर पत्थर मारते थे। पर उसने इतनी तेज़ी से तीर चलाये कि कोई सामने न ठहर सका। लक्ष्मण ने देखा कि रामचंद्र उसके मुक़ाबले में अकेले रह जाते हैं तो वे भी आ खड़े हुए और तीरों की बौछार करने लगे। मगर रावण पहाड़ की तरह अटल खड़ा सबके हमलों का जवाब दे रहा था। आख़िर उसने मौक़ा पाकर एक तीर ऐसा चलाया कि लक्ष्मण बेहोश

होकर गिर पड़े। दूसरा तीर रामचंद्र पर पड़ा। वे भी गिर पड़े। रावण ने फ़ौरन तलवार निकाली और चाहता था कि रामचंद्र को क़त्ल कर दे कि हनुमान ने लपककर उसके सीने में एक गदा इतने ज़ोर से मारी कि वह संभल न सका। उसका गिरना था कि राम और लक्ष्मण उठ बैठे। रावण भी होश में आ गया। फिर लड़ाई होने लगी। आख़िर रामचंद्र का एक तीर रावण के सीने में तराज़ू हो गया। ख़ून की धार बह निकली। उनकी आँखें बंद हो गयीं। रथवान ने समझा कि रावण का काम तमाम हो गया। रथ को मैदान से भगाकर शहर की तरफ़ चला। रास्ते में रावण को होश आ गया। रथ को शहर की तरफ़ जाते देखकर गुस्से से आग हो गया। उसी वक़्त रथ को मैदान की तरफ़ ले चलने का हुक्म दिया। इत्तफ़ाक़ से उसी वक़्त विभीषण सामने आ गया। रावण ने उसे देखते ही भाले से वार किया। चाहता था कि उसकी दग़ाबाज़ी की सज़ा दे दे। मगर लक्ष्मण ने एक तीर चलाकर भाले को काट डाला। विभीषण की जान बच गयी। अब की रावण ने अग्नि-बाण छोड़ने शुरू किये। उन तीरों से आग के शोले निकलते थे। रामचंद्र की फ़ौज में खलबली पड़ गयी। मगर रावण के सीने में जो ज़ख़्म लगा था, उससे वह हर लम्हे कमज़ोर होता जाता था। यहाँ तक कि उसके हाथ से कमान छूटकर गिर पड़ा। उस वक़्त रामचंद्र ने कहा,—

राजा रावण! अब तो तुम्हें मालूम हो गया कि हम लोग उतने कमज़ोर नहीं है जितना तुम समझते थे! तुम्हारा सारा खानदान तुम्हारी हिमाकत का शिकार हो गया। क्या अब भी तुम्हारी आँखें नहीं खुलीं? अब भी अगर तुम अपनी शरारत से बाज़ आओ तो हम तुम्हें मुआफ़ कर देंगे।

रावण ने सँभलकर कमान उठा ली और बोला—क्या तुम समझते हो कि कुंभकर्ण और मेघनाद के मारे जाने से मैं डर गया हूँ। रावण को अपनी हिम्मत और क़ूवत का भरोसा है। वह दूसरों के बल पर नहीं लड़ता। दिलेरों की औलाद लड़ाई में मरने के सिवा और होती ही किसलिए है? अब सँभल जाओ, मैं फिर वार करता हूँ।

मगर यह महज़ गीदड़-भभकी थी। रामचंद्र ने अबकी जो तीर मारा तो वह फिर रावण के सीने में लगा। एक ज़ख़्म पहले लग चुका था। इस दूसरे ज़ख़्म ने खातमा कर दिया। रावण रथ के नीचे गिर पड़ा और तड़प-तड़पकर जान दे दी। ज़ालिम था, बे-इन्साफ़ था, कमीना था, मगर दिलेर भी था। मरते वक़्त भी कमान उसके हाथ में थी।

रावण को रथ के नीचे गिरते देख, विभीषण दौड़कर उसके पास आ गया। देखा तो वह दम तोड़ रहा था।

उस वक़्त भाई के ख़ून ने जोश मारा। विभीषण रावण की ख़ून-आलूदा लाश से लिपटकर ज़ार-ज़ार रोने लगा। इतने में रावण की रानी मंदोदरी और दूसरी रानियाँ भी आकर मातम करने लगीं। रामचंद्रने उन्हें समझाकर रुख़सत किया। सिपाहियों ने चाहा कि चलकर लंका को लूटें। मगर रामचंद्र ने उन्हें मना किया। हारे हुए दुश्मन के साथ वह किसी क़िस्म की ज़्यादती नहीं करना चाहते थे।



विभीषण की ताजपोशी

एक दिन वह था कि विभीषण ज़लील होकर रोता हुआ निकला था। आज वह फतह-मंद और सुर्खरू होकर लंका में दाखिल हुआ। सामने सवारों का एक दस्ता था। तरह तरह के बाजे बज रहे थे। विभीषण एक ख़ूबसूरत रथ पर बैठे हुए थे। लक्ष्मण भी उनके साथ थे। पीछे फौज के नामी सूरमा अपने अपने रथों पर शान से बैठे हुए चले जा रहे थे। आज विभीषण का बा-क़ायदा राज-तिलक होगा। वह लंका की गद्दी पर बैठेंगे। रामचंद्रने उनसे जो वादा किया था उसे पूरा करने के लिए लक्ष्मण उनके साथ जा रहे हैं। शहर में डोंड़ी पिट गयी है कि अब राजा विभीषण लंका के राजा हुए। दोनों तरफ़ छतों से उनपर फूलों की बारिश हो रही है। उमरा नज़रें पेश करने की तैयारियाँ कर रहे हैं। आम मुआफी का ऐलान कर दिया गया है। रावण का ग़म कोई नहीं करता। सभी उसके ज़ुल्म से बेज़ार थे। विभीषण का सभी जस गा रहे थे।

विभीषण को गद्दी पर बिठाकर रामचंद्र ने हनूमान को सीताजी के पास भेजा। विभीषण पालकी लेकर पहले ही से हाज़िर थे। सीताजी की ख़ुशी का कौन अंदाज़ा कर सकता है? इतने दिनों की क़ैद के बाद आज उन्हें आज़ादी मिली

है। मारे ख़ुशी के उन्हें ग़श आ गया। जब होश आया तो हनूमान ने उनके कदमों पर सर झुकाकर कहा, 'माता, श्री रामचंद्रजी आपके इंतज़ार में बैठे हुए हैं। वे ख़ुद आते, मगर शहर में आने से मजबूर हैं।' सीताजी ख़ुशी ख़ुशी पालकी पर बैठीं। रामचंद्र से मिलने की ख़ुशी में उन्हें कपड़ों की भी परवाह न थी। मगर विभीषण की रानी सरमा ने उनके जिस्म पर उबटन मला, सर में तेल डाला, बाल गूँथे, बेश-क़ीमती साड़ी पहनायी और रुखसत किया। सवारी रवाना हुई। हज़ारों आदमी साथ थे।

रामचंद्र को देखते ही सीताजी की आँखों से ख़ुशी के आँसू बहने लगे। वह पालकी से उतरकर उनकी तरफ़ चलीं। रामचंद्र अपनी जगह पर खड़े रहे। उनके चेहरे से ख़ुशी नहीं जाहिर हो रही थी, बल्कि रंज जाहिर होता था। सीता करीब आ गयीं। फिर भी वह अपनी जगह पर खड़े रहे। तब सीताजी उनके दिल की बात समझ गयीं। वह उनके पैरों पर नहीं गिरीं। सर झुकाकर खड़ी हो गयीं। उनकी आँखों से आँसू बहने लगे।

एक मिनट के बाद सीताजी ने लक्ष्मण से कहा—भइया, खड़े क्या देखते हो। मेरे लिए एक चिता तैयार करवाओ। जब स्वामी को मुझ से नफ़रत है तो मेरे लिए आग की गोद के सिवा और कहीं जगह नहीं। उनके दर्शन हो गये। मेरे लिए यही ख़ुश-नसीबी की बात है। हाय! क्या सोच रही थी, और क्या हुआ!

यह बात न थी कि रामचद्र को सीताजी पर किसी किस्म का शुब्हा था। वे ख़ूब जानते थे कि सीताजी ने कभी रावण से सीधे-मुँह बात भी नहीं की। हमेशा उससे नफरत करती रहीं। लेकिन दुनियाँ को सीताजी की साफ-दिली पर कैसे यक़ीन आता। सीताजी भी दिल में यह बात ख़ूब समझती थीं। इसलिए उन्होंने अपने बारे में कुछ नहीं कहा। जान देने के लिए तैयार हो गयीं। रामचंद्र का सीना फटा जाता था। मगर मजबूर थे।

जरा देर में चिता तैयार हो गयी। उसमें आग लगा दी गयी। शोले उठने लगे। सीताजी ने रामचंद्र को प्रणाम किया और चिता में कूदने चलीं। वहाँ सारी फौज जमा थी। सीताजी को आग की तरफ़ बढ़ते देखकर चारों तरफ़ शोर मच गया। सब लोग चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगे—'हमको सीताजी पर किसी किस्म का शक नहीं है। वे देवी हैं, हमारी माता हैं, हम उनकी परस्तिश करते हैं।' हनूमान, अंगद, सुग्रीव वग़ैरह भी सीताजी का रास्ता रोककर खड़े हो गये। उस वक्त रामचन्द्र को यक़ीन हुआ कि अब सीताजी की पाकदामनी पर किसी को शुब्हा नहीं। उन्होंने आगे बढ़कर सीताजी को छाती से लगा लिया। सारा मैदान ख़ुशी के नारों से गूँज उठा।



अयोध्या को वापसी

रामचंद्र ने लंका पर जिस इरादे से हमला किया था वह पूरा हो गया। सीताजी छुड़ा ली गयीं। रावण को सज़ा दी जा चुकी। अब लंका में रहने की ज़रूरत न थी। रामचंद्र ने चलने की तैयारी करने का हुक्म दिया। विभीषण ने सुना कि रामचंद्र जा रहे हैं तो आकर बोला—महाराज! मुझसे ऐसी कौन-सी खता हुई, जो आपने इतनी जल्द चलने की ठान ली। भला, दस-पाँच दिन तो मुझे खिदमत करने का मौक़ा दीजिये। अभी तो मैं आपकी कुछ मेहमानी कर ही नहीं सका।

रामचंद्र ने कहा—विभीषण, मेरे लिए इससे ज़्यादा खुशी की और कौन सी बात हो सकती थी कि कुछ दिन तुम्हारी सुहबत का लुत्फ उठाऊँ। तुम जैसे साफदिल आदमी बड़े नसीबों से मिलते हैं। मगर बात यह है कि मैंने भरत से चौदहवें साल के पूरे होते ही लौट आने का वादा किया था। अब चौदह साल पूरे होने में दो ही चार दिन की कसर है। अगर मुझे एक दिन भी देर हो गयी तो भरत को बड़ा सदमा होगा। बशर्ते-ज़िन्दगी फिर कभी मुलाकात होगी। अभी तो अयोध्या तक पहुँचने में महीनों लगेंगे।

विभीषण—महाराज, अयोध्या तो आप दो दिन में पहुँच जायेंगे।

रामचंद्र—सिर्फ़ दो दिन में? यह कैसे मुमकिन है?

विभीषण—मेरे भाई रावण ने अपने लिए एक हवाई-तख़्त बनवाया था। उसे पुष्पक-विमान कहते हैं। उसकी चाल एक हज़ार मील रोजाना है। बड़े आराम की चीज़ है। दस-बारह आदमी आसानी से बैठ सकते हैं। ईश्वरने चाहा तो आज के तीसरे दिन में आप अयोध्या में होंगे। मगर मेरी इतनी अर्ज़ आपको क़बूल करना पड़ेगी। मैं भी आपके साथ चलूँगा। जहाँ आपके हज़ारों चाकर हैं, वहाँ मुझे भी एक चाकर समझिये।

उसी दिन पुष्पक-विमान आ गया। अजीबो-ग़रीब चीज़ थी। कल घुमाते ही हवा में उठकर उड़ने लगती थी। बैठने की जगह अलग, सोने की जगह अलग, हीरे व जवाहरात जड़े हुए; ऐसा मालूम होता था कि कोई उड़नेवाला महल है। रामचंद्र उसे देखकर बहुत ख़ुश हुए। मगर जब चलने को तैयार हुए तो हनूमान, सुग्रीव, अंगद, नील, जामवंत सभी सर्दारों ने कहा—महाराज! आपकी ख़िदमत में इतने दिनों तक रहने के बाद अब यह जुदाई नहीं सही जाती। अगर आप यहाँ नहीं रहते तो हम लोगों को भी साथ लेते चलिये। वहाँ आपकी ताजपोशी का जशन मनायेंगे। कौसल्या माता के दर्शन करेंगे। गुरु वसिष्ठ, विश्वामित्र, भारद्वाज, वग़ैरह के उपदेश सुनेंगे और आपकी ख़िदमत करेंगे।

रामचंद्र ने पहले तो उन्हें समझाया कि आप लोगों ने मेरे ऊपर जो एहसान किये हैं, वही काफ़ी हैं। अब और ज़्यादा एहसान के बोझ से न दबाइये। मगर जब उन लोगों ने बहुत असरार किया तो मजबूरन उन लोगों को भी साथ ले लिया। सबके सब विमान पर बैठे और विमान हवा में उड़ चला। रामचंद्र और सीताजी में बातें होने लगीं। दोनों ने अपने अपने हालात बयान किये। विमान हवा में उड़ता चला जाता था। जिस रास्ते से आये थे, उसी रास्ते से जा रहे थे। रास्ते में जो खास खास मुक़ामात आते थे उन्हें रामचंद्रजी सीताजी को दिखा देते थे। पहले समुंदर नज़र आया। उसपर बंधा हुआ पुल देखकर सीताजी को बड़ा तअज्जुब हुआ। फिर वह मुकाम आया जहाँ रामचंद्र ने बाली को मारा था। उसके बाद किष्किन्धा-पुरी नज़र आयी। रामचंद्र ने कहा, 'जिस राजा सुग्रीव की मदद से हमने लंका फतह की, उनका मकान यहीं है।' सीताजी ने सुग्रीव की रानी से मुलाकात करने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की। इसलिए विमान रोक दिया गया और लोग सुग्रीव के घर उतरे। तारा ने सीताजी के गले में फूलों की माला पहनायी और अपने साथ महल में ले गयीं। सुग्रीव ने अपने मुअज़्ज़िज़ मेहमानों की दावत की और उन्हें दो-चार दिन रोकना चाहा। मगर रामचंद्र कैसे रुक सकते थे। दूसरे दिन विमान फिर

रवाना हुआ। सुग्रीव वग़ैरह भी उसपर बैठकर चले। रामचंद्र से उन लोगों की इतनी मुहब्बत हो गयी थी कि उनको छोड़ते हुए उन लोगों को सदमा होता था।

रामचंद्र ने फिर सीताजी को खास खास मुकामात दिखाना शुरू किया। देखो, यह वह जंगल है जहाँ हम तुमको तलाश करते फिरते थे। अहा! देखो वह छोटी-सी झोंपड़ी जो नज़र आ रही है वही शबरी का मकान है। यहाँ रात भर हमने जो आराम पाया उतना कभी अपने घर में भी न पाया था। यह लो, वह मुकाम आ गया, जहाँ पाक-सीरत जटायु से हमारी मुलाक़ात हुई थी। वह उसकी कुटी है। सिर्फ़ दीवारें बाकी रह गयी हैं। जटायु ने हमें तुम्हारा पता न बताया होता तो खबर नहीं, कहाँ कहाँ भटकते फिरते। वह देखो, पंचवटी का मुकाम है। वह हमारी कुटी है। जी बे-अख़्तियार चाहता है कि चलकर एक बार उस कुटी के दर्शन कर लूँ। सीताजी उस कुटी को देखकर रोने लगीं। आह! यहीं से उन्हें रावण हर ले गया था। वह दिन, वह घड़ी कितनी मनहूस थी कि इतने दिनों तक उन्हें एक जालिम की क़ैद में रहना पड़ा। रावण की वह फकीराना सूरत उनकी नजरों में फिर गयी। आँसू किसी तरह न थमते थे। ब-मुश्किल रामचंद्र ने उन्हें समझाकर चुप किया। विमान और आगे बढ़ा। अगस्त्य मुनि का आश्रम नज़र आया। रामचंद्र ने

उनके दर्शन किये। लेकिन रुकने का मौक़ा न था। इसलिए थोड़ी देर के बाद फिर विमान रवाना हुआ। चित्रकूट नज़र आया। सीताजी अपनी कुटी देखकर बहुत ख़ुश हुईं। कुछ देर बाद प्रयाग दिखायी दिया। यहीं भारद्वाज मुनि का आश्रम था। रामचंद्र ने विमान को उतारने का हुक्म दिया और मुनि जी की खिदमत में हाज़िर हुए। बड़ी देर तक रामचंद्र उन्हें अपने हालात सुनाते रहे। फिर और बातें होने लगीं। रामचंद्र ने कहा—महाराज! मुझे तो उम्मीद न थी कि फिर आपके दर्शन होंगे। मगर आपके आशीर्वाद से आज फिर आपकी क़दमबोसी का मौक़ा मिल गया।

भारद्वाज बोले—बेटा, जब तुम यहाँ से जा रहे थे, उस वक़्त मुझे जितना रंज हुआ था उससे कहीं ज़्यादा ख़ुशी आज तुम्हारी वापसी पर हो रही है।

राम—आपको अयोध्या के हालात तो मिलते होंगे?

भारद्वाज—हाँ बेटा, वहाँ के हालात बराबर मिलते रहते हैं। भरत तो अयोध्या से दूर एक गाँव में कुटी बनाकर रहते हैं। मगर शत्रुघ्न की मदद से उन्होंने बहुत अच्छी तरह राज का काम सँभाला है। रिआया ख़ुश है। ज़ुल्म का नामो-निशान नहीं, मगर सब लोग तुम्हारे लिए बेक़रार हो रहे हैं। भरत तो इतने बेक़रार हैं कि अगर तुम्हें एक दिन की भी देर हो गयी तो शायद तुम उन्हें ज़िन्दा न पाओ।

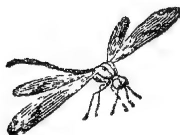
रामचंद्र ने उसी वक़्त हनूमान को बुलाकर कहा, 'तुम अभी भरत के पास जाओ और उन्हें मेरे आने की ख़बर दो। वे बहुत घबरा रहे होंगे। मैं कल सवेरे यहाँ से चलूँगा।' यह हुक्म पाते ही हनूमान अयोध्या की तरफ रवाना हुए और भरत का पता पूछते हुए नन्दीग्राम पहुँचे। भरत ने ज़्यों ही यह ख़ुशख़बरी सुनी, उन्हें मारे ख़ुशी के ग़श आ गया। उसी वक़्त एक आदमी को भेजकर शत्रुघ्न को बुलाया और कहा—भाई, आज का दिन बड़ा मुबारक है कि हमारे भाई साहब चौदह बरस की जलावतनी के बाद अयोध्या आ रहे हैं। शहर में डोंड़ी पिटवा दो कि लोग अपने अपने घर चिराग़ जलायें और उस ख़ुशी में जशन मनायें। सवेरे तुम उनके जुलूस का इंतज़ाम करके यहाँ आना। हम सब लोग भाई साहब की पेशवाई करने चलेंगे।

दूसरे दिन सवेरे रामचंद्र जी भारद्वाज मुनि के आश्रम से रवाना हुए। जिस अयोध्या की गोद में पले और खेले उस अयोध्या के आज फिर दर्शन हुए। जब अयोध्या के बड़े बड़े आलीशान महल नजर आने लगे तो रामचंद्र का चेहरा मारे ख़ुशी के चमक उठा। उसके साथ ही आँखों से आँसू भी बहने लगे। हनुमान से बोले—'दोस्त, मुझे दुनियाँ में कोई जगह अपनी अयोध्या से ज़्यादा प्यारी नहीं। मुझे यहाँ के काँटे भी दूसरी जगह के फूलों से ज़्यादा ख़ूबसूरत मालूम होते

हैं। वह देखो, सरजू नदी शहर को अपनी गोद लिये कैसा बच्चों की तरह खिला रही है। अगर मुझे फ़कीर बनकर भी यहाँ रहना पड़े तो दूसरी जगह राज करने से ज़्यादा खुश रहूँगा।' अभी वे यही बातें कर रहे थे कि नीचे हाथी, घोड़ों और रथों का जुलूस नज़र आया। सब के आगे भरत गेरुए रंग की चादर ओढ़े, जटा बढ़ाये, नंगे पाँव, एक हाथ में रामचंद्र की खड़ाऊँ लिये चले आ रहे थे। उनके पीछे शत्रुघ्न थे। पालकियों में कौसल्या, सुमित्रा और कैकयी थीं। जुलूस के पीछे अयोध्या के लाखों आदमी अच्छे अच्छे कपड़े पहने चले आ रहे थे। जुलूस को देखते ही रामचंद्र ने विमान नीचे उतारा। नीचे आदमियों को ऐसा मालूम हुआ कि कोई बड़ा तायर पर जोड़े उतर रहा है। कभी ऐसा विमान उनकी नजर से न गुज़रा था। मगर जब विमान नीचे उतर आया तो लोगों ने बड़े तअज्जुब से देखा कि उसपर रामचंद्र, सीता, लक्ष्मण और उनके सरदार बैठे हुए हैं। 'जय जय' के नारों से आसमान हिल उठा।

ज्योंही रामचंद्र विमान से उतरे, भरत दौड़कर उनके पैरों से लिपट गये। उनके मुँह से आवाज़ न निकलती थी। बस, आँखों से आँसू बह रहे थे। रामचंद्र उन्हें उठाकर छाती से लगाना चाहते थे, मगर भरत उनके पैरों को न छोड़ते थे। कितना पाक नज़ारा था। रामचंद्र ने तो बाप के हुक्म को

मानकर बन-बास लिया था। मगर भरत ने राज मिलने पर भी उसे कबूल न किया। इसलिए कि वह समझते थे कि रामचंद्र के रहते राज पर मेरा कोई हक़ नहीं है। उन्होंने बादशाहत ही नहीं छोड़ीं, बल्कि फकीराना जिंदगी बसर की। क्योंकि कैकयी ने उन्हीं के लिए रामचंद्र को बन-बास दिया था। वे फ़क़ीरों की तरह रहकर अपनी माँ की बेइन्साफ़ी का बदला चुकाना चाहते थे। रामचंद्र ने बड़ी मुश्किल से उन्हें उठाया और उन्हें छाती से लगा लिया। फिर लक्ष्मण भी भरत से गले मिले। उधर सीताजी ने जाकर कौसल्या और दूसरी माताओं के क़दमों पर सर झुका लिया। कैकयी रानी भी वहाँ मौजूद थीं। तीनों सासोंने सीता को दुआएँ दीं। कैकयी अब अपने किये पर नादिम थी। अब उसका दिल रामचंद्र और कौसल्या की तरफ़ से साफ़ हो गया था।



रामचंद्र की राजगद्दी

आज रामचंद्र की ताज-पोशी का मुबारक दिन है। सरजू के किनारे मैदान में एक वसीअ शामियाना खड़ा है। उसकी चोबें चांदी की है और रस्सियाँ रेशम की। क़ीमती ग़लीचे बिछे हुए हैं। शामियाने के बाहर ख़ुशनुमा गमले रखे हुए हैं। शामियाने की छत शीशे के बेश-कीमत सामानों से सजी हुई है। दूर दूर से ऋषि-मुनि बुलाये गये हैं। दरबार के उमरा और बाजगुजार राजे अदब से बैठे हुए हैं। सामने एक सोने का जड़ाऊ सिंहासन रखा हुआ है।

यकायक तोपें दगीं। सब लोग सँभल गये। मालूम हो गया कि श्रीरामचंद्र राम-भवन से रवाना हो गये। उनके सामने घंटा और शंख बजाया जा रहा था। लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, हनुमान, सुग्रीव, वग़ैरह पीछे चले आ रहे थे। रामचंद्र ने आज शाहाना लिबास पहना है और सीताजी के बनाव और सिंगार की तो तारीफ ही नहीं हो सकती।

ज्योंही ये लोग शामियाने में पहुँचे, गुरु वसिष्ठ ने उन्हें हवनकुंड के सामने बैठाया। ब्राह्मणों ने वेद-मन्त्र पढ़ना शुरू कर दिया। हवन होने लगा। उधर राजमहल में मुबारकबाद के गीत गाये जाने लगे। हवन खतम होने पर गुरु वसिष्ठ ने रामचंद्र के माथे पर केसर का तिलक लगा दिया। उसी

वक़्त तोपोंने सलामियाँ दाग़ीं। उमरा नज़रें पेश करने लगे। कवीश्वरों ने कवित्त पढ़ना शुरू कर दिया। रामचंद्रजी और सीताजी सिंहासन पर रौनक़-अफ़रोज़ हो गये। विभीषण मोरछल झलने लगा। सुग्रीव ने चोबदारों का असा सँभाल लिया और हनूमान पँखा झलने लगे। वफ़ादार हनुमान की ख़ुशी की थाह न थी। जिस राजकुमार को बहुत दिन पहले उसने ऋष्यमूक पहाड़ पर इधर-उधर सीता को तलाश करते पाया था, आज उसीको सीताजी के साथ सिंहासन पर बैठे देख रहा था। इन्हें इस मंज़िले-मकसूद तक पहुँचाने में उसने कितना हिस्सा लिया था। ग़रूर-आमेज़ मुसर्रत से वह फूला न समाता था।

भरत बड़े बड़े थालों में मेवे, ग़ल्ले भरे हुए बैठे थे। रुपयों का अंबार उनके सामने लगा हुआ था। ज्योंही रामजंद्र और सीता सिंहासन पर बैठे, भरत ने दान देना शुरू किया। उन चौदह सालों में उन्होंने किफ़ायत करके शाही खज़ाने में जो कुछ जमा किया था वह किसी-न-किसी सूरत में फिर रिआया के पास पहुँच गया। ग़रीबों को भी अशर्फ़ियों की सूरत नजर आ गयी। नंगों को शालदोशाले मयस्सर हो गये और भूखों को मेवे और मिठाई से सीरी हो गयी। चारों तरफ़ भरत की फ़य्याज़ी की धूम मच गयी। सारे राज में कोई ग़रीब न रह गया। काश्तकारों के साथ खास

रिआयत की गयी। एक साल का लगान मुआफ़ कर दिया गया। जा-ब-जा कुएँ खुदवा दिये गये। क़ैदियों को रिहा कर दिया गया। सिर्फ़ वे ही आज़ाद न किये गये जो दग़ा और फ़रेब के मुजरिम थे। रईसों और अमीरों को ख़िताबात दिये गये और ख़िल्लतें तक़सीम हुईं।



कठिन शब्दार्थ

बाल कांड

3
३

मुआविन - सहायक, मददगार
शुमाल - उत्तर
मशहूर - प्रसिद्ध
क़स्बा - नगर
आबाद - बसा हुआ
ख़ानदान - कुटुंब
नामी-गरामी - प्रसिद्ध, मशहूर
पाये-तख़्त - राजधानी
सख़ी - उदार
ग़रीब-परवर - ग़रीबों पर दया करने-वाले
जी-हिम्मत - हिम्मतवाला
नामवर - प्रसिद्ध, मशहूर

४ 4

इल्म व हुनर - विद्या और कला
मरकज़ - केंद्र
रोज़गार - व्यापार, तिजारत
वसीअ - चौड़ा
दो रूया - दोनों तरफ़
आलीशान - बड़े बड़े
शफ़ाख़ाना - अस्पताल
क़दीम - पुराना
रिवाज़ - प्रथा, चाल, रीति
नवाह - आसपास के प्रदेश
मुमानियत - रोक, मनाही
हिफ़ाज़त - रक्षा
खाई - गड्ढा
लबरेज़ - लबालब, भरा हुआ
बुर्ज़ - गुंबद, मीनार
तालीम - शिक्षा, विद्या
आम - प्रचलित
जाहिल - अपढ़, बेवक़ूफ़
मेहमान-निवाज़ - अतिथि-सत्कार करने वाला
सुलह-पसंद - शांति-प्रिय
इल्म-दोस्त - विद्या-प्रेमी
पाबंद - पालन करनेवाला
मुक़द्दमा दावा, अभियोग
दायर करना - पेश करना
इफ़रात - अधिकता, ज़्यादती

५ 5

ख़ुशहाल - अच्छी हालत में
वारदात - दुर्घटना
ताऊन - प्लेग
हुस्ने-इंतज़ाम - अच्छा प्रबन्ध
बरक़त - प्रसाद, कृपा
दरख़्त - पेड़
कलसा - घड़ा
आवाज़ी निशाना - शब्द-बेधी बान

सीना - छाती

नादिम - शर्मिन्दा, लज्जित

रंजीदा - दुखी

६ 6

माजरा-ये-ग़म - दुखद समाचार

क़ैफ़ियत - समाचार, हाल

बद-दुआ - शाप

रुख़सत हुए - बिदा हुए

औलाद - संतान

हक़ मे - विषय में, पक्ष में

दुआ-ए-खैर - आशीर्वाद

ताजो-तख़्त - मुकुट और सिंहासन

वारिस - उत्तराधिकारी

तस्कीन - धैर्य ; सांत्वना

मशविरा - सलाह

दुआ - आशीर्वाद

हामिला होना - गर्भवती होना

वक़्ते-मुअय्यन - नियत समय

७ 7

शादियाना - मंगल गीत, एक तरह [का बाजा

रिआया - प्रजा

जशन - उत्सव

खैरात - दान, भीख

मुफ़लिस - ग़रीब, निर्धन

दिली-मुद्दआ - मन की इच्छा, मनोभिलाषा

बर आना - पूर्ण होना

गुलज़ार - आनंद और शोभा भरा

परवरिश - पालन-पोषण

तालीम देना - पढ़ाना

ज़हीन - अक़्लमंद, बुद्धिमान

इल्मे जंग - युद्ध-विद्या

नेज़ा-बाज़ी - भाला चलाना

तीर-अंदाज़ी - धनुर्विद्या

फ़न - कला

सानी - बराबर, समान

अदब - इज्ज़त

सख़्त-सुस्त कहना - भला-बुरा कहन

मुहब्बत - प्रेम, प्यार

खूबरू - खूबसूरत, सुंदर

तवाना - तंदुरुस्त, बलवान

खलीक़ - सुशील

कस-व-नाक्स - छोटे-बड़े सभी

रोशन - प्रकाशित

एकसाँ - एक समान, एक-सी

उन्स - प्रेम

(२)

ताड़का और मारीच का मारा जाना

८ 8

वज़ीर - मंत्री

तशरीफ़ लाना - पधारना, आना

महज़ - केवल, सिर्फ़
इबादत - पूजा, आराधना
ज़ोर - बल
ताज़ीम - आदर, इज़्ज़त
क़दर - हद, मात्रा
गुस्सेवर - क्रोधी
मरज़ी - इच्छा
हुनर - कला
यगाना - अनुपम, बेजोड़, अद्वितीय
रोज़गार - पेशा या व्यापार
तख्त - सिंहासन
ताज़ीम की झुककर प्रणाम किया
ग़रीबखाना - ग़रीब का घर
क़दम - चरण, पैर
पाक - पवित्र, साफ़
एहसान - भलाई, उपकार
ख़िदमत - सेवा
फ़रमाना - बताना
ब-सरोचश्म - सर आँखों पर
ज़ुल्म - अत्याचार

९

नापाक - गंदा, अपवित्र
सरकश - विद्रोही, बाग़ी
फ़साद - उपद्रव
ख़ाक करना - भस्म करना
हलाक करना - नाश करना, मार डालना

लमहा - क्षण, पल
गवारा - पसंद
अंदेशा - डर, भय
नातजुर्बेकार - अनुभवहीन
खौफ़नाक - भयंकर, डरावने
मुक़ाबला करना - सामना करना
मैदाने जंग - युद्धक्षेत्र
तजुर्बा - अनुभव, अभ्यास
मज़बूर करना - विवश करना

१०

यक़ीन - विश्वास
बेखौफ़ - निडर
बाल बांका न होना - नुक़्सान न होना
उज्र - आक्षेप, आपत्ति
इजाज़त - अनुमति
जवाँमर्दी - वीरता
इज़हार करना - दिखाना, प्रकट करना
जंगी-लिबास - युद्ध में जाते समय पहनाये जानेवाला कपड़ा या पोशाक
बोसा देना - चूमना
अजीब-व-ग़रीब - अद्भुत
देवनी - राक्षसी

११

आहट - शब्द

वाक़या - घटना, समाचार
सूरत - रूप, शकल
क़द - ऊंचाई, डील
इशारा - संकेत
उसूल के खिलाफ़ - सिद्धांत के विरुद्ध
नीलगाय - गाय की तरह का एक जानवर

१२ 12

बेख़ौफ़ - निडर, निर्भय
दरिंदे फाड़कर खानेवाले जानवर
राग़िब - प्रवृत्त
कमान - धनुष
गश्त लगाना - घूमना
फ़िक्र - चिंता
बे-ख़्वाब व ख़ूर - बिना सो, बिनाये खाये
ख़ैरियत - कुशल
गुज़र जाना - बीत जाना
ब-हुस्न व ख़ूबी - सुन्दर और अच्छी रीति से
क़िस्म - प्रकार, तरह

(३)

शादी

१३ 13

शरीक होना - संमिलित होना
अकसर - प्रायः
जलसा - उत्सव
इम्तिहान - परीक्षा
कामयाब - सफल
दिली-ख़्वाहिश - हार्दिक इच्छा
फ़ैसला करना - निर्णय करना, निश्चय करना
सूबा - प्रांत, प्रदेश

१४ 14

क़हत - अकाल
अज़ीज़ - प्रिय, प्यारा
फाल - हल का अग्रभाग
ख़ुदा दाद - ईश्वर से दिया हुआ
निआमत - देन
क़द-व-क़ामत...होना - मोहित होना
फ़रेफ़्ता होना - दिल ललचा जाना
सदा - आवाज़

15 १५

हसीन - सुंदर
ख़ातिर-व-तवाज़ा - आदर-सत्कार
काश - क्या ही अच्छा होता
मजबूर - लाचार
तजवीज़ करना - चुनना
बुज़ुर्ग - पूर्वज
ताज्जुब - अचरज

16 १६

तक़दीर - भाग्य
वसीअ - बड़ा

शामियाना तानना - खेमा या डेरा खड़ा करना
सूरमा - वीर
ज़ोम - घमंड, गर्व
दिलावर - बहादुर
ख़्वाब - सपना
ख़िफ़्फ़त - अपमान
कैफ़ियत - हालत

१७

मायूसाना अंदाज़ - निराशा-सूचक
तशरीफ़ ले जाना - जाना
हौसला - हिम्मत
ज़ब्त होना - सहना
मुबारक - शुभ, मंगल
पुरज़े पुरज़े करना - टुकड़े टुकड़े करना
हक़ीक़त - असलियत, सचाई
पुर-जोश - जोश पूर्ण
मिज़ाज - गुण, तबीयत
वाकिफ़ - परिचित
मौक़ा - संदर्भ
मुनासिब - योग्य, ठीक

१८

तस्कीन - सांत्वना, तसल्ली
मुंतज़िर - प्रतीक्षा करनेवाला
आवाज़ें कसना - ताना मारना, परिहास करना
आहिस्ता - धीरे धीरे
तन्ज़ - ताना, व्यंग्य
मुतलक़ - तनिक भी, ज़रा भी
तवज्जह करना - ध्यान देना
गोया - मानों
जोशे-मुसर्रत - ख़ुशी का जोश
मुतफ़िक्र निगाह - चिंतित दृष्टि
नज़्ज़ारा - दृश्य

१९

सरकना - खिसकना
अदने-व-आले - छोटे-बड़े
मुराद - इच्छा
ख़ुश-ख़बरी - शुभ-समाचार
इत्तला देना - सूचना देना
साँड़नी - ऊँटनी
अहाता - मंडप
राज़ - रहस्य
सुर्ख़ - लाल
क़ता - रूप, बनावट
मुलायमत - नम्रता

२०

फ़ेल - कार्य, काम
जुदा करना - अलग करना
दिलेर - वीर
इस क़दर - इतना
जामे से बाहर होना - आपे से बाहर होना, गुस्से में आना
बोसीदा - बेदम, पुराने

बेरहम होना - गुस्से में आना

गीदड़ भभकी - झूठी धमकी, व्यर्थ की धमकी

अलफ़ाज़ - शब्द (लफ़्ज़ का बहु०)

२१

ग़ज़बनाक - भयावना

गुस्ताखी - धृष्टता

पेश आना - व्यवहार करना

ज़बाँ दराज़ी करना - बढ़-बढ़कर बोलना

नाहक़ - व्यर्थ

तरह देना - ध्यान न देना

बाज़ आना - छोड़ना

वरना - नहीं तो

२२

पाला पड़ना - काम पड़ना, वास्ता पड़ना

बिफरना - वश में न रहना, नाराज़ होना

अदब आमेज़ - आदर-पूर्ण

गुफ़्तगू - बातचीत

जिस्म - शरीर, बदन

शरीर - दुष्ट, धृष्ट

सलीक़ा - सभ्यता, बरताव

तमीज़ - शील, विवेक

स्याह - काला

२३

ख़फ़ा होना - नाराज़ होना

अलबत्ता - बे-शक

फ़िज़ूल - व्यर्थ

बीर-बहूटी - एक तरह का लाल बरसाती कीड़ा

निहायत - अत्यंत

आज़िज़ी - विनीत-प्रार्थना

कम-फ़हम - कमसमझ

ख़तावार - दोषी

मुनासिब - उचित

तावान - दंड

ग़रूर - घमंड

सदमा - दुख, अफ़सोस

२४

ओछा - नीच

जौहर - विशेषता, रत्न

चिल्ला - प्रत्यंचा, धनुष की डोरी

ख़ुश्क - सूखा

रुख़सत - बिदा

मुतफ़िक्र - चिंतित

बाग़ बाग़ होना - फूला न समाना

जशन - आनंद, उत्सव

२५

ख़ातिर व मदारात - सेवा-सत्कार

बेशुमार - अनगिनत

मुरस्सा - जड़ाऊ

नस्ल - जाति

दहेज़ - वर दक्षिणा

अयोध्या कांड

बनवास

२९.

तनदेही - मेहनत, प्रयत्न
बाइस - कारण
मस्लहत - भलाई
हुक्मरानी - शासन
तजुर्बा - अनुभव
बराये-नाम - नाम के वास्ते
अंजाम पाना - पूरा होना
फरमाँ-रवाई - बादशाही
उसूल - सिद्धांत, धर्म
वाक़िफ़ होना - परिचित होना
अमल में लाना - कार्य में लाना
अराकीन - प्रमुख व्यक्ति

३०

मुअज़्ज़िज़ - प्रतिष्ठित
मुद्दत - समय
गोशा - एकांत स्थान
तजवीज़ - प्रस्ताव
मरज़ी - इच्छा
कारे-खैर - शुभ-कार्य
हारिज - बाधक
इबादत - उपासना, पूजा
मुरब्बी - संरक्षक
अस्ना - समय, बीच
सायत - समय, घड़ी
मुकर्रर - निश्चित

३१.

लर्ज़ा आना - कंप आना
हसद - ईर्ष्या
रोब जमाना - धाक जमाना
मंसूबा - अभिलाषा

३३.

लूका - आग
ज़िक्र - बात, विषय

३४.

तबाह करना - बरबाद करना
करिश्मे-साज़ियाँ - कौशल
छक्का-पंजा - कपट-छल
सधी-बधी - आपस में तय हुई

३५.

फ़ितने - षडयन्त्र
जख्मी - घायल
ज़ेवर - आभूषण

३६.

क़ौल - वचन
नहूसत - उदासी, अशुभ-लक्षण
मुमानियत - मनाही
हाथों के तोते उड़ गये - हिम्मत हार गये, निराश हो गये

३७.

गुस्ताखी - धृष्टता
त्योरी - नज़र, दृष्टि

३८.

दिलो-जान से - मन और प्राण से

३९.

संगदिल - निष्ठुर
शौहर - पति
ज़र्द - पीला
क़तरा - बूंद
कदूरत - मैल, मालिन्य
बदख़्वाह - बुरा चाहनेवाला
ख़ुल्क
मुरव्वत } - शील, सज्जनता
कायापलट - परिवर्तन
तुनकना - गुस्से में आना
सरीह - प्रकट, स्पष्ट
वीरान करना - उजाड़ना

४०.

सब्ज़ बाग़ - प्रलोभन
मुआमिला - विषय
शुबहा - सन्देह
बेइन्साफ़ी - अन्याय
क़ालिब - शरीर
ख़ातमा - अंत

४१.

पेचो-ताब खाना - तिलमिलाना
हीला - बहाना
तबाही - नाश
गिरह में बाँधना - याद रखना

४२.

बग़ावत - क्रांति, कलह

४३.

आरज़ू - अभिलाषा
लावल्द - निस्संतान
लख़्ते-जिगर - हृदय का टुकड़ा
फ़क़ीराना-सूरत - साधु का वेष
बे-नूर - निस्तेज, प्रभाहीन
फरमाँ-बरदार - आज्ञाकारी
ग़र्क़ - डूबा हुआ, मग्न
वहम - शंका

४४.

गुमान - अनुमान
मुबारक - सुखी, शुभ
फ़रेब - छल, धोखा
दाग़ - कलंक
क़ासिद - दूत
मंसूबे बाँधना - इरादा करना,
रऊसा - प्रमुख, धनी मानी आदमी
उमराव - सभासद, दरबारी
जम्मे-गफ़ीर - भिक्षुओं का दल

४५.

फ़ारिग़ होना - निवृत्त होना
ज़ेवर - गहना, आभूषण
आरास्ता - सजाया हुआ
मुबारकबादी - मंगल गीत
नौबत - एक तरह का बाजा
क़याफ़ा - सूरत, आकृति, रंग-ढंग

४६.

पैग़ाम - संदेश, खबर
याद फ़रमाना - बुलाना
बेकसाना निगाह - विवश दृष्टि
अर्सा गुजरा - बहुत दिन हुए

४७.

ताम्मुल करना - देरी करना
ब-सरो-चश्म - सिर आँखों पर
खुश-नसीबी - सौभाग्य
सआदतमंद - सुशील
मुकद्दम - प्रधान, मुख्य

४८.

मलाल - दुख, रंज
तशफ़्फ़ी - आश्वासन, ढाढ़स
कलमा - वाक्य
ग़श - मूर्च्छा
ग़ल्ला - अनाज, अन्न

४९.

सकता - मूर्च्छा
बेहिस - बेनूर, निस्तेज
जंग - लड़ाई
साज़िश - षडयन्त्र
मुहब्बत आमेज़ - प्रेम-पूर्ण

५०.

अब्रू - भौंह
बर्पा होना - आना
अहले-हिम्मत - साहसी
मुमकिन - संभव
क़ाबिल-एहतराम - योग्यतम, आदरणीय
क़ुर्बान - निछावर, बलि
रज़ामंदी - स्वीकृति

५१.

ज़ियारत - दर्शन
सर्द-आह - ठंडी साँस
कोहो बयाबान - पहाड़ और मरुभूमि
मुकद्दस - पवित्र

५२.

नाराज़गी - गुस्सा
बेअदबी - अशिष्टता
फ़ेल - काम, क्रिया
नागवार - बुरा
हरचंद - कितना ही

५३.

यक़ीनी - निश्चित
जिस्मानी - शारीरिक
आसाइश - आराम, आनंद
उलफ़त - प्रेम

तर्क करना - त्याग देना

स्याहो सफ़ेद - भला-बुरा

५४.

जानिब से - ओर से

बुज़दिल - डरपोक

कमीना - नीच

उन्स - प्रेम

५५.

ग़मनाक - दुखद

तनहा - अकेले

ख़ूँख़्वार - डरावने

साबिक़ा - वास्ता

संगरेज़ - कंकड़

सख़्तियाँ - कठिनाइयाँ

५६.

शरीक़-ए-हाल - संगिनी

तफ़रीह - मन-बहलाव

इसरार - आग्रह

लाजवाब - निरुत्तर

शाही लिबास - राजसी-पोशाक

५७.

ज़ारो-क़तार रोना - फूट-फूट कर रोना

फ़र्त - अधिकता, ज़्यादती

बे-हिसो-हरकत - निष्प्राण और निस्पंद

जनून - पागलपन

मरीज़ - रोगी

५८.

ज़ार ज़ार रोना - फूट-फूटकर रोना

हमदर्दी - सहानुभूति

५९.

तारीक़ी - अंधेरा

बालिश्त - बित्ता

ग़ैर-मामूली - असाधारण

मातमसरा - शोकभवन

राजा दशरथ की वफ़ात

६०.

वफ़ात - मृत्यु

ज़ात - जाति

ख़ैर-व-आफ़ियत - कुशल-समाचार

अहल-सुबह - सवेरे, तड़के

६१.

बेक़रारी - बेचैनी

६२.

मातम बपा होना - शोक छाना

मुराद बर आना - इच्छा पूरी होना

सूरते-तस्वीर - चित्र-लिखित

मोतबर - विश्वासी

क़ासिद - हरकारा

६३.

बदगुमान - असंतुष्ट

६४

सरगोशियाँ - कानाफूसी

अबतर - खराब, अव्यवस्थित

दुबकना - छिपना
बेवा - विधवा

६६. 66

तफ़सील - विस्तार
कारगुज़ारी - कार्य-पटुता
दास्तान - वर्णन, कथा
तेवर - त्योरी
तेवरों पर शिकन पड़ना - त्योरियों पर बल पड़ना, गुस्सा आना,
नफ़रत-आमेज़ - घृणा-सूचक

६७. 67

मुख़ातिब होना - ध्यान देना
सिफ़ला - नीच
देवता-ए-सिफ़त - देवता के समान गुणवाला
तस्मा - बंधन
बे-अख़्तियार - आप से आप

६८. 68

फ़ारिग़ होना - छुटकारा पाना
शकूक़ - शक का बहुवचन
जेबतन करना - पहनना
हुस्न-खिदमात - आदर्श सेवा
दाद लेना - तारीफ़ सुनना, पुरस्कार लेना

६९. 69

अह्ले दरबार - दरबारी

चित्रकूट

७०. 70

ख़ित्ता - भाग, हिस्सा
घनौती - तख़्ता
कोहिस्तानी - पहाड़ी
ग़ोल - झुंड
वादी - घाटी
परिंद - पक्षी
पाकीज़ा - पवित्र, स्वच्छ
सेहत-बख़्श - स्वास्थ्यप्रद

७१. 71

रूह - आत्मा
दिलकश - मन को लुभानेवाला
मन्ज़र - दृश्य
इत्तफ़ाक़ात - मेल, मिलन

७२. 72

ताक़ - आला

भरत और रामचन्द्र

७३. 73

दिक़ करना - तंग करना, सताना

७४. 74

ग़ुरूबे-अफ़ताब - सूर्यास्त
नज़ारा - दृश्य
शबनमी - ओसकण से भीगे हुए

७५. 75

ग़ुबार-आलूदा होना - धूल से भरना
ग़ल्ला - झुंड

क़ज़िया पाक करना - विवाद का अंत करना

७८.

नाज़ व नेमत - सुख और ऐश्वर्य

अस्मत - पातिव्रत्य

तौफ़ीक़ देना - प्रेरणा देना

माय-नाज़ - गौरव का विषय

पुर-मलाल - दुखपूर्ण

७९.

दीदार - दर्शन

हस्ती - अस्तित्व

मुशीर - मंत्री, वज़ीर

ज़राअत - खेती, कृषि

आब-पाशी - सिंचाई

ग़ाफ़िल - असावधान

अहलकार - कर्मचारी

८०.

इल्तिजा - प्रार्थना, बिनती

बजा लाना - पालन करना

रौनक़ - श्री, शोभा

स्यापा - बुरी घटना, मृत्यु की नीरवता

कुहराम - रोना-पीटना

८१.

फ़य्याज़ी - उदारता

हैरत - आश्चर्य

शायर - कवि

बन कांड

८६

शौहर - पति

नाज़नीं - सुन्दरी

८७

सफ़ाया करना - नष्ट करना

तशफ़्फ़ी - सांत्वना

अदावत - शत्रुता

८८

चकमा देना - धोखा देना

कारगर होना - सफल होना

ख़ून सर्द होना - डर जाना

८९

गवारा करना - सहन करना

९०

नवाह - आसपास के प्रदेश

अक़ीदत - विश्वास

आलम - अवस्था

९२

रग़बत - अनुराग

मायल करना - रुजू करना, प्रवृत्त करना

किष्किंधा कांड

९३

कोहो-बयाबान - पहाड़ और जंगल

रूह फ़ना होना - बेहद डरना

९४

रफ़ीक़ - दोस्त

हमदर्दाना अंदाज़ - सहानुभूतिपूर्ण ढंग

इस्तक़बाल - स्वागत

९५

जुरअत - साहस

बिछुआ - पैरों की उंगलियों में पहने जानेवाला एक आभूषण (सुहाग चिन्ह)।

९६

महलिक़ - प्राण लेनेवाला

वली-अहद - युवराज

मुअत्तबिर - विश्वसनीय

सुन्दर कांड

९९.

गोशा - कोना, एकांतस्थान

१००.

बेनी - सिर का एक आभूषण

१०१.

हुर्र हो गये - भाग गये

ग़ालिब आना - विजयी होना

१०२.

एलची - राजदूत

सुराग़ लगाना - पता लगाना

खुदातरस - भगवद्भक्त

ज़लील - अपमानित

रुसवा - बदनाम

१०३.

आतिशीन - अग्निमय

१०५.

उबूर करना - पार करना

तामीर करना - बनाना

लंका कांड

१०९.

मुहासरा करना - घेरा डालना

मारफ़त - द्वारा

मुहाल - मुश्किल

११०.

शबीह - तस्वीर, सूरत

गिरिया व ज़ारी - शोक-संलाप, रोना-

सानिहा - दुर्घटना [धोना

१११.

ख़ून-ख़राबी - रक्तपात

११२.

साबिका पड़ना - पाला पड़ना

शुमारो-क़तार - गिनती

११४.

लक़ब - उपनाम, ख़िताब

११५.

तैश - जोश

हरबा - अस्त्र-शस्त्र

क़ातिल - घातक

११६.

माहिर - होशियार, दक्ष

११७.

परवरिश - पालन-पोषण

बख़्शना - देना

शायाँ - उपयुक्त, अभीष्ट

नब्ज़ - नाडी

११९.

अक्सीर - सब रोगों को नष्ट करनेवाली

१२०. [औषधि

काहिल - आलसी

ऐश-पसन्द - विलासी

१२१.

शाना - कंधा,

काम आना - मर जाना

देव - राक्षस

१२३.

ग़रूर - घमंड

जशन - उत्सव [बजवाना

डंके पर चोट डलवाना - युद्ध के बाजे

मुद्दई - दावा करनेवाला, शत्रु

बद-ख़्वाही - अहित, बुराई

गुनाह - पाप

१२४.

दावते-जंग - युद्ध का निमंत्रण

खून-ख़्वार - रक्त पिपासु, खून करने वाला, भयंकर

ग़ालिब आना - विजय पाना

हाथ पाँव फूल जाना - भयभीत हो

इंतक़ाम - बदला, प्रतिशोध [जाना

१२५.

दाना - अक़्लमंद, बुद्धिमान्

हमसर - बराबर, समान

फ़ेल - कृत्य, कार्य

बाज़ आना - छोडना, विमुख रहना

अस्मत-माअब - पतिव्रता

१२६.

रू-ब-रू - सामने

१२७.

गुर्ज़ - गदा

१२८.

तराज़ू होना - चुभ जाना

१२९.

क़ूवत - ताक़त, बल

ख़ून-आलूदा - रक्त से लथ-पथ, रक्त लुंठित

१३०.

ज़ार ज़ार रोना - फूट-फूटकर रोना

१३१.

ताजपोशी - राज्याभिषेक

दस्ता - समूह

ऐलान करना - घोषणा करना

बेज़ार - व्याकुल, पीडित

१३२.

बाल गूँथना - वेणी बनाना

१३३.

साफ़-दिली - निर्मल हृदयता

परस्तिश - पूजा

पाकदामनी - पवित्रता

१३४.

सुहबत - संसर्ग, संगति

बशर्ते-ज़िंदगी - यदि ज़िन्दा रहा

१३५.

हवाई-तख़्त - वायुयान

१३६.

असरार करना - आग्रह करना, हठ करना

मुअज़्ज़िज़ - प्रतिष्ठित

१३७.

पाक-सीरत - पवित्र गुणों-वाला

१३९.

जला-वतनी - देश-निकाला

पेशवाई - अगवानी, स्वागत

१४०.

तायर - पक्षी, चिडिया

१४१.

नादिम - लज्जित, शर्मिन्दा

१४२.

वसीअ - लंबा-चौडा, विशाल

चोब - शामियाना खड़ा करने का खंभा

१४३.

रौनक़-अफ़रोज़ - शोभायमान

मोरछल - मोर का पंखा

असा - लाठी

मंज़िले-मक़सूद - निर्दिष्ट स्थान, ध्येय

ग़रूर आमेज़ - अभिमानपूर्ण

सीरी - संतुष्टि

फ़य्याज़ी - दानशीलता, करुणा

काश्तकार - कृषक



